ब्रजराज-काव्य-माधुरी

रचयिता

महाराणा जवानसिंह

सम्पादक

महेन्द्र भानावत एम ए

प्रस्तावना-लेखक

डॉ० मोतीलाल मेनारिया, एम ए, पी-एच डी

साहित्य संस्थान

राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

प्रकाशक
साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ
उदयपुर (राज०)



प्रथम बार
सन् १९६६



मूल्य
आठ रुपये



मुद्रक
राजस्थान राज्य सहकार मुद्रणालय लि
जयपुर

विषय-सूची

प्रकाशक
साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ
उदयपुर (राज.)



प्रथम बार
सन् १६६६



मूल्य
आठ रुपये



मुद्रक
राजस्थान राज्य भण्डार मुद्रणालय लि.
जयपुर

विषय-सूची

समर्पण

भारतीय संस्कृति, भारतीय कला एवं भारतीय साहित्य

के

अन्यतम उन्नायक

वीर-कुल भूषण

महाराणा राजसिंह

को

सादर समर्पित

प्रस्तावना

सुदूर्व मेवाड़ राज्य न केवल शौर्य-पराक्रम का बल्कि धर्म, संस्कृति, साहित्य और कला का भी केन्द्र रहा। इतना ही नहीं, इस प्रदेश के अनेक महाराणा व उनके संबंधियों ने स्वयं साहित्य-रचना कर भारतीय वाङ्मय को श्रीसम्पन्न बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

(१) *महाराणा कुंभा*—ये महाराणा मोकल के पुत्र थे। इनकी माता का नाम सौभाग्यदेवी था। इन्होंने सं० १४९० से सं० १५२५ तक राज्य किया। ये बड़े प्रतापी राजा हुए। इन्होंने अपने बाहुबल से मेवाड़ जैसे छोटे राज्य को एक महान राज्य बना दिया। ये शिल्पशास्त्र के ज्ञाता तथा शिल्प कार्यों के प्रेमी थे। मेवाड़ में छोटे-बड़े ८४ किले हैं। इनमें ३२ किले कुंभाजी के बनवाये हुए हैं। इनके अतिरिक्त महान मंदिर, जलाशय आदि भी बनवाये। चित्तौड़-स्थित कीर्तिस्तम्भ के निर्माता यही थे। यह स्तम्भ भारतवर्ष में अपने ढंग का एक ही है। सं० १४९३ में कुंभाजी ने मांडू के सुलतान महमूद खिलजी को प्रथम बार परास्त किया था। कहा जाता है कि यह कीर्तिस्तम्भ उसकी यादगार में बनवाया गया था।

महाराणा कुंभा बहुमुखी प्रतिभा के नरेश थे। ये वीर, मनस्वी राजनीतिज्ञ और विद्यानुरागी थे। वेद, स्मृति, मीमांसा, उपनिषद्, व्याकरण आदि विभिन्न विषयों का इनको भारी ज्ञान था। ये संस्कृत भाषा के उद्भट विद्वान, नाट्यशास्त्र के ज्ञाता और प्रतिभावान् कवि थे। ये गद्य और पद्य दोनों लिखते थे। इन्होंने संगीत विषयक दो ग्रन्थ बनाये—संगीतराज और सूडप्रबन्ध। इन ग्रंथों के अलावा संगीतमीमांसा नामक एक और ग्रंथ का

उल्लेख स्व० डा० गौरीशंकर-हीराचद ओझा तथा हरबिलास सारडा ने अपने ग्रंथों में किया है। परन्तु यह संगीतराज से भिन्न कोई दूसरी रचना नहीं है। वस्तुतः संगीतराज ही का दूसरा नाम संगीतमीमांसा है, जैसा कि डॉ० आफ्रेक्ट ने अपने कैटेलागस कैटेलागरम् में संकेत किया है (पृष्ठ ६८६)। इन्होंने कवि बाण कृत चडीशतक की वृत्ति और जयदेव कृत गीतगोविन्द पर रसिकप्रिया नाम की टीका लिखी थी। चडीशतक की वृत्ति की एक हस्तलिखित प्रति का पता हाल ही में लगा है। यह प्रति जैन भवन ग्रंथालय कलकत्ता में सुरक्षित है। यह सं० १६७५ में लिखी गई थी। इसका लेखक खरतरगच्छीय जैन विद्वान् सकलकीर्ति था। इसमें २४०० श्लोक है। गीतगोविन्द की रसिकप्रिया टीका निर्णयसागर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित हो चुकी है। चित्तौड़ के कीर्तिस्तम्भ का प्रशस्ति से विदित होता है कि इन्होंने चार नाटक बनाये थे जिन में महाराष्ट्री एवं कर्णाटी के साथ २ मेवाड़ी भाषा का प्रयोग किया गया था। राजस्थानी की बोली में साहित्य-निर्माण का यह सबसे पहला ऐतिहासिक उल्लेख है —

> येनाकारि मुरारिसंगतिरसप्रस्यन्दिनी नन्दिनी
> वृत्तिर्व्याहृतिचातुरीभिरतुला श्रीगीतगोविन्दके।
> श्रीकर्णाटकमेदपाटसुमहाराष्ट्रादिके यादव—
> द्वाणीगुम्फमयं चतुष्टयमयं सन्नाटकानां व्यधात् ॥१५८॥

हरबिलास सारडा के मतानुसार कुंभाजी ने संगीतरत्नाकर की टीका लिखी थी। यह टीका अप्राप्य है। इसलिये यह कहना कठिन है कि यह शार्ङ्गदेव के संगीतरत्नाकर की टीका है अथवा इसी नाम के किसी अन्य ग्रंथ की टीका। इन्होंने भिन्न-भिन्न रागों तथा तालों के साथ गाई जानेवाली अनेक देवताओं की स्तुतियां भी बनाई थीं जो एकलिंगमाहात्म्य में संगृहीत हैं। इन स्तुतियों में कुंभाजी की ऊंची काव्य-प्रतिभा और असाधारण सौंदर्य-बुद्धि झलकती है।

कुंभाजी सधे हुए गायक थे। ये वीणा बजाने में परम प्रवीण थे।

> सकलकविनृपालीमौलिमाणिक्यराचि—
> मधुररणितवीणावाद्यवैदग्ध्यविद्।

मधुकरकुलनीलाहारि रमाजी
जयति जयति कुंभा भूमिनीर्या गुमाली ॥१६०॥
—कीर्तिस्तम्भ का प्रशस्ति।

महाराणा कुंभा स्वयं लिखते थे और अपने आश्रित विद्वानों से लिखवाते भी थे, जिनका स्वतः यहाँ अच्छा सम्मान होता था। चित्तौड़ के कीर्तिस्तंभ की प्रशस्ति का मूल लेखक अत्रि था। उसका पूर्वार्द्ध लिखकर जब अत्रि मर गया तब कुंभाजी ने उसके पुत्र कवि महेश से उसका उत्तरार्द्ध लिखवाया और उस को मनवार हाथी सोने की डंडी वाले दो चँवर और एक छत्र प्रदान कर सम्मानित किया। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कुंभाजी शिल्पशास्त्र के अनुरागी थे। इन्होंने जय और अपराजित के मतानुसार कीर्तिस्तंभों की रचना का एक ग्रंथ बनाया। साथ ही अपने आश्रित सूत्रधार मंडन से देवतामूर्ति-प्रकरण प्रासादमंडन राजवल्लभ, रूपमंडन वास्तुमंडन, वास्तुसार वास्तुशास्त्र और रूपावतार ये आठ ग्रंथ बनवाये। मंडन के भाई नाथा ने वास्तुमंजरी और मंडन के पुत्र गोविन्द ने उद्धारधारणी कलानिधि एवं द्वारदीपिका नामक ग्रंथों की रचना की।

कुंभाजी की मृत्यु बहुत ही दुःखद स्थिति में हुई। एक दिन जब वे कुंभलगढ़ में मामादेव के मंदिर के पास जलाशय के किनारे बैठे थे तब इनके ज्येष्ठ पुत्र उदयसिंह ने इनको अचानक कटार भोंक कर मार डाला। यह घटना सं० १५२५ में हुई।

महाराणा कुंभाजी की रचना के कुछ उदाहरण यहाँ दिये जाते हैं —

वृन्दावनात्कदम्बस्य महो माहेश्वरं नुमः।
मत्प्रकारो प्रकारोन मत्कुमारोवराजय ॥१॥

या गीतानुगता धनस्तपरमा वाद्यावनद्धानना
नानार्थैर्ललिताङ्करूपनिपुणा नृत्यप्रधानाऽव्यया।
भावलयरसैकगम्यमहिमा विभ्राजते यामिनि
सगानानि निधाय शुद्धमस्तु तस्मै परस्मैनमः ॥२॥

निर्मथ्यागमसागरं परिलसद्गानामृतं चाद्रिणा
संगीतामृतमुज्जहार जगतामत्यद्भुतानन्दम्।
स्फूर्जन्मोहमहाहिदष्टजनतासंतापनुत्त्यै नम-
स्तस्मै श्रीभरतार्यदिव्यमुनये स्याच्चन्द्रचूडात्मने ॥३॥

यो वेदाश्चतुरो विगाह्य चतुरो वक्त्रैश्चतुर्भिश्चतु-
र्वर्गाप्त्यै चतुरर्थमुख्यरुचिरं वर्णैश्चतुर्भिर्युतम्।
विज्ञानैकनिकेतनाय भरताचार्याय राज्ञोचिता-
चाराढ्यं चतुरङ्गनृत्यमदिशत्तस्मै नमो ब्रह्मणे ॥४॥

भुक्त्यान्विविभूतिभिर्जगदिदं व्याप्यैव नित्यस्थिता
दुःखाघूननमूलहेतुरखिलस्वर्वासिवर्यप्रिया
ब्रह्मानन्दरसातिशायिसुखदा ब्रह्मादिभिः संस्तुता
विद्या पावननूतना विजयते संगीतरूपा शिवा ॥५॥

—संगीतराज (पाठ्यरत्नकोश)

(२) मीराबाई—इनका जन्म सं० १५५५ के लगभग कुड़की नामक गाँव में हुआ। ये मेड़ता के राठौड़ राव दूदाजी के चतुर्थ पुत्र रत्नसिंह की बेटी थी। मीरा जब छोटी थी तब इनकी माता का देहान्त हो गया। इसलिए इनके दादा राव दूदाजी ने इन्हें कुड़की से अपने पास मेड़ता बुला लिया जहाँ इनका बाल्यकाल व्यतीत हुआ। लगभग १६ वर्ष की आयु में इनका विवाह मेवाड़ के महाराणा संग्रामसिंह प्रथम (सं० १५६६–१५८४) के पाटवी कुँवर भोजराज के साथ हुआ। परन्तु विवाह के दो-तीन वर्ष बाद ही भोजराज की मृत्यु हो गई। इससे इनका मन संसार से उचट गया और ये अपना अधिकांश समय भजन कीर्तन, पूजापाठ एवं सत्संग में व्यतीत करने लगी। धीरे २ इनके सत्संग आदि की कीर्ति चारों ओर फैल गई और भक्त जन इनके दर्शन करने के लिये चित्तौड़ आने लगे। उस समय इनके देवर विक्रमादित्य चित्तौड़ पर राज्य कर रहे थे। मीरा का साधु-समागम आदि उनको पसन्द नहीं आया। और वे उन्हें भाँति-भाँति के कष्ट देने लगे। तंग आकर मीरा चित्तौड़ से मेड़ता चली गई। कुछ दिन वह वहाँ रही। बाद में पुष्कर मथुरा वृन्दावन आदि तीर्थ-स्थानों में होती हुई द्वारिका पहुँची। कहा जाता है कि वहीं सं० १६०३ के आसपास इनका देहावसान हुआ।

मीराबाई के रचे पाँच ग्रंथ बताये जाते हैं— नरसीजी रो माहरो, गीतगोविंद की टीका, सत्यभामाजी नु रूसणू, रागसोरठ और राग गोविंद। परन्तु वास्तव में ये ग्रंथ मीराबाई के बनाये हुए नहीं हैं। मीरा ने केवल फुटकर पद लिखे हैं जिनकी संख्या २००-२५० के लगभग है।

मीराबाई ने राजस्थानी और ब्रजभाषा दोनों में कविता की है। इनके कुछ पद राजस्थानी में और कुछ ब्रजभाषा में हैं। कुछ में दोनों का मेल पाया जाता है।

मीराबाई की रचना में कृष्ण भक्ति की प्रधानता है। उसमें भक्ति और शृंगार दोनों का सुन्दर समन्वय हुआ है। सरल तो वह इतनी है कि अपढ़ लोग भी उसे बहुत आसानी से समझ लेते हैं। अनुभूति की सचाई, सुलझी हुई भावव्यंजना एवं स्त्री-सुलभ कोमलता इनकी कविता की इतर विशेषताएं हैं। इनके दो पद यहाँ दिए जाते हैं —

(१)

आवो दे गुमानी कृष्ण म्हारे घर काम छे॥
थे हो लगर नन्द महर के ब्रज बरसाने म्हारो गाम छे॥१॥
जाना नहीं तो पूछ लीजो श्री राधा म्हारो नाम छे॥२॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर नाम थांको बदनाम छे॥३॥

(२)

पग घुँघरू बाँध मीरां नाची रे॥
मैं तो मेरे नारायण की आप ही हो गई दासी रे॥१॥
लोग कहै मीरां भई बावरी न्यात कहै कुल नासी रे॥२॥
विष का प्याला राणाजी भेज्या पीवत मीरां हाँसी रे॥३॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर सहज मिले अविनासी रे॥४॥

(३) *महाराणा उदयसिंह*—वर्तमान उदयपुर नगर के संस्थापक महाराणा उदयसिंह ने सं० १५९४-१६२८ तक राज्य किया था। ये महाराणा संग्रामसिंह (प्रथम) राणा साँगा के पुत्र थे। इनके शासन समय में चित्तौड़ का तीसरा साका हुआ। ये कविता करते थे। इनके रचे डिंगल भाषा के दो गीत कवि गिरवरदान ने अपने नियमाय-प्रकाश ग्रंथ में उद्धृत किये हैं। ये

गीत प्राचीन लिखित संग्रह-ग्रंथों में भी देखने में आते हैं। एक गीत यहां दिया जाता है —

(१)

कहै पतसाह पता दा कूंची
धर पलटिया न कीजै धोड़ ।
गढ़पत कहै हमें गढ़ म्हारो,
चू डाहरो न दे चीतोड़ ॥

(२)

गोळा नाळ चंगर गाजे
गहै मीर साधीर धणी ।
जग्गा मुन नह दे जीवता,
ताओ लोचन प्रिया तणी ॥

(३)

भटका भाड़ आमडा भारै
रखियो दुरग वर्दै रिम राह ।
ऊभे पते न चल्यो अकबर
पड़ियै पत चल्यो पतसाह ॥

(४)

अकवर नू अड़ चाड राण नू
मुगला मारण कियो मतो ।
उन्यासिंघ राण सम आखै
पतटो धर नस धणी पतो ॥

(४) *महाराणा प्रतापसिंह*—ये महाराणा उदयसिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। इनका जन्म सं० १५९७ में हुआ। प्राचीन बहियां आदि में इनकी माता का नाम जीवनकुंवर लिखा मिलता है। वह पाली के सोनगरा अखैराज [रणधीरोत] की बेटी थी। सं० १६२८ में जब ये मेवाड़ की गद्दी पर बैठे तब

चित्तौड़ और मेवाड़ के अधिक भाग पर मुगल सम्राट अकबर का आधिपत्य था। अकबर चाहता था कि मेवाड़ पर उसका अधिकार बना रहे और राजस्थान के अन्य राजा महाराजाओं की तरह प्रताप भी उसकी अधीनता स्वीकार करले। परन्तु प्रताप ने यह मंजूर नहीं किया और आयुपर्यन्त अकबर से संघर्ष करते रहे। इस दीर्घकालीन संघर्ष के कारण उनको अनेक कष्ट झेलने पड़े, वन वन भटकना पड़ा और कई बार कन्द मूल खाकर जीवन निर्वाह करना पड़ा। परन्तु अपनी प्रतिज्ञा, अपने ध्येय एवं धर्म को फिर भी न छोड़ा। इतना ही नहीं, चित्तौड़ माण्डलगढ़ आदि दो-चार स्थानों को छोड़कर इन्होंने समूचे मेवाड़ को पुनः अपने अधिकार में कर लिया। इनका देहान्त सं० १६५३ में ५५ वर्ष की आयु में हुआ।

ये डिंगल भाषा में कविता करते थे। इनके निम्नलिखित दोहे राजस्थान में बहुत प्रचलित हैं। ये दोहे इन्होंने बीकानेर के राठौड़ पृथ्वीराज को उनके लिखे एक पत्र के उत्तर में लिखे थे —

तुरक कहासी मुख पतौ इण तन सूं इकलिंग।
ऊगै जांही ऊगसी, प्राची बीच पतंग ॥१॥
खुसी हूंत पीथल कमध, पटको मूंछां पाण।
पछटण है जेते पतौ कलमा सिर केवाण ॥२॥
सांग मूंड सहसी सको समजस जहर सवाद।
भड़ पीथल जीतो भलां बेण तुरक सूं वाद ॥३॥

इन्होंने अपने घोड़े चेटक की स्मृति में एक शोक काव्य [Elegy] भी बनाया था जिसमें १०० कवित्त (छप्पय) थे। इस काव्य की एक हस्त लिखित प्रति 'प्रतापचरित्र' के रचयिता स्व० बारहट केसरीसिंह जी, सोन्याणा, ने कुछ वर्ष पूर्व राजनगर के एक माली के पास देखी थी पर वह हस्तगत नहीं हो सकी।

(५) *महाराणा अमरसिंह*—इनका जन्म सं० १६१६ में हुआ। ये महाराणा प्रताप के पुत्र और महाराणा उदयसिंह के पौत्र थे। इनकी माता का नाम अजबदे था। सं० १६५३ में इनका राज्याभिषेक हुआ। अपने पिता की तरह ये भी बड़े स्वाभिमानी कष्ट-सहिष्णु और स्वातन्त्र्य-प्रेमी पुरुष थे। इन्होंने अपने पिता की नीति का अनुसरण किया और बराबर मुगल सेना से लोहा

लेन रह। अंत में इनके पुत्र कर्णसिंह ने अपने सरदारों के आग्रह पर तत्कालीन मुगल सम्राट जहाँगीर से संधि करली। इससे इनको बड़ी ग्लानि हुई। इन्होंने राजकाज छोड़ दिया और एकांतवास में रहने लगे। इनका देहांत सं० १६७६ में हुआ। इनके साथ इनकी दस रानियां नौ खवासें और नौ सहेलियां सती हुईं। उदयपुर में जिस स्थान पर इनका अग्नि संस्कार हुआ वहाँ इनकी छतरी अभी तक विद्यमान है।

महाराणा अमरसिंह कवि ही नहीं, कवि कोविदों के पृष्ठपोषक भी थे। इनकी आज्ञा से अमरविनोद नामक एक ग्रंथ रचा गया था। यह ग्रंथ मेवाड़ी बोली में है। इसमें हाथियों के विषय की अनेक बातें बताई गई हैं। इसके रचयिता का नाम धन्वंतरि था। वह बालाचार्य का पुत्र और जाति का ब्राह्मण था।

इनकी कविता विशेष नहीं मिलती। केवल दो दोहे मिले हैं। ये दोहे इन्होंने अपने मित्र अब्दुर्रहीम खानखाना को लिख भेजे थे —

गोड़ कछाहा राठवड़ गोखा जोख करंत।
कहजो खानाखान ने बनचर हुआ फिरंत ॥१॥
तवरां सूं दिल्ली गई राठौड़ां कनवज्ज।
अमर पयंपै खान ने वा दिन दीसे अज्ज ॥२॥

इनके उत्तर में खानखाना ने महाराणा को निम्नांकित दोहा लिख भेजा जो राजस्थान में बहुत प्रचलित है —

धर रहसी रहसी धरम खप जासी खुरसाण।
अमर विसंभर ऊपरां राखो नहचो राण ॥

(५) *महाराणा राजसिंह*—इनका जन्म सं० १६८६ में हुआ। ये महाराणा जगतसिंह (प्रथम) के पुत्र थे। इनकी माता का नाम जनादे था। वह मेड़तिया राठौड़ परिवार की थी। बादशाह औरंगजेब ने जब जजिया पुनः प्रचलित किया तब इन्होंने उसका घोर विरोध किया और उसकी इच्छा के विरुद्ध जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह के बालक अजीतसिंह को एवं देवलिया को तथा ... के ... को मेवाड़ में आश्रय दिया। इससे बादशाह की कोपाग्नि प्रज्वलित हो उठी और उसने मेवाड़ पर

चना" क"न्ी । परन्तु यह लडाई उसके लिए महंगी पड़ी। महाराणा की समर पटुता और सैन्य शक्ति के सामने शाही सेना के पाँव उखड़ गए और वह तीन तरह हो गई। यह देखकर बादशाह ने संधि की बात चलाई किन्तु इसी बीच महाराणा का देहान्त हो गया जिससे संधि-वार्ता टूट गई। यह घटना सं० १७३७ में हुई।

महाराणा राजसिंह स्वयं कवि और कवियों के आश्रयदाता थे। इनके समय में संस्कृत का सुप्रसिद्ध राजप्रशस्ति महाकाव्य लिखा गया जो राजसमन्द की पाल पर पच्चीस शिलाओं पर उत्कीर्ण है। यह भारत भर में सबसे बड़ा शिलालेख तथा शिलाओं पर खुदे हुए ग्रंथों में सबसे बड़ा है। इसमें २४ सर्ग हैं और ११०६ श्लोक। यह काव्य कोरा कल्पनाप्रसूत नहीं है। यह इतिहास और साहित्य दोनों दृष्टियों से महत्त्व का है। इसके अतिरिक्त राजरत्नाकर, राजविलास, राजप्रकाश प्रभृति और भी कई ग्रंथ इनके आश्रय में लिखे गये थे। यह समस्त साहित्य उदयपुर के सरस्वती भंडार में सुरक्षित है। महाराणा का बनाया हुआ एक छप्पय यहाँ दिया जाता है —

कहाँ राम कहाँ लखण, नाम रहिया रामायण।
कहाँ कृष्ण बलदेव प्रगट भागवत पुराणण॥
बाल्मीक शुक व्यास कथा कविता न करता।
कुण सरूप सेवता, ध्यान मन कवण धरता॥
जग अमर नाम चाहो जिके, सुणो सजीवण अक्खरा।
राजसी कहे जग राण री पूजा पाव कवीसरा॥

(८) *महाराणा अरिसिंह*—ये महाराणा जगतसिंह (द्वितीय) के पुत्र थे। सं० १८१७ में मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। ये क्रुद्ध क्रोधी और तेज स्वभाव के थे। इसलिए अपने सरदार उमरावों से झगड़ा कर बैठे। फलस्वरूप मेवाड़ गृह-कलह का घर बन गया और उसे कई प्रकार की हानियाँ उठानी पड़ीं। महाराणा को शिकार का बड़ा शौक था। एक दिन ये बूंदी के राव अजीतसिंह के साथ जंगल में सूअर की शिकार करने गये। वहाँ अजीतसिंह ने धराधर इनकी छाती में बरछी भोंककर इनको मार डाला। यह घटना सं० १८२९ में हुई।

के बनाय 'इश्कचमन' के उत्तर में 'रसिकचमन' लिखा जिसमें से दो दोहे यहां दिये जाते हैं —

इश्क अथाग अजब है गजब चोट है यार।
तन को तिनके सम गिने, सो ही पावै पार॥
सिर उतार लाहू छिरक, उसही की कर कीच।
आसिक बपर परि रहै उसी कीच के बीच॥*

(८) *महाराणा भीमसिंह*—ये महाराणा अरिसिंह (द्वितीय) के पुत्र थे। इनका जन्म सं. १८२४ में हुआ। इनकी माता का नाम सरदारकुंवरि था। सं. १८३४ में ये मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। उस समय इनकी आयु केवल दस वर्ष की थी। इसलिए इनकी माता की देख रेख में शासन प्रबंध होने लगा। इनके समय में मरहठों का जोर जुल्म मेवाड़ में बहुत बढ़ गया था। साथ साथ सिंधिया, होल्कर तथा पिंडारियों ने भी लूट पाट मचाना शुरू कर दिया था। इनके गिरोह दिन दहाड़े प्रजा को लूटते और गांव के गांव जलाकर चले जाते थे। देखते ही देखते मेवाड़ ऊजड़ सा हो गया, महाराणा के खजाने खाली हो गये और लोग मेवाड़ छोड़ कर आसपास के दूसरे राजाओं की शरण में चले गये। विवश होकर महाराणा को अंग्रेज सरकार से सहायता लेनी पड़ी। सं. १८७६ में दोनों के बीच संधि हुई जिसकी दस शर्तें थीं। इस संधि के फलस्वरूप अंग्रेजी सरकार ने मेवाड़ राज्य की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया और कर्नल टाड को अपना प्रथम पालिटिकल एजेंट नियुक्त किया। कर्नल टाड बड़े परिश्रमी, कार्यकुशल एवं नीति निपुण व्यक्ति थे। इन्होंने उपद्रवियों का मेवाड़ से नामोनिशान मिटा दिया। सिंधिया की शक्ति टूट गई। होल्कर बुरी तरह परास्त हुआ। मरहठा ने भागकर अपने प्राणों की रक्षा की और पिंडारियों के दल इधर उधर बिखर गये। मेवाड़ के शुभ दिन आये। देश छोड़ कर गये लोग फिर से यहां आ आकर बसने लगे और मेवाड़ की ऊजड़ भूमि पुनः हरी भरी हो गई। थोड़े ही समय में मेवाड़ के ...०० गांव आबाद हो गये। फिर से भीलवाड़ा, जहाजपुर, उदयपुर, चित्तौड़ तथा भीलवाड़ा में तेजी से व्यापार होने लगा। महाराणा भीमसिंह के राज्य-काल की यही प्रमुख घटना है।

---

*रसिक चमन ३।

यहीं से मेवाड़ के इतिहास का नाटिपथ प्रारम्भ होता है। महाराणा का देहान्त सं० १८८५ में हुआ।

महाराणा भीमसिंह बड़े दानी और दयालु राजा थे। ये कवि और इतिहास प्रेमी भी थे। इनके दरबार में कवियों और विद्वानों का खूब आदर होता था। लगभग सं० १८७३ में जब कवि पद्माकर उदयपुर में आये तब इन्होंने उनका स्वर्णपदक और भूषणादि देकर सम्मानित किया था। इनके आश्रय में लिखे गये दो चारण कवियों के दो ग्रंथ मिलते हैं—(१) भीमविलास और (२) भीमप्रकाश। भीमविलास कवि किसनजी आढ़ा की रचना है। भीमप्रकाश का प्रणयन कवि रामदान लालस ने किया था। इस ग्रंथ की एक हस्तलिखित प्रति सूरजमल नागरमल पुस्तकालय कलकत्ता, में है। ये दोनों ग्रंथ डिंगल भाषा के हैं और इतिहास की दृष्टि से परम उपयोगी हैं। इनके द्वारा महाराणा भीमसिंह के इतिवृत्त पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। इनका साहित्यिक मूल्य भी यथेष्ट है। दोनों ही ग्रंथ अभी तक अप्रकाशित हैं।

महाराणा भीमसिंह की कविता का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किया जाता है—

बसिया छे जी नन्दकिसोर
मारे मन बसिया नन्दकिसोर ॥टेक॥
बिन देखे कल नाय परत है, नाय सुहावे कछु और।
दरदवन सफरी ज्यूं तलफत सूझत और न ठौर ॥१॥
दिन नहिं चैन रैण नहिं निद्रा, कल न परत निस भोर।
भीम राण छन छन तन छीजत, बेग मिला जी दौर ॥२॥

(६) कुंवर अमरसिंह—ये महाराणा भीमसिंह के पाटवी कुंवर थे। इनका जन्म सं० १८४२ में और देहान्त सं० १८७५ में हुआ था। जवानसिंह इनके छोटे भाई थे। अपने पिता और भाई के माहात्म्य में ये भी अच्छी कविता करना सीख गये थे। ये प्रायः कवित्त सवैया लिखते थे। उदाहरण—

फागुन नैन नचावत नाचत डोलत लार न छारत मारियाँ।
बीन बजाय अबीर उड़ावत गावत आवत गारियाँ हारियाँ॥
फाग निहारि नये नये मानन नाहिं करो अब जोबन जारियाँ।
गारियों भींट के रंग में बारियाँ काहू दिवानो में गोरियाँ तारियाँ॥

(१०) *महाराणा जवानसिंह*—ये महाराणा भीमसिंह के पुत्र थे। इनका जन्म सं १८५७ में और देहान्त सं १८९५ में हुआ। ये व्रजभाषा के बहुत अच्छे कवि थे। इनकी कविता सरल स्वाभाविक और कर्णमधुर है। कविता में ये अपना नाम व्रजराज लिया करते थे। इन्होंने गेय पद भी यथेष्ट मात्रा में लिखे हैं। इनका पूरा इतिवृत्त श्री महेन्द्र भानावत ने इस ग्रन्थ की भूमिका में दिया है। नमूने के तौर पर इनका एक पद नीचे दिया जाता है —

राग अडाणो

सजनी प्रीतम को बस कर ले ॥टेक॥
बिन अपराध मान नहिं करिये प्रीत रीत सो लर ले।
इहि विधि सो रस बस ह्वै मोहन सीख कहीं चित धर ले।
हुक्म अधीन रहे नित हाजर भुज भर अंक हिं भर ले।
श्रीव्रजराज रिझाय सुहागन तन मन वातू हर ले॥

(११) *महाराणा सरूपसिंह*—इनका जन्म संवत् १८७१ में हुआ था। ये महाराणा सरदारसिंह के छोटे भाई थे। उनकी मृत्यु के पश्चात् संवत् १८९६ में मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। इन्होंने १९ वर्ष तक राज्य किया। ये बुद्धिमान न्यायप्रिय और प्रबंधपटु राजा थे। इन्होंने मेवाड़ की शासन-व्यवस्था में अनेक सुधार किये और उसकी आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ बनाया। मेवाड़ में सती प्रथा का अंत इन्हीं के राजत्वकाल में हुआ। इनकी मृत्यु संवत् १९१८ में हुई।

महाराणा सरूपसिंह बहुत पढ़े लिखे नहीं थे पर व्यवहार कुशल थे। इनकी बातचीत का लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ता था। इनकी आकृति भव्य थी। इसलिये इनके सामने बोलने की किसी की हिम्मत नहीं होती थी। ये सगुण और साहित्य के प्रेमी थे। साथ ही कवि भी थे। इनका लिखा एक पद यहाँ दिया जाता है—

भैरवी

श्री एकलिंग मन्दिर की झाँकी।
निरखन को आसा नयनां को॥ श्री एकलिंग॥

मथर चिंद्र फुनिंद्र लिपट रह्यो
चितवत कुंडल लोचन छबि वाकी ॥१॥
कंठ गरल रह्यो आभूषित
अरक कनक दल पहुप अदा की ॥२॥
गिरजा गंग गनेस नदीगन
सहित अनूप अनूप सभा की ॥३॥
छवि 'सरूप' बरनी न परत है
बुद्धि वय लगन लिये बिधना की ॥४॥

(१२) *महाराणा शम्भुसिंह*—ये महाराणा स्वरूपसिंह के दत्तक पुत्र थे। इनका जन्म संवत् १९०४ में हुआ था। संवत् १९१८ में इनकी गद्दीनशीनी हुई। उस समय इनकी आयु १४ वर्ष की थी। इसलिए तत्कालीन पोलिटिकल एजेंट मेजर टेलर की अध्यक्षता में रिजेन्सी कौंसिल की स्थापना की गई जिसकी देख रेख में शासन प्रबन्ध होने लगा। बालिग होने पर संवत् १९२२ में इनको शासन के पूरे अधिकार मिले। इन्होंने अंग्रेजी पद्धति पर कानून की कचहरियाँ स्थापित कीं। सड़कें बनने तथा संस्कृत और अंग्रेजी भाषा की पाठशालाएँ एवं अस्पताल खुलने का उत्तम कार्य इनके समय में ही प्रारंभ हुआ। संवत् १९३१ में इन्होंने अपनी सांसारिक लीला समाप्त की।

महाराणा शम्भुसिंह सुधारप्रिय विद्यानुरागी और स्पष्टवक्ता थे। ये हिन्दी-संस्कृत के सुज्ञाता थे और थोड़ी सी अंग्रेजी भी जानते थे। इनको कविता करने का अच्छा अभ्यास था। ये प्रायः पद और सवैया लिखते थे। पदों में ये अपना नाम 'रसिकसनेही' लिखा करते थे। इनकी रचनाएँ सरदारगढ़* के ठाकुर साहब अमरसिंहजी के संग्रह में उपलब्ध हैं।

महाराणा ने अपनी कविता बहुत सीधी सादी भाषा में लिखी है। इनकी कविता मीठी, भावपूर्ण और मार्मिक है। इनके पदों में एक विशेष प्रकार की मादकता है जो अन्यत्र कम देखने में आती है। इनके दो पद और एक सवैया हम यहाँ उद्धृत करते हैं—

---

*सरदारगढ़ ठाकुर साहब के सौजन्य से प्राप्त।

(१)

[illegible] ॥१॥
मोहगुरु[illegible]
[illegible] ॥१॥
[illegible]
[illegible] ॥२॥
[illegible]
[illegible] ॥३॥

(२)

[illegible] राजजी [illegible]
[illegible] राजजी [illegible] ॥१॥
[illegible]
[illegible] ॥१॥
[illegible]
[illegible] ॥२॥
[illegible] राजजी [illegible] ॥

सवैया

जावत देखत हैं जितही जित श्रीरघुबीर सबै गिरधारी।
त्यों प्रह्लाद विभीषण [illegible] उनको पन भारी॥
लायक हो तुम [illegible] पुत्र [illegible] यादि तुम्हारी।
हैं जिनके मन स्यामधनी उन सीस [illegible] हमारी॥

(१३) *महाराणा सज्जनसिंह*—ये बागोर महाराज शक्तिसिंह के पुत्र थे। इनका जन्म सं १९१६ में हुआ। महाराणा शम्भुसिंह की मृत्यु के पश्चात् सं १९३१ में ये मेवाड़ के राजसिंहासन पर आसीन हुए। ये प्रगतिशील विचारों के राजा थे। इन्होंने अनेक लोकोपयोगी कार्य किए और मेवाड़ की शासन-व्यवस्था को सुधारा जिससे प्रजा को बहुत लाभ पहुँचा। इनकी मृत्यु सं १९४१ में हुई।

महाराणा सज्जनसिंह विद्यानुरागी और ज्ञान विज्ञान के उन्नायक थे।

इनके निमन्त्रण पर स्वामी दयानन्द और भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र उदयपुर में आये और रहे थे। विदाई के समय इन्होंने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को सिरोपाव और दस हजार रुपया प्रदान किया। इन्होंने कविराजा श्यामलदास से 'वीरविनोद' नामक इतिहास ग्रन्थ लिखवाया और उस पर एक लाख रुपया खर्च किया। इन्होंने राजमहलों में 'सज्जनवाणी विलास' नामक एक पुस्तकालय स्थापित किया, जिसमें हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थों का अच्छा संग्रह था। यह पुस्तकालय सं० २००० तक रहा। तदनन्तर सरस्वती भंडार में मिला लिया गया। इनके आश्रय में सज्जनप्रकाश, सज्जनविलास, सज्जनविनोद इत्यादि कई ग्रन्थ लिखे गये जिनकी हस्तलिखित प्रतियां उदयपुर के सरस्वती भंडार में सुरक्षित हैं।

महाराणा महेन्द्र कवि और काव्य मर्मज्ञ थे। प्रति सोमवार को इनके महलों में कविसम्मेलन हुआ करता था, जिसमें ये स्वयं भाग लेते थे। ये अपनी कविताएँ सुनाते, दूसरों की सुनते और सराहते थे। इनकी कविताओं का एक संग्रह 'रसिकविनोद' नाम से प्रकाशित हुआ है। उसमें से एक कविता यहां उद्धृत की जाती है—

निकट नित रहत बहुत मतवार।
मधु ऋतु में मधुकर मन मोहित पद्म प्रसून पसार।
चल चल त्रिविध समीर बहै दिन ताप त्रिविध कू टारे ॥१॥
विपिन बहार अपार बनावें किंसुक सुम रतनारे।
चैत्र चंद्रिका चारु चकोरन हिय की हरत हमारे ॥२॥
पाय प्रभात गुलाब कलिन के कान परत चटकार।
वारि मकुन विथुरे पवन पर वारिज छवि विस्तार ॥३॥
कोकिल डार रसाल कुहूके पुष्प पराग पसारे।
रसिकसनेही यह ऋतु राजा तुम राजन रजियारे ॥४॥

(२८) महाराज चतुरसिंह—महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) के चार पुत्र थे—जगतसिंह, नाथसिंह, बाघसिंह और अर्जुनसिंह। ज्येष्ठ पुत्र होने से संग्रामसिंह के बाद जगतसिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठे और शेष तीन भाइयों को क्रमशः बागोर, करजाली एवं शिवरती जागीरें में प्राप्त हुईं और महाराज की उपाधि मिली। महाराज चतुरसिंह करजाली के स्वामी महाराज बाघसिंह से छठी पीढ़ी में हुए थे। इनका जन्म सं० १९३७ में हुआ। इनके

[illegible] मुरलीधर और [illegible] था। [illegible] —
[illegible] और चतुरसिंह। इनमें चतुरसिंह सबसे [illegible]।

इनका विवाह [illegible] हुआ। परन्तु [illegible] इनको बहुत [illegible] हुआ। इसके [illegible] दूसरा विवाह करने का [illegible] [illegible] तुलसीदास और [illegible]

इनका [illegible] सं० १९८६ में [illegible] की उम्र में [illegible] हुआ। [illegible] राजस्थानी [illegible] और [illegible] विभिन्न [illegible] १६ [illegible] जिनके नाम इस प्रकार हैं —

(१) भगवद्गीता की गंगाजली टीका (२) परमार्थ विचार (३) योगसूत्र की टीका (४) सांख्य तत्त्व समास की टीका (५) सांख्यकारिका की टीका (६) मानवमित्र रामचरित्र (७) [illegible] (८) अलखपच्चीसी (९) तूँ ही अष्टक (१०) अनुभवप्रकाश (११) चतुर्चिन्तामणि (१२) महिम्नस्तोत्र (१३) चन्द्रशेखराष्टक (१४) हनुमत्पंचक (१५) समानबत्तीसी और (१६) चतुरप्रकाश।

महाराज चतुरसिंह ने अधिकतर मेवाड़ी बोली में लिखा है। ये भक्त कवि और विचारक थे। इनके व्यक्तित्व की ये विशेषताएँ इनकी कविता में प्रतिबिम्बित हैं। इन्होंने सरल भावपूर्ण और मार्मिक कविता की है। एक विशेष बात उसमें यह है कि सरल व सजीव एवं प्रभावोत्पादक होने के अतिरिक्त वह सद्भावना से ओतप्रोत है और मनुष्य को उच्च भावनों की ओर ले जाती है।

इनकी कविता के कुछ नमूने यहाँ दिये जाते हैं—

(१)

जननी अब दरसण वेग दीजो।
पूरण पतित जाण पाळोगा माता फेर दरस वेग दीजो॥

घर म बध्या अजाण बाळक ईनै वद सुमराणा ।
दयादृष्टि सू दख अणोनै, वद मोळा म लोगा ॥१॥
माथे हाथ फेर मोरा पे, वद बोळरहा मा गा ।
इ कपूत न कवदा नैं भी गुण ही आप गणोगा ॥२॥
मा सा वरै कपूत चाकरी, तो भी नी विसराणा ।
या निप माया टगा करै पण, आप अमरफळ दोगा ॥३॥
या माहा आडो दीहे पण, ल कैनास चढ़ागा ।
आनन्दी नवर गोदी म आर हीज मनाणा ॥४॥

(२)

घड़ी घड़ी निरखै घड़ी बगी काम की चाह ।
बहे घड़ी ता पा म्हड़ो मुधि आवे की नाह ॥१॥
नै धरणा म मनभ तनु है हरिणी हार लीन ।
धतरणी म नरण की नै मरणी नहि कीन ॥२॥
गाम गावरे नाम म, यह मनाखी बान ।
दा मून आगर तक सागर पार न मान ॥३॥
रहट फरे नरमो फरे, पण फरवा मैं फेर ।
या ता याद हरया करै बा छूता ना ढेर ॥४॥
चाप जतगी छानजे, वर मन हो वाद ।
मन्दर रा म्हारा बगो, करजे मती कमाद ॥५॥

(१५) घडथर कँरि—यह मचरोन क ठाकुर स्वर्गीय बगरोसिहजी की पुत्री है। इनका जन्म स० १९५३ म और विवाह स्व० महाराणा भूपाल सिंहजी के साथ स० १९६७ म हुआ। यह सरल स्वभाव की धर्मनिष्ठ महिला है और अपना अधिक समय पूजा-पाठ एव धर्म चर्चा मे व्यतीत करती है। हिन्दू धर्म क प्रति इनकी बड़ा आस्था है। इन्होंने पणिहारी जला, अमर भक्ति की तर्ज पर ६५ गीत लिखे हैं जिनका सग्रह 'श्रीमाताजी रा गीत व श्री जी हुजूर की भावना' के नाम म प्रकाशित हुआ है। य गीत मराठी बानी मे है। इनमें अम्बिका, बावरी माता, गणगौर आदि की गाथा व महिमा का वर्णन किया गया है। इनमें स कुछ क सामाजिक रहाट भी उभर गये है। य गीत इनक हृदय क स्वभाविक उद्गार है। इनमें स्वरमाधुर्य पाया जाता है। नमूना इस प्रकार—

भजन [illegible] गाइजे रा

[[illegible]]

[illegible] ॥[illegible]॥

[illegible] ॥गनगोरी॥

[illegible] (आवर) [illegible] ॥गनगोरी॥

[illegible] म्हारा सर्वनिगराय [illegible] ॥गनगोरी॥

[illegible] म्हारा सर्वनिगराय [illegible] भाम—[illegible] ॥गनगोरी॥

[illegible] हार (आदर) लिखा बीच [illegible] । म्हारा सर्वनिगराय म्हारा [illegible] ॥गनगोरी॥

[illegible] उमा रानी राय श्री [illegible] आदरा भारी ह्रा । म्हारा सर्वनिगनाथ म्हारा [illegible] मवाहराय नैं अमर-अटल [illegible] ॥ [illegible]॥

[illegible] कभी चावर राबावत [illegible] लाग आदर पीवा [illegible] । म्हारा सर्वनिगनाथ म्हारा [illegible] चावर रा चूड़ो [illegible] अमर अटल करजो जा हो ॥गनगोरी॥

प्रस्तुत ग्रंथ महाराणा जवानसिंह उपनाम व्रजराज की फुटकर रचनाओं का संग्रह है। सरस्वती भण्डार उदयपुर के हस्तलिखित ग्रंथों के सूचीपत्र में इसके लिए 'व्रजराज पदावली' नाम मिलता है। परन्तु श्री महेन्द्र भानावत ने इसका 'व्रजराज काव्य माधुरी' नाम रखा है जो अधिक उपयुक्त और सार्थक है। इसका सम्पादन श्री भानावत ने मुख्यतः चार हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर किया है जिनका विवरण उन्होंने अपनी

भूमिका में किया है। लेकिन इनके अलावा भी इस ग्रंथ की कुछ हस्तलिखित प्रतियां इनके स्थान में आई हैं तथा 'ब्रजराज' की छाप के कुछ फुटकर पद्य भी इधर उधर हस्तलिखित संग्रह ग्रंथों में बिखरे मिलते हैं। परन्तु वे सब प्रक्षिप्त हैं। इसलिए श्री मानावत ने उनको जान-बूझकर छोड़ दिया है। यह उचित ही हुआ है। क्योंकि प्रामाणिक सामग्री में संदिग्ध सामग्री को मिलाना कभी हितकर सिद्ध नहीं होता। इससे आगे जाकर अनेक उलझनें पैदा हो जाती हैं जैसा कि मीराबाई के पदों के सम्बन्ध में हुआ है। मीराबाई के पदों के अनेक संग्रह अद्यावधि प्रकाशित हुए हैं। किन्तु उनसे यह भी पता नहीं लगता कि उनमें कौन से पद वास्तव में मीराबाई के हैं और कौन से नहीं हैं। यही हाल बिहारी-सतसई के दोहों का भी हुआ है।

ब्रजराज-काव्य माधुरी में कुल २८६ पद्य हैं जिनको तीन भागों में विभक्त किया गया है—(१) विनय माधुरी (२) शृंगार माधुरी और (३) पद माधुरी। यह विभाजन श्री मानावत का अपना है। हस्तलिखित पोथियों में इस तरह का विभाजन नहीं मिलता। ग्रंथ के प्रारम्भ में भूमिका है जिसमें महाराणा जवानसिंह के व्यक्तिगत जीवन, उनकी काव्य-प्रतिभा आदि पर प्रकाश डाला गया है। अन्त में तीन परिशिष्ट हैं। इनमें इतिहास व साहित्य विषयक बहुत उपयोगी सामग्री का समावेश हुआ है।

श्री मानावत द्वारा सम्पादित इस ग्रंथ की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें 'ब्रजराज' की भाषा के मूल स्वरूप को सुरक्षित रखा गया है। उदाहरण के लिए अधिकरण कारक के परसर्ग को लीजिए। स्वयं निव ब्रजराज ने 'मैं' 'मे' और 'म' का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं तो एक ही छन्द में ये तीनों रूप साथ में आए हैं। परन्तु श्री मानावत ने इनको ज्यों का त्यों रहने दिया है। भाषा को एकरूपता (uniform) बनाने के लोभ में इनको कहीं बदला नहीं है। इससे ब्रजराज की भाषा का असली स्वरूप निखर आया है।

श्री महेन्द्र मानावत ने अभी तक केवल साहित्यिक लेख लिखे हैं जिनकी संख्या २०० से ऊपर है। ये लेख हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये हैं। परन्तु ग्रन्थ सम्पादन की दिशा में यह इनका प्रथम प्रयास है और एक सफल प्रयास है। इनके इस सम्पादन कार्य में हमारे विभाग के श्री कृष्णचन्द्र शास्त्री ने इनकी बहुत सहायता की है। भूमिका के लिए सामग्री जुटाने में, कवि परिचय लिखने में, पाठ निर्णय में, परिशिष्ट

भजन एकलिंगनाथ रो

[राग जलारे म्हैंता राज रा डेरा निरखण आई हो]

सम्भूजी म्हैं तो राज रा दरसण कर सुख पाऊ हो। म्हारा एकलिंग नाथ म्हारा सभूनाथ दरसण करता पूरण भई सब आसा हो ।।सम्भूजी०।।टर।।

सम्भूजी राणी रायबी ने अमर अटल कर दीजो हो। म्हारा एकलिंग नाथ म्हारा सम्भूनाथ पावडे पावडे साय आप ही कर दीजो हो ।। सम्भूजी०।।

सम्भूजी हीरा री जलेरी (महाराणा) भोपालसिंग सा भट कराई हो। म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सम्भूनाथ अन्नदाता न अमर-अटल कर दीजो हो ।।सम्भूजी०।।

सम्भूजी हीरा रा नाग री सोभा बरणी न जावे हो। म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सम्भूनाथ बीलपत्तर आपरे सीस जटा मे साव हो ।। सम्भूजी०।।

सम्भूजी काना नै कुण्डल वेसर री छब भारी हे। म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सम्भूनाथ ललवट टीको भाल—च द ज्यू झलकै हो ।।सम्भूजी०।।

सम्भूजी हीरा रा हार (आपरे) हिरदा बीच हद सोवे हो। म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सम्भूनाथ कठसरो री साभा बरणी न जाव हो ।।सम्भूजी०।।

सम्भूजी ऊभा राणी राय जी सेवा करावे आपरी भारी हो । म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सभूनाथ मेवाडनाथ नैं अमर अटल कर दीजो हो ।। सभूजी०।।

सम्भूजी ऊभी चाकर राजावत लुळ लुळ लागे आपर पांवा हो । म्हारा एकलिंगनाथ म्हारा सम्भूनाथ चाकर रो चूडो चू दड अमर अटल करदी जो हो ।।सम्भूजी०।।

प्रस्तुत ग्र थ महाराणा जवानसिंह उपनाम व्रजराज की फुटकर रचनाओं का सग्रह है। सरस्वती भण्डार उदयपुर क हस्तलिखित ग्र थो के सूचीपत्र म इसक लिए वृजराज पदावली नाम मिलता है। परन्तु श्री महेन्द्र भानावत ने इसका व्रजराज काव्य माधुरी नाम रखा है जो अधिक उपयुक्त और साथक है। इसका सम्पादन श्री भानावत ने मुख्यत चार हस्त लिखित प्रतियो के आधार पर किया है जिनका विवरण इन्होंने अपनी

भूमिका में दिया है। लेकिन इनके अलावा भी इस ग्रंथ की कुछ हस्तलिखित प्रतियाँ इनके देखने में आई हैं तथा 'व्रजराज' की छाप के कुछ फुटकर पद्य भी इधर उधर हस्तलिखित संग्रह ग्रंथों में बिखरे मिलते हैं। परन्तु वे सब प्रक्षिप्त हैं। इसलिए श्री भानावत ने उनको जान-बूझकर छोड़ दिया है। यह उचित ही हुआ है। क्योंकि प्रामाणिक सामग्री में सन्दिग्ध सामग्री का मिलाना कभी हितकर सिद्ध नहीं होता। इससे आगे जाकर अनेक उलझनें पैदा हो जाती हैं जैसा कि भागवतरसिक के पदों के सम्बन्ध में हुआ है। मीराबाई के पदों के अनेक संग्रह अद्यावधि प्रकाशित हुए हैं। किन्तु उनसे यह भी पता नहीं लगता कि उनमें कौन से पद वास्तव में मीराबाई के हैं और कौन से नहीं हैं। यही हाल बिहारी-सतसई के दोहों का भी हुआ है।

व्रजराज-काव्य माधुरी में कुल २९६ पद्य हैं जिनको तीन भागों में विभक्त किया गया है—(१) विनय माधुरी (२) शृंगार माधुरी और (३) पद माधुरी। यह विभाजन श्री भानावत का अपना है। हस्तलिखित पोथियों में इस तरह का विभाजन नहीं मिलता। ग्रंथ के प्रारम्भ में भूमिका है जिसमें महाराजा जवानसिंह के व्यक्तिगत जीवन, उनकी काव्य प्रतिभा आदि पर प्रकाश डाला गया है। अन्त में तीन परिशिष्ट हैं। इनमें इतिहास व साहित्य विषयक बहुत उपयोगी सामग्री का समावेश हुआ है।

श्री भानावत द्वारा सम्पादित इस ग्रंथ की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें व्रजराज की भाषा के मूल स्वरूप को सुरक्षित रखा गया है। उदाहरण के लिए अधिकरण कारक के परसर्ग को लीजिए। इसके लिए 'व्रजराज' ने 'में' 'मैं' और 'मे' का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं तो एक ही छंद में ये तीनों रूप [illegible] में आते हैं। परन्तु श्री भानावत ने इनको ज्यों का त्यों ग्रहण किया है। भाषा को एकरूपता (uniform) देने के लोभ में इनको कहीं बदला नहीं है। इससे 'व्रजराज' की भाषा का असली स्वरूप निखर आया है।

श्री महेन्द्र भानावत ने अभी तक केवल साहित्यिक लेख लिखे हैं जिनकी संख्या २०० से ऊपर है। ये सब हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। परन्तु ग्रंथ सम्पादन की दिशा में यह इनका प्रथम प्रयास है, और सफल प्रयास है। इनके इस सम्पादन कार्य में हिन्दी विभाग के श्री कृष्णचन्द्र शास्त्री ने इनको बहुत सहायता की है। ग्रन्थ के लिए सामग्री जुटाने में, कवि परिचय लिखने में, पाठ-निर्णय में, परिशिष्ट

तैयार करने में श्री मानावत को इनका बराबर सहयोग रहा है। इसलिए इस पुस्तक में जो भी अच्छाइयाँ हैं उनका श्रेय श्री ज्ञानचन्द्र को भी उतना ही है जितना श्री मानावत का है। इसकी प्रेस कापी श्री नन्दकिशोर पल्लीवाल ने तैयार की है। अतः वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

पुस्तक के परिशिष्ट ३ में उद्धृत महाराणा अरिसिंह कृत रसकचमन हमें रावत श्री हिम्मतसिंहजी साहित्यरंजन भैंसरोडगढ़ से प्राप्त हुआ है। रसिकचमन साहित्य की एक छोटी पर मार्मिक रचना है। यह अब तक अप्रकाशित थी। इसको देखने के लिए कविता प्रेमी पाठक बहुत लालायित थे। श्री हिम्मतसिंहजी की सुकृपा से उनकी यह लालसा पूरी हुई है। रावतजी बड़े विद्यानुरागी इतिहासवेत्ता और मजे हुए कवि हैं। इनको ग्रन्थ लिखने की धुन है। इनका लिखा सती पद्मावती महाकाव्य हिन्दी साहित्य की एक अनमोल कृति है। हम रावतजी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

भूतपूर्व मेवाड़ राज्य का 'सरस्वती भण्डार' भारतवर्ष का प्राचीनतम पुस्तकालय है। इसमें संस्कृत हिन्दी डिंगल इत्यादि की पुस्तकों का एक छोटा पर अलभ्य संग्रह है। इस समय यह राजकीय राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर के अधीन है। प्रतिष्ठान के संचालक महोदय ने हम को 'ब्रजराज काव्य माधुरी' की हस्तलिखित प्रतियों के अध्ययन का मौका दिया जिसके लिए हम उनके आभारी हैं।

इस पुस्तक के प्रकाशन का समस्त व्यय श्रीमान् महाराणा श्री भगवतसिंहजी साहब ने प्रदान किया है। इस महती कृपा के लिए हम उनके बहुत कृतज्ञ हैं। महाराणा साहब साहित्य इतिहास संगीत आदि विषयों के परम प्रेमी और पुष्टपोषक हैं। आशा है वे भविष्य में भी हमारी इसी प्रकार सहायता करते रहेंगे।

मोतीलाल मेनारिया
संचालक
साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ
उदयपुर (राजस्थान)

उदयपुर राजस्थान



महाराणा जवानसिंह "व्रजराज"
[सं० १८८५-९५]

भूमिका

कवि-परिचय

महाराणा जवानसिंह का जन्म सं० १८५७ मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीया को हुआ[1]। ये महाराणा भीमसिंह के पुत्र थे। इनके बड़े भाई का नाम अमरसिंह था। उनका देहान्त महाराणा की विद्यमानता में ही हो गया था[2]। इसलिये महाराणा भीमसिंह की मृत्यु के बाद जवानसिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। इनकी माता का नाम गुलाबकुंवरि था[3]। वह चावड़ा राणा के जसवंतसिंह की बेटी थी[4]। इतिहास प्रसिद्ध कृष्णकुंवर (कृष्णकुमारी) इनकी बहिन थी।

सं० १८८५ में इनका राज्याभिषेक हुआ[5]। इस अवसर पर अंगरेजी सरकार की ओर से मेवाड़ के तत्कालीन पालिटिकल एजेंट कप्तान कॉब टीका लेकर उपस्थित हुए, जिसका दस्तूर राज-दरबार के विशेष आयोजन के साथ किया गया। इस टीके में हाथी, घोड़े, तलवार, ढाल, सिरोपाव, मोतियों की माला तथा सरपेच जैसी अनेक बहुमूल्य वस्तुएं थीं। महाराणा ने भी कप्तान कॉब को यथोचित सम्मान देकर विदा किया[6]।

महाराणा जवानसिंह शासन प्रबन्ध में अधिक कुशल नहीं थे। इसलिये इनके राज्यकाल में मेवाड़ राज्य को बहुत बड़े अर्थ-संकट से गुजरना

---

१ ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, दूसरी जिल्द, पृष्ठ ७२१
२ कविराजा श्यामलदास, वीरविनोद, द्वितीय भाग, पृष्ठ १७४५
३ मेवाड़ के राणाओं की राणियों और कुंवरों का हाल (हस्तलिखित) पत्र ८
४ वही, पत्र ८
५ ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, दूसरी जिल्द, पृष्ठ ७२१
६ कविराजा श्यामलदास, वीरविनोद, द्वितीय भाग, पृष्ठ १७८१

पड़ा। एक ओर तो शासन-यंत्र बन्द गया और दूसरी ओर राज्य का आय मे भारी कमी हो गई। इसमें अंगरेजी सरकार के खिराज आदि के सात लाख रुपये चढ़ गये। उस समय महता रामसिंह प्रधान पद पर था जो महाराणा भीमसिंह के समय से चला आ रहा था। शासन की व्यवस्था भली प्रकार न संभल सकने के कारण महाराणा जवानसिंह ने उसको प्रधान पद से हटा दिया और उसके स्थान पर महता शेरसिंह को नियुक्त किया।

शेरसिंह सच्चा और ईमानदार व्यक्ति था। परंतु प्रबन्ध-प्रबन्ध की दृष्टि से वह भी असफल रहा। इसलिये महाराणा ने महता रामसिंह को फिर से प्रधान बनाया। इस बार रामसिंह ने कप्तान काब की सहायता से ऋण का कुछ अंश अंगरेजी सरकार से माफ करवाया और जनता से दंड आदि के रूप में बहुत बड़ा राशि एकत्र कर रियासत को ऋण से मुक्त कराया। इस कार्य से रामसिंह को पर्याप्त यश मिला। इससे अनेक राजदरबारी लोग उससे ईर्ष्या करने लगे। परन्तु कप्तान काब जब तक मेवाड़ में बना रहा वे लोग महता रामसिंह का कुछ न बिगाड़ सके। क्योंकि काब उसका प्रमुख पृष्ठपोषक था। किंतु कप्तान काब के यहां से विलायत चले जाने पर महाराणा ने महता रामसिंह को हटा कर पुनः शेरसिंह को उसकी जगह नियुक्त किया। इस प्रकार के परिवर्तन प्रायः होते रहे जिससे महाराणा के शासन प्रबंध में स्थिरता नहीं आ पाई[७]।

महाराणा ने अपने जीवन-काल में तीन यात्राएं कीं। इन की पहली यात्रा प्रसिद्ध तीर्थ गया की थी। इस यात्रा का उद्देश्य महाराणा का अपने पिता भीमसिंह का श्राद्ध करना था। यह यात्रा सं० १८९० में हुई। मार्ग में वृन्दावन, अयोध्या, मथुरा, प्रयाग आदि स्थानों पर इनका बड़ा सम्मान हुआ। लखनऊ के नवाब नासिरुद्दीन हैदर तथा कोटा के महाराव रामसिंह ने इनकी बड़ी आवभगत की। इस यात्रा में अंगरेजी सरकार की ओर से भी इनका अच्छा सत्कार हुआ। गया से लौटते समय महाराणा कुछ दिन रीवां ठहरे। वहां महाराज जयसिंह देव ने अपने छोटे कुंवर लक्ष्मणसिंह की पुत्री अजबकुंवरि इन्हें विवाह में दी[८]। इनकी दूसरी यात्रा अजमेर की

---

७ ओझा उदयपुर राज्य का इतिहास, दूसरी जिल्द, पृष्ठ ७२४-७२७

८ मेवाड़ के राजाओं की राणियां और कुंवरों का हाल (हस्तलिखित) पत्र ६

थी जो गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बैंटिक से मिलने के लिए की गई। अन्तिम यात्रा आबू की सं० १८९३ फाल्गुन शुक्ल एकादशी को पूरी हुई।

महाराणा जवानसिंह ने उदयपुर में पीछोला तालाब के तट पर जल निवास नामक महल और बाड़ी के मगरे में महाकालिका का मंदिर बनवाया[९]। इन्होंने दो-एक बाग भी बनवाये। इनके अलावा इन्होंने नीचे लिखे तीन मन्दिरों का निर्माण करवाया—(१) जवानस्वरूपेश्वर का मन्दिर (२) जगतशिरोमणि का मन्दिर तथा (३) जवानसूरजबिहारी का मंदिर।

(१) जवानस्वरूपेश्वर का मंदिर

यह मंदिर राजमहल के मुख्य द्वार, बड़ी पोल से कोई पचास फीट की दूरी पर सड़क के किनारे पर है। इसका द्वार पश्चिम में खुलता है। यह महादेव का मंदिर है। निज मंदिर के सामने की ताक में महाराणा जवानसिंह की संगमरमर की प्रतिमा है। उनकी गोद में बाईं ओर उनकी बाघेली रानी बैठी हुई है। शिवलिङ्ग की पूजा के साथ-साथ महाराणा की इस प्रतिमा की भी विधिवत् पूजा की जाती है। सभा मंडप में नंदी की मूर्ति है। यहीं दाईं ओर की दीवार के कोने में एक प्रशस्ति लगी हुई है। इस के अनुसार महाराणा जवानसिंह ने इस मंदिर का निर्माण करवाया था। परन्तु उनके अधिक जीवित न रहने के कारण वे इसकी प्रतिष्ठा नहीं करवा सके। उनके बाद महाराणा सरदारसिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। वे भी बहुत कम समय तक राज्य कर पाये। इसलिए उनके बाद महाराणा स्वरूपसिंह ने सं० १९०० वैशाख शुक्ल षष्ठी गुरुवार को इसकी प्रतिष्ठा करवाई[१०]।

(२) जगतशिरोमणि का मन्दिर

यह मन्दिर जवानस्वरूपेश्वर के मंदिर के सामने है। इसका द्वार पूर्व की ओर है। यह संगमरमर का बना सुन्दर मंदिर है। इसकी बनावट कलापूर्ण और आकर्षक है। इसके बाहरी भाग पर नीचे से लेकर शिखर तक अनेक छोटी-बड़ी विभिन्न प्रकार की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। इन मूर्तियों में

---

९. कविराजा श्यामलदास : वीरविनोद, प्रथम भाग, पृष्ठ ११३

१०. देखिए परिशिष्ट संख्या १।

विष्णु और शिव की प्रतिमाओं के अतिरिक्त हाथी घोडे नर्तकिया योद्धा आदि मुख्य है । यह मदिर पुष्टिमार्ग का है। इसमे राधा-कृष्ण की मूर्तिया प्रतिष्ठित है। इस मदिर मे एक प्रशस्ति भी लगी हुई है जो दो शिलाओं मे पूरी हुई है । इस प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि इसका निर्माण महाराणी बाघेली द्वारा हरि-अर्पण किये गये निजी धन से महाराणा जवानसिंह ने करवाया था । इसकी प्रतिष्ठा महाराणा स्वरूपसिंह ने स० १९०४ वैशाख शुक्ल द्वादशी रविवार के दिन करवाई थी[११]।

(३) जवानसूरजविहारी का मदिर

यह मदिर जगदीश चौक से गणगोर घाट जाने वाली सडक के बाई ओर है । इस मदिर पर नाना प्रकार की मूर्तिया खुदी हुई हैं। इस बाकडे-बिहारी का मदिर भी कहते है । ऐसा कहा जाता है कि महाराणा जवानसिंह ने इसे अपनी राणी सूरजकु वरि के लिये बनवाया था । इसमे राधा-कृष्ण की युगल-मूर्ति है एव बाके बिहारी के रूप मे श्री कृष्ण बासुरी बजाते हुए दिखाये गये हैं। जगतशिरोमणि के मदिर की प्रतिष्ठा के साथ इसकी प्रतिष्ठा भी महाराणा स्वरूपसिंह ने करवाई थी —

अस्मिन्नह्नि जगच्छिरोमणिरसौ सतुब हृन्नामका
रिगत्माग रसेतुरद्भुततरो मिष्टप्रभूता धर ।
तुर्य्योयत्र युवानसूरजविहारी चैव राधावर
सर्वे पामभिजि मुहूर्तसमये दि या प्रतिष्ठाह्यभूत् ॥

—जगतशिरोमणि के मन्दिर की प्रशस्ति, श्लोक ८८

उपयु क्त तीनो मदिर शिखरबध हैं। ये इस समय राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग की देख रेख मे हैं। इनकी प्रबध व्यवस्था अच्छी है।

महाराणा जवानसिंह का देहावसान स० १८९५ भाद्रपद शुक्ल दशमी बृहस्पतिवार को उदयपुर मे हुआ[१२]। स्वर्गीय मुशी देवी प्रसाद ने इनकी मृत्यु का कारण बागोर के महाराज सरदारसिंह द्वारा विष देना माना

है[१३]। परन्तु कविराजा श्यामलदास का मत इसके विपरीत है। उन्होंने महाराणा की मृत्यु का कारण सिर की पीड़ा बताई है[१४]। कविराजा श्यामलदास के इस मत की पुष्टि स्व० डा० गौरीशंकर-हीराचंद ओझा ने भी की है[१५]। इनके सात रानियां थीं। इनमें से महाराणी बड़ी भटियाणी और महाराणी बाघेली इनके साथ सती हुईं[१६]। उदयपुर में जिस स्थान पर इन की दाह-क्रिया हुई वहां एक छतरी अभी तक विद्यमान है।

महाराणा जवानसिंह बड़े हँसमुख, मृदुभाषी एव उदार प्रकृति के नरेश थे। ये कवियों और विद्वानों का अच्छा सम्मान करते थे। इनके समय में कवि बखतराम आसिया ने 'कीरतप्रकाश' नामक ग्रन्थ रचा जिसमें इनका जीवन-चरित वर्णित है। यह ग्रन्थ डिंगल भाषा में है और अभी तक अप्रकाशित है। इसकी एक हस्तलिखित प्रति कवि बखतराम के वंशजों के पास पदूड़ गांव में बताई जाती है। इसके अलावा महाराणा स्वयं भी उत्तम कोटि के कवि थे। कविता में ये अपना नाम 'ब्रजराज' लिखते थे।

ब्रजराज-काव्य माधुरी

महाराणा जवानसिंह ने क्रमबद्ध ग्रन्थ कोई नहीं लिखा। केवल फुटकर कविता की है। कविता करने का श्रीगणेश इन्होंने पद-रचना से किया था। इनका लिखा पहला पद यह है —

कमरियो कुंवर मिजमान छक रसभीनो साही।
आनन्द घर सब साज बनायो अतर अरगजा धर पान छै।
गिरधर श्याम सुजान रसीलो नन्द महर को लाल छै।
श्री ब्रजराज किसोर मनोहर आनन्द को प्रान छै[१७]।

यह पद सं० १८८२ फाल्गुन कृष्णा ४ रविवार को लिखा गया था।

---

१३ मुंशी देवीप्रसाद, राजरसनामृत, पृष्ठ १८
१४ कविराजा श्यामलदास, वीरविनोद, द्वितीय भाग, पृष्ठ १८०३
१५ ओझा, उदयपुर राज्य का इतिहास, दूसरी जिल्द, पृष्ठ ७१२
१६ कविराजा श्यामलदास, वीरविनोद, द्वितीय भाग, पृ० १८०८
१७ ब्रजराज-काव्य माधुरी, पद माधुरी, पद १

इसी वर्ष की चैत कृष्णा ७ शनिवार को इन्होंने दूसरा पद लिखा जो इस प्रकार है —

राधजी म्हारा मन बस कीनो हो
हो जी म्हारो प्रान री प्यारा राधे।
रूप अनुपम सुन्दर अन हो जग रंग भीनो हो।
श्री व्रजराज सुजान सनेही ज्चन अधीनो हो[18]।

संवत् १८८ वैशाख शुक्ल ७ गुरुवार के दिन से महाराणा ने किशनजी आढा से कविप्रिया पढ़ना आरम्भ किया और ज्येष्ठ शुक्ल ६ सोमवार से ये कवित्त दूहा आदि छन्दोबद्ध रचना करने लगे। इनका लिखा पहला कवित्त निम्न है —

कमल नरायन गरुड़ध्वज कृपानिधि,
माहन मुरारी चक्रधारी सुधि कीजियें।
द्रोपदी को राखी लाज गज को उबार लियो
त्योंही मेरा दीनानाथ हाथ गहि लीजियें॥
ध्रुव को बताय ध्यान ध्यान में लगाय लीयो
मेती बात करो ग्रती जग में पतीजियें।
करुनानिधान स्याम सुनिये अनाथबंधु,
विरद पिछान मोको भक्तिदान दीजियें॥[19]

इसके बाद इन्होंने नाथ लिखा दोहा बनाया और फिर तो ये बराबर दोहा कवित्त सवैया आदि लिखने लगे।

खंजन से अंग मीन से राधे तेरे नैन।
लागत हो मो मन विषै प्रगट करत हैं मैन॥[20]

महाराणा कविता लिख लिख कर अपने पुरोहित शिवदानजी, मानीचंद

---

१८ व्रजराज-काव्य माधुरी पद माधुरी, पद १
१९ वही विनय माधुरी पद १३
२० वही शृंगार माधुरी पद १४

जो सामर भट्ट गुरुगनाथजी, जोशी नन्दजी, नाथूजी भट्टमेवाड़ा, नंदरामजी पारोरी चन्द्रदेवरजी गारवान माहजी होल्या, ठाकुर जोरावरसिंहजी इत्यादि मुसाहिबों के द्वारा किशनजी आदि के पास पहुँचवाते थे जो इनकी प्रतिलिपियां तैयार करते थे।[21]

भाषा

राजस्थान में शुद्ध ब्रजभाषा को 'ब्रजभाषा' और राजस्थानी से प्रभावित ब्रजभाषा को 'पिंगल' कहते हैं। ब्रजराज ने इन दोनों प्रकार की भाषाओं का प्रयोग किया है। इनकी 'विनय माधुरी' और 'शृंगार माधुरी' की भाषा ब्रजभाषा है जो सीधी-सादी होने के साथ साथ बड़ी मधुर भी है। इसमें अनुप्रास की छटा खूब दिखाई पड़ती है। इन्होंने अनेक स्थानों पर बोलचाल के ढंग को निभाया है। इसलिए इनकी भाषा सर्वत्र भावानुगामिनी बन सकी है।

उदाहरण—

> मोहन सों कबहूँ सजनी सपनें हिय में कछु मान न कीजै।
> नैनन सौं मन सौं मन सौं वह रूप निहारत ही नित रीजै॥
> ब्रज हि ब्रजराज कहैं मन भावन या जग में जस वास सु लीजै।
> पावस स्याम सुजान हि सौं भुज भेंट अली अधरा रस पीजै॥[22]

और भी—

> जा दिन तैं बिछुरे तुम स्याम सु ता दिन तैं तन रोग भयौ है।
> खान रु पान बिसार दयौ निय आंखिन मैं जिय आय रह्यौ है॥
> पावत नाहिं रमा जन सौं अति अंग अनंग मरोर लयौ है।
> वा ससी न बिलंब करो अब दुःख को सब नेह नयो है॥[23]

---

21 ब्रजराज काव्य माधुरी की सरस्वती भण्डार, उदयपुर की हस्तलिखित प्रति सं० ३९६ पत्र १८–२३

22 ब्रजराज-काव्य-माधुरी शृंगार माधुरी पद २६

23 वही, शृंगार माधुरी पद ८०

इन के रच पदों का भाषा पिंगल अर्थात् राजस्थानी मिश्रित व्रज-भाषा है। उस पर राजस्थानी का बहुत गहरा प्रभाव पाया जाता है। यथा—

(क) "अरज करा छा म्हारा मैल्हा आज्यो।'[२४]

(ख) आवे छै आवे छै अलवेली ह सहेली हे गिरधर प्रीतम पामणा।[२५]

(ग) काइ मासू मान करो मृगानैणी।"[२६]

(घ) कामण कीधा छै जो नाजक नार।[२७]

(ङ) केसरियो कु वर मिझमान छै रगभीनी लाडो।'[२८]

(च) काहि करा मनुहार म्हासू म्हैता थारा दल री जाणी।'[२९]

इन पदा की भाषा पर कही कही पजाबी और खडी बाली का भी रग दखने मे आता है। उदाहरण—

(क) चरणा दी दासी साहीबा जनम जनम री आप किया की प्रीत निभाज्यो।[३]

(ख) "अविद्या बहुत करता है हरो सो नाहि डरता है।[३१]

इन पदा म एक दो पद तो पूरे के पूर गुजराती म हैं। इससे ज्ञात होता है कि व्रजराज का गुजराती भाषा पर भी अच्छा अधिकार था। उदाहरण—

गरबी

रुडी भली रलीयावणी जी रे
आली जमुनाये तीर सुहावणी जी रे। आला।

---

२४ व्रजराज काव्य माधुरी पद्माधुरी प॰ ६
२५ वही प॰ माधुरी प॰ २४
२६ वही प॰ माधुरी पद ६७
२७ वही प॰ माधुरी पद ६४
२८ वही प॰ माधुरी प॰ २
२९ वही प॰ माधुरी प॰ ८६
३ वही प॰ माधुरी प॰ ६
३१ वही प॰ माधुरी पद ७

कसनजी ना या नित आवणो जो रे।
मधुरी सी मुरली बजावणा जी र।
हियै साच घणू ने कलपो घणी जो र।
नैणे लाधा नथी व्रजना घणी जा रे।
रैन आधी रही नैं चन्दा ढल्या जी र
मारै नदजी नो नन्द नथी मल्यो जी र।
मावो भूठो थयो वलमरयो जी र
कमे एटला दुध नथी महा जो र।
मयो याओ उपाय करया थको जो रे
साम आव नथी ता जावा मुखो जी र।
मग्ग बातें करें कमी वजी जा र
सरवै दुमना जान त्यायी भजी जा र।
थारैं माथे मुकट लकुटी नीय जी र
वछे नटनो भम मला वीय जी रे।
अेन श्री व्रजराज मु आवीयो जा र
मानु रंक महानिधि पावीयो जी र।[32]

राजस्थानी पंजाबी आदि भ पाषा का मन होन क कारण ब्रजराज ये पना का भाषा कुछ उखड़ी हुइ कुछ ऊबड़-खाबड़ दिखाई पड़ती है किन्तु फिर भी उनकी गयना और स्वर-माधुर्य म किसी प्रकार का अन्तर नहीं आया है। गय पना की भाषा मे जा सरसता और प्रवाह होना चाहिए वह इनम पूर्ण रूप से पाया जाता है। उदाहरण—

टाना रंगा कीनी है रग भीनी राधे करिके गुमान
इन्सरी थानी ।।टेर।।
नित दिन प्रान रहे व्याकुल हो हरी तेनैं कछु दीनो है।
तरा दरस किये बिनु सजनी छिन में यति छीनो है।
पिय मनमोहन य मनभावन हुकम भदानो है।
श्री ब्रजराज कुंवर को हलो तर मन हर जाना है।।[33]

---

३२ ब्रजराज-नागर माधुरी, पृ० माधुरी पृ० ३२
३३ वही पृ० माधुरी पृ० ३३

इन्होंने अरबी फारसी के शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया है परन्तु इनके कारण इनकी भाषा में कहीं दुरूहता व अस्वाभाविकता नहीं आ पाई है। ये शब्द प्रायः वही हैं जिनका प्रयोग सूर बिहारी देव, पद्माकर आदि ब्रजभाषा के कवियों ने किया है और जो एक तरह से ब्रजभाषा के बन चुके हैं। जैसे लायक (अ) गरीबनिवाज (फा) गाफिल (अ) गुमान (फा) राह (फा) फौज (अरबी) निहाल (फा) अजब (अ) गजब (अ) खुमारी (अ) हजार (फा) कुरबान (अ) निसान (फा) महबूब (अ) सामान (फा) तलफ्फन (अ) दिल (फा) हाजर (अ) हजूर (अ) महल (अ) आदि।

छंद

ब्रजराज की कविता में छंदों का वैविध्य नहीं है। इन्होंने बहुप्रचलित केवल चार पांच छन्दों का प्रयोग किया है। जैसे—घनाक्षरी छप्पय सवैया दोहा और सोरठा। इनके अलावा इन्होंने गेय पद लिखे हैं। उक्त छन्दों पर इनका अच्छा अधिकार था। इसलिए इनमें यतिभंग आदि दोष बहुत कम देखने में आते हैं। कहीं कहीं पाद पूर्ति के लिए सु और जु का प्रयोग अवश्य दिखाई देता है। पर ऐसा बहुत कम स्थानों पर हुआ है। प्रायः इनकी रचना में छंद विन्यास का स्थान स्थान पर अच्छा साम्य देखने में आता है।

अलंकार

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है ब्रजराज ने अपनी रचना में सीधी सादी भाषा का प्रयोग किया है। इसलिए इनकी कविता में अलंकारों की भरमार नहीं है। अलंकारों का प्रयोग इन्होंने किया अवश्य है लेकिन ऐसे ही स्थानों पर जहां भाव को भली भांति हृदयंगम कराने के लिए उनका प्रयोग अनिवार्य हो गया है। इनके द्वारा प्रयुक्त कुछ अलंकारों के उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं —

शब्दालंकार

(क) प्रानपती चित आनन्द सौं मनभावन के ग्रह आवन कीनो।
भामिनि भौनन बीच खरी मुख मौन गहै कछु बोल न दीनो ॥[३४]
—छेकानुप्रास

---

३४ ब्रजराज-काव्य माधुरी शृंगार माधुरी पद ५४

(ख) 'सज सँगार सु सूत म मालत कटक म अति फन करे रे ॥[३५]

—वृत्त्यनुप्रास

(ग) घुमड घुमड घटा बरसत बूँदें बूँदें
चमकि चमकि गाज चित्त को डरावे है ।[३६]

—पुनरुक्तिप्रकाश

अर्थालंकार

(क) खंजन म निठुरता सु मीन म चपलता मैं
कंज म विमान य कुरग जेम काग है ।[३७]

—मालोपमा

(ख) भौंहैं चाप चगाय कैं द्रिग जुग बान नगाय ।
तन मन मो मोहन मसा तर परि है पाय ॥[३८]

—रूपक

(ग) बरन तुमा सों तज यह बात विचार विगार ।
नार मारबे का मनो, है माम्न तरवार ॥[३९]

—उत्प्रेक्षा

(घ) ननन पै ग्द कज गर्नों प्रग आनन पै गनि चद बिगारी ।
मोहन म जुग चाप नहो मनकैं लखि नागन चित्त न धारी ॥
भाग पै बेमर ग्गेग बरो तिन पै चपना दुति कोटिन टारी ।
सुदर स्याम सुजान क ऊपर मन मनोहर मरनि वारी ॥[४०]

—प्रसाद

---

३५ ब्रजराज शंगार माधुरी शृंगार माधुरी पद ३०
३६ व शृंगार माधुरी पद ४
३७ वही शृंगार माधुरी पद १६
३८ वही शृंगार माधुरी पद १०
३९ वही शृंगार माधुरी पद १२
४० वही शृंगार माधुरी पद ८२

(ड) मोहन कर मुरली नहीं कछु इक बडी बलाय ।
या व्रज की सब व्रजबधू, सुनि धुनि अति अकुलाय ।।[४१]

—अपह्नुति

(च) खंजन से म्रग मीन से, राधे तेरे नैंन ।
लागत ही मो मन विषे प्रगट करत है मैन ।।[४२]

—चपलातिशयोक्ति

(छ) आरतवान अधीन ह्वै, ठाढे दुहु कर जोर ।
व्रजनिध प्रीतम सौं भली, क्यों बैठी मुख मोर ।।[४३]

—विशेषोक्ति

(ज) खेलन के मिस लै गई कुंजभवन में बाल ।
चकित भई नवला नई देखत ही नंदलाल ।।[४४]

—पर्यायोक्ति का दूसरा भेद

(झ) स्याम को रिझावैगो तो आपदा मिटावै वहि
जैसा बीज बावैगो सु तैसो फल पावैगो ।।[४५]

—लोकोक्ति

विषय-वस्तु

व्रजराज ने शांत और शृंगार रस की कविता लिखी है। इन दो रसों के अलावा अन्य किसी रस का सन्निवेश उसमें नहीं हो पाया है। विषय-वस्तु की दृष्टि से इनकी रचना को स्थूल रूप में तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—(१) विनय माधुरी (२) शृंगार माधुरी और (३) पद माधुरी।

---

४१ व्रजराज काव्य माधुरी शृंगार माधुरी पद्य २५
४२ वही शृंगार माधुरी पद्य १५
४३ वही शृंगार माधुरी पद्य २३
४४ वही शृंगार माधुरी पद्य ३१
४५ वही विनय माधुरी पद्य ३३

विनय माधुरी

इसमें भक्तिपरक कुल ४१ छन्द हैं। इन छन्दों में गणेश, शिव, अम्बिका, राम, कृष्ण, विष्णु आदि की स्तुति करने के साथ-साथ कवि ने संसार की निस्सारता का वर्णन किया है और अपने उद्धार की याचना की है। इन छन्दों में कुछ छन्द ऐसे भी हैं जिनमें संसार की नश्वरता बताते हुए कवि ने अपने मन को ईश्वर-चिंतन के लिये प्रेरित किया है। यथा—

कौन के मात पिता सुत बंधव कौन के दाम सुनन्दन नारी।
कौन का धाम धरा धन को यह कौन की भूमि कहा अधिकारी॥
कौन को राज तुरी गज सुन्दर अंत सबै रह जायगो सारी।
चेत अजों मन मूढ़ हरी भज क्यों तुव भूलि रह्यौ गिरधारी॥[४६]

इसमें भगवान के दशावतारों से सम्बन्ध रखनेवाली उदारता तथा भक्तवत्सलता की पौराणिक अंतर्कथाओं की झलक मिलती है। इसीलिये गज, गीध, ग्राह, अजामिल, द्रौपदी आदि के उद्धार विषयक वृत्तांतों की आवृत्ति हुई है—

गनिका को तार गीध ग्राह और गज कहीं
अजामिल आदि तारे त्यों ही चित धरोगे।
द्रौपदी की चीर फिर खैंचत हो राम लयो
पदम सुधारयो काज त्यों ही काज सरोगे॥
ध्रुव को बनाय निज रूप यों अभय कियो
हरयो प्रहलाद दुख ज्यों ही भय हरोगे।
करुना निधान महाराज जग सिरताज
मैं हा ब्रजराज त्यों ही मेरा सुधि करोगे॥[४७]

अपने आराध्य से प्रार्थना करते समय कवि ने उनकी जीवन-लीलाओं का भी वर्णन किया है—

---

४६ ब्रजराज ग्रन्थ माधुरी विनय माधुरी पद २१

४७ वही विनय माधुरी पद ३५

कौसल कुमार राम दसरथ तात हू को
वचन प्रमान कर साचौ करयो पन कौं।
चित्रकूट पचबटी जाय बिसराम करयो
दंड दयो स्याम तहा सबै असुरन का ॥
भूमि हा को भार सो उतार दयो सीतापति
अनि ही सु चैन भयो जबै सतजन का।
दीन के दयाल ही के बिरद निभाय जिन
मार दसकध लक दीनो भभीपन कौ[४८] ॥

विनय माधुरी म शात रस की प्रधानता है। इसम शात रस क प्राबल्य से किसी और रस के विकास का अवसर कवि का नही मिल सका है। क्योकि इसम कवि की आत्म निवेदन को भावना प्रबल है। यथा —

बूड रह्यो भवसागर मे अवलबन और कछु न खरो जू।
मोह जजाल बिकार सबै तन की तुम स्याम सु पीर हरो जू ॥
दीनदयाल दया करि कै अपनै ग्रद की सुधि ना बिसरो जू।
एक बिसास रही मन आस जु श्री ब्रजराज सहाय करोजू ॥[४९]

कवि ने इसम कि ही नये भावा की उद्भावना न कर परपरागत भाव ही अपनाये हैं। जैसे—

क्रीडा सुथल मसान भूत सहचर सग सोहत।
चिता भसम अग लेप कठ रुडमाल बिमोहत ॥
भूषन अहि उर लसत बसत भ्रुटी मधि पावक।
दिग अवर गल गरल सदा हर क्रोध सभावक ॥
सब असुभ अमगल रूप यह अगम निगम जग उच्चरत।
निज दास आस पूरन तिनहि सभु महा मगल करत ॥[५०]

उपरोक्त छद महिम्न स्तोत्र और द यपराधनक्षमापनस्तोत्र क निम्नलिखित श्लोका की छाया पर रचा गया है—

---

४८ ब्रजराज वाय माधुरी विनय माधुरी पद्य ११
४९ वही विनय माधुरी, पद्य २६
५० वही विनय माधुरी पद्य ५

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः
चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि॥

—महिम्न स्तोत्र

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम्॥

—देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र

शृंगार माधुरी

इसमें १०२ पद्य हैं। इसका मुख्य विषय शृंगार है। इसमें रूप गर्विता मुग्धा अभिसारिका प्रौढ़ा, खंडिता, अन्य संभोग दुःखिता उत्का, प्रोषितपतिका कलहान्तरिता मानवती आगतपतिका, परकीया, मध्याधीरा आदि नायिकाओं का वर्णन है। इसके अलावा इसमें श्रीकृष्णजन्मोत्सव उद्धव गोपी-संवाद वसंतागम वर्षा ऋतु, वंशी आदि के वर्णन संबंधी पद्य भी हैं। काव्य-रचना की दृष्टि से यह इस पुस्तक का सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ है। ब्रजराज की यह रचना हिन्दी के रीतिकालीन साहित्य से प्रभावित है। रीतिकालीन कवियों की तरह ब्रजराज ने भी इसमें नायक-नायिका के मिस प्राय कृष्ण और राधा का वर्णन किया है।

नायिकाओं का वर्णन करते समय ब्रजराज ने लक्षण-ग्रन्थ की छाप पर उपरोक्त नायिकाओं के केवल उदाहरण प्रस्तुत किये हैं लक्षण नहीं दिये। रूपगर्विता का जो लक्षण कवि दास ने अपनी रसमंजरी में दिया है ब्रजराज ने उसे ज्यों का त्यों ग्रहण किया है और उदाहरण प्रस्तुत किया है। यथा—

अपनें तन के रूप का, अति ही करत गुमान।
रूपगर्विता नायका, ताहि कहत कवि जान ॥[41]

एक समैं मनभावन छैल निहारत ही बस मोह भयो री।
चंदमुखी कहि कैं बतरावत चाह करैं कर जोर रह्यो री ॥
हौं सजनी अति ही सकुचावत प्रीतम को नित नेह नयो री।
रूप सुभाय सुजान अली त्रिय औरन की सुधि भूलि गयो री ॥[42]

खंडिता नायिका को लेकर बिहारी देव मतिराम पद्माकर आदि अनेक कवियों ने एक से एक बढ़कर उदाहरण दिये हैं। दर्पणकार ने इसका लक्षण इस प्रकार दिया है—

पार्श्वमेति प्रियो यस्या अन्यसंभोगचिह्नितः।
सा खण्डितेति कथिता धीरैरीर्ष्याकषायिता ॥

पद्माकर ने खंडिता नायिका पर उदाहरण देते हुए अन्य संभोग चिह्नित नायक की अस्त-व्यस्त वेशभूषा में उसके हृदय पर गुण हीन हार का होना बताया है—

बिन गुन माल गोपाल उर, क्यो पहिरी परभात।
चकित चित्त चुप ह्वै रही निरखि अनोखी बात ॥[43]

प्रतीत होता है कि इसी सूक्ष को लेकर ब्रजराज ने अपनी बात को इस प्रकार कहा है—

आये घनश्याम मेरे भौन अति प्यार ही सौ
भूषन विचित्र अंग अंग पैं कहा करैं।
बिन गुन हार हिय बीच ही विराज रह्यो
सीस फल ही को फन भाल पै भलो धरैं ॥

---

४१ ब्रजराज काव्य-माधुरी शृंगार माधुरी, पद्य ३४
४२ वही शृंगार माधुरी पद्य ३३
४३ पद्माकर पद्मामृत पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र द्वारा संपादित पृष्ठ ११६

कौन सी तिया की आस पूरी नंदलाल तुम
काहू को दुराबो बात टारी अब ना टरै।
हरे हरे बोल कै विलोकत हो सूधे चित
रैन की खुमारी नैन बैन मैं लखी परै।[२४]

इस प्रसंग में एक सवैया और उद्धृत करते हैं—

काऊ नहीं बरजै मतिराम रहो तित ही जित ही मन भायो।
काहे को सौहैं हजार करो तुम तो कब हूँ अपराध न ठायो।।
सोवन दीजै न दीजै हमैं दुख या ही कहा रसवाद बढ़ायो।
मान रहाई नहीं मनमोहन! मानिनी होय सो मानै मनायो।।[२५]

मतिराम का यह उदाहरण मध्या अधीरा नायिका पर है। ब्रजराज ने पूर्वार्पित इसी छन्दपदों में खण्डिता नायिका का निम्न उदाहरण प्रस्तुत किया है—

कोऊ न ही बरजै घनस्याम रहो तित ही जित पै रत माना।
काहे कों सौंह हजार करो मन रैन जगे सु रहे न घटानी।।
एती अनीत करो नित ही अपनैं नित पैं सु नहीं मत ठानी।
सांवर रावर नेह की रीत दुरावा कहा हम तो पहिचानी।।[२६]

कवि ने मानवती नायिका पर दस कवित्त सवैया लिखे हैं। इतने अधिक छन्द अन्य किसी नायिका पर दृष्टान्त नहीं लिखे। इनमें से कुछ अत्यन्त भावपूर्ण अत्यन्त सजीव और अपने स्थान में अप्रतिम हैं। उदाहरण—

मोहन सों कबहू सजनी अपने हिय में कछु मान न कीजै।
नैनन सों तन सो मन सों वह रूप निहारत ही नित रीजै।।

---

२४ ब्रजराज-काव्य माधुरी शृंगार माधुरी छंद ४०

२५ मतिराम ग्रंथावली रसराज पृ २८१

२६ ब्रजराज-काव्य माधुरी शृंगार माधुरी छं ४१

बेर हि बेर कहा मनभावन या जग म जस वाम मु गाजे।
पातम स्याम मुजान न्हि सो भुग भेट अलो अ ररा रम पीजै।।[५७]

मान्दपना सि साभित है गन मु जन नार मु माउ कहा रट।
पेर हि बेर नै नाम मरी मुनि प्रान न्हि म अनि लाग रही रट।।
मोहन की छ व रख गनी चर मान कह्यो अ छाड मवै रट।
बैन बजाय रिभावत छल मु ठाढ गुविंद कलिदसुना तट।।[५८]

विप्रलभ शृगार क अन्तगत प्रोषित पतिका पर रीतिकालीन कवियो क अनेक उदाहरण मिलत ह। इस विषय को लकर ब्रजराज ने भी अत्युत्कृष्ट कविता की है। यथा —

चन्दन चद अगार सा लागत चन नहीं कहुँ साझ सवेरे।
सज सगार सु सुन म सालत कटक से अति फन करेरे।।
भून गये सुधि प्रान पिया अब बीति गये दिन हू बहुतेरे।
जा दिन स्याम चले परदेस सु रस विदेस भयो सखि मेरे।।[५९]

आगतपतिका क वर्णन म शुभ सूचक शकुन मूल आधार रहे हैं —

नित कोकिल मौर सु सोर करैं पपिया अति पीव बनावत है।
घन घू मि रह्यो जित ही नित नी चपला चहुँधा चमकावत है।।
फुरकैं चख बाहु अरा सजना ब्रजराज सुरूप बतावत है।
मनभावन आवन ते जु अली यह सावन तीज सुहावत है।।[६०]

रीतिकालीन कवियो की परिपाटी क अनुसार ब्रजराज ने भी नख सिख वर्णन किया है। यद्यपि इनका यह वर्णन संक्षिप्त है तथापि वह बहुत ही स्वाभाविक एव चित्रोपम बन पडा है। एक उदाहरण लीजिये—

आनन पैं रद चद करा सर भोहन पैं बाहु चाप विडारी।
कसन का छवि पैं मनभावन भारन की अवली सब टारीं।।

---

५७ ब्रजराज-काव्य माधुरी शृगार माधुरी पद्य ५६
५८ वही शृगार माधुरी पद्य ६३
५९ वही शृगार माधुरी पद्य [illegible]
६० वही शृगार माधुरी पद्य ६१

भूषन सजत सौति लखै नव चाव हिय जु मरान न पागी।
सुंदर है अपमान मुना निय नैनन पै अरा मजन दागी॥[११]

पावस ऋतु वर्णन में कवि ने कुछ छन्द रचे हैं। इसमें प्रकृति का सुंदर वर्णन हुआ है उद्दीपन रूप में। जैसे —

बरत मोर अलि मोर घोर घन बरसन जित तित।
निरखत मन हरत मदन नहिं जात न न चित॥
जहं तहं बादर घेर घर दादुर सु डरावत।
सावन ललित वधु मग गात नव तन दरसावत॥
यह समय उग मजि चलहु तुम जहं स्याम सुनि काज नर।
सुख पाय चाय बरसाय रस जाय मिलहु ब्रजराज बर॥[१२]

कृष्ण की बांसुरी के सुमधुर स्वर में गजब आकर्षण था। इस विषय पर भिन्न भिन्न कवियों ने भिन्न भिन्न रूप में लिखा है। ब्रजराज ने भी गोपियों का बांसुरी के प्रति उनका डाह इस प्रकार दरसाया है —

मोहन के मुख लाग रही अति नम न भरी अति बधी निज गाज।
व्याकुल हूँ ब्रजबाल सबै बस धुनि गत सिगरे ग्रह काज॥
कानन धाव परी सुन जब तैं गुर लागन दा नर लाज।
बर लिय पुकार यह सुनि बेरन व मुरलिया मन गाजे।[१३]

कृष्ण के जीवन चरित में उद्धव गोपी-संवाद का विशेष महत्व रहा है। इस विषय पर सूर और अन्य कवियों ने बहुत कुछ लिखा है। भक्ति इसका वर्णन विप्रलंभ शृंगार के अन्तर्गत हुआ है। ब्रजराज ने भी इसका सुंदर वर्णन किया है। उद्धव के ब्रज में पहुँचने पर गोपियों की विरहावस्था दर्शनीय है—

उद्धव आय गये ब्रज मैं सुनि गोपिन के नन मैं सुख छायो।
आनद सो उमगी सगरी पति प्रेम लगी दधि दान रचायो॥

---

११ ब्रजराज रचना माधुरी, शृंगार माधुरी पद ७
१२ वही शृंगार माधुरी पद ४
१३ वही शृंगार माधुरी पद ७

पूछति हैं मन मोहन की सुधि बोलत हा द्रिग नीर चलायो।
पेखि सनेह सखा हरि के घनस्याम वियोग कछू न सुनायो ॥[५४]

उद्धव गोपियो को ज्ञानोपदेश दने लगे। पर तु उनके कथन का एक एक अक्षर विरहनियो के लिये वज्र का आघात बन गया। कितनी मार्मिक उक्ति है—

उद्धव तुम आये इहा करत जोग की बात।
बरन बरन ऐसे लगैं करत वज्र की घात ॥[५५]

पद माधुरी

इसमे विविध राग रागनियो व तालो म गाये जाने वाले १४७ पद हैं। इन पदा को जिन रागा म बाधा गया है, उनके नाम ये हैं— अडाणा आसावरी कल्याण का हडा काफी कालिगडा खम्माच ख्याल गरबो गौड मल्हार गोडी जगना जजवन्ती झोझोटो, ठुमरी दवगधार धनाश्री नाणको परज पूरवो बस त बिलावल भरवी मल्हार मारू ललित लूरयो सारग विहग विहग ठुमरो विहाग, पट, सारग सोरठ सोरठ खम्मायचा सारठ मल्हार हिंडोरा इत्यादि।

इन पदा म अधिकाश पद भक्ति और शृ गार विषयक हैं। इनमें प्राय उन्ही भावो की आवृत्ति हुई है जा विनय माधुरी व शृ गार माधुरी मे व्यक्त किए गय हैं। अत विषय वस्तु की दृष्टि से इनम कोई विशेष बात नही है। कि तु गेय पदो म जो सरसता तल्ल नता एव स्वर सगति होनी चाहिए वह इनम पूरा तरह पाई जाती है। उदाहरण —

राग मारु

थागे आळू आवे छै ह राध प्यारी ॥टेर॥
जित जावे तिन तरो सुमरण कैसो मातनी डारो।

---

५४ ब्रजराज काव्य माधुरी शृ गार माधुरी पद ७

५५ वही शृ गार माधुरी पद ११

कबहू आय मिलावे जदुपत चित हित सों मह धारी ।
श्री ब्रजराज बसी छब उर में वा छब पै बलिहारी ।।[११]

राजस्थान में मीराबाई, महाराजा जसवंतसिंह, बिहारी, वृन्द, कुलपति मिश्र, सोमनाथ, नागरीदास, सूदन, पद्माकर आदि अनेक ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने ब्रजभाषा-साहित्य के निर्माण में अपूर्व योग-दान दिया है। ब्रजराज भी इसी कवि-शृंखला की एक कड़ी हैं। यद्यपि इनकी रचना परिमाण में बहुत अधिक नहीं है पर जितनी भी है वह साहित्य की दृष्टि से उच्चकोटि की और हिन्दी साहित्य के गौरव को बढ़ानेवाली है।

महाराणा जवानसिंह की कविताओं का यह संग्रह मैंने निम्नलिखित चार हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर तैयार किया है। इनका संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जाता है —

A. यह प्रति उदयपुर के सरस्वती भण्डार में सुरक्षित है। यह इस पुस्तकालय के हस्तलिखित ग्रन्थों के मुद्रित सूचीपत्र में संख्या ३६६ पर है। इसमें ११.८"×८.८" आकार के २८ पत्र हैं। यह प्रति सफेद रंग के मोटे कागज पर लिखी गई है। इसके प्रत्येक पृष्ठ पर २१-२३ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में ११-२६ तक अक्षर हैं। अक्षर बड़े-बड़े और सुवाच्य हैं। इसके लिखने में प्रायः काली स्याही से काम लिया गया है किन्तु बीच में कहीं-कहीं लाल स्याही का उपयोग भी हुआ है। प्रति पुस्तकाकार एवं सजिल्द है। जिल्द कपड़े की है। इसके अन्त में पुष्पिका-अंश नहीं है। किन्तु यह महाराणा जवानसिंह के समय की ही लिखी हुई है। महाराणा कविताएँ लिख-लिखकर किशनजी आढ़ा को देते थे और वे उनको इसमें अंकित करते थे। इस बात का स्पष्ट उल्लेख इस प्रति के पृष्ठ ३३ पर हुआ है —

अथ संवत १८८३ रा वैसाख सुद ७ गुरे रे दिन महाराज कवार श्री १०८ श्री श्री जवानसिंघजी आग्या किसना आढा सू करावी जा समाहस्त पोथी मा प्रथम पत्र कविंदिया पन्ना नें कवित्त-दूहा बणाया रा पछे प्रारम्भ पोथी सो मास १ दा ३ तो कविंदिया हीज पछे सहेत पन्ना जे जेठ सुद ६ सोमे रा दिन सू कवित्त-दूहा बणाया जाता जो इन सू श्री बणाया

---

११ ब्रजराज का ब्रजभाषा काव्य-माधुरी पृ० ११४

सो रसना नें हुकम हुवो के किसन जी यें दूहा कवित्त म्हारा बणाया लिप लाज्यो श्री हजूर सू पोथी त्यार कराय बगसी जी मैं श्री हजूर का बणाया दू।-कवित्त सवैया छपे आद ख्याल और सरवत्र छंद सो लिपग्या ।। प्रथम जेठ सुद ९ सोम रे दिन महाराज कंवार श्री जवानसिंघ जी दूहो कवित्त बणाया सो लिपा छा ।।

इसमें कुल २१९ पद्य हैं। इनमें ५१ कवित्त, ४२ सवैये २ छप्पय ५० दोहे और ६६ पद हैं।

B यह प्रति सरस्वती भंडार की है। प्रकाशित सूचीपत्र में संख्या ८१६ पर। साइज १०६'×७१ ।पत्र संख्या ५। इस पर लाल कपड़े की जिल्द है। प्रत्येक पृष्ठ पर पंक्ति संख्या १५ १७ और प्रत्येक पंक्ति में अक्षर ६ १८। लिपि सुंदर। अनेक स्थानों पर कागज टूटा हुआ है जिसको गोंद से चिपकाया गया है। प्रति में लिपिकाल का उल्लेख नहीं है। परन्तु कागज स्याही लिखावट आदि से यह भी महाराणा जवानसिंह जी के समय में ही लिखा हुई प्रतीत होती है। इसमें २८८ पद्य हैं—५० कवित्त ४० सवैये ४९ दोहे २ छप्पय और १४५ पद।

C प्रति सरस्वती भण्डार की है, सूचीपत्र में संख्या ८५६ पर। साइज १३६'×८६ ।पत्र संख्या ५७। प्रत्येक पृष्ठ पर पंक्ति संख्या १७ और प्रत्येक पंक्ति में अक्षर संख्या ११-१६। इसमें लिखावट कागज के एक ही तरफ है। लिपि बहुत सुंदर है। यह प्रति सम्वत् १८९८ में लिपिबद्ध हुई थी। इसके लेखक का नाम सदाशिव है। इसकी पुष्पिका यह है —

'श्रीरस्तु। सम्वत् १८९८ वर्षे द्वितीय चैत वदि सप्तम्यां समाप्तो कृतमिदं पुस्तकम् सदाशिवेन देवदुर्गवासिना श्रीमन् महाराजाधिराज महाराणाजी जवानसिंह जी रा बणाया।"

इसमें कुल मिलाकर २८६ पद्य हैं। इनमें ५ कवित्त ४० सवैये, ४९ दोहे २ छप्पय और १४८ पद हैं।

D यह प्रति साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर, के पुस्तकालय में सुरक्षित है। प्रति सजिल्द और पुस्तकाकार है। जिल्द लाल कपड़े की है। इसकी साइज ७२'×५७ है। इसका पत्र संख्या ४७ है।

प्रत्येक पत्र में १४-१८ पंक्तियाँ और प्रत्येक पंक्ति में १४-२० अक्षर हैं। अक्षर सुपाठ्य हैं। जिल्द टूटी हुई पर प्रति अच्छी अवस्था में है। इसके अन्त में पुष्पिका है जो राजस्थानी में लिखी हुई है —

'इतिश्री महाराजाधिराज महाराणाजी श्री १०८ श्री जवानसिंह जी कृत व्रजपद बनाया ॥ कवित्त सवैया दूहा राग रागण्या सम्पूर्णम् ॥ लिखितम् गाम पुर मध्य सम्वत् १९२७ ॥ श्रावण शुक्ल पक्ष तिथौ १४ बुधवासरे व्यास राज ठाकुर श्री कुमारनाथजी की राजस्थान ग्राम मालाल ॥ श्रीरस्तु कल्याणम् समापनम् ॥१॥

इस प्रति में कुल ८८ छन्द हैं। इनमें ४० कवित्त, ७ सवैये, ८८ दोहे और ४ छप्पय और १२८ पद हैं।

अन्त में मैं राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति पं० श्री जनार्दनराय नागर तथा साहित्य संस्थान के अध्यक्ष पं० श्री विश्वनाथ व्यास के प्रति आभार प्रदर्शित करना अपना परम कर्त्तव्य समझता हूँ जिनके स्नेह सौजन्य से साहित्य की यह पुनीत सेवा करने का मुझे सुअवसर मिला है।

दि० गंगा दशमी सं० २०२१
उदयपुर राजस्थान

—महेन्द्र भानावत

विनय-माधुरी

ब्रजराज-काव्य-माधुरी

विनय-माधुरी

श्री गणेश–स्तुति

कवित्त

बिघनहरन अति आनदकरन नित
सिद्धि के सदन सब भाँति सुखागार।
एक है रदन गजबदन अनूप रूप
बंदि हौं सहाय अब संकट निवारौ॥
परमीयरन तुम बर औ अभय दैन
मन के मनोरथ के काज तुम सारौ।
दीन के दयाल रछिपाल सदा जीवन के
गवरि सुभाव ही के निज निहारौ॥१॥

1X D बिघन-हरन। 1X [illegible]-करन। C सुखारा। A1C है। C बर-बन्न।
A सिराय। ACD निवारौ। AC सारौ। A [illegible]। BCD निज।
AC निहारौ।

दोहा

बिघनहरन सब सुखकरन, लंबोदर गन ईस।
इंद्रादिक सब अमर ही, चरन धरत नित सीस ॥२॥

श्री एकलिंग–स्तुति

दोहा

एकलिंग सिव सेव भजि भूतनाथ सुभ भेस।
हरि विरंचि निसिदिन रटत, पार न पावत सेस ॥३॥

कवित्त

एकलिंगनाथ भूतनाथ कृपानाथ तुम
करो सुभकाज लाज राखो मेरे तन की।
त्रिपुर जराय सुरपाल की सहाय करी
मेटि दई ताप हर सबै असुरन की॥
विधि व्रजराज सेस सारदा गनेस ते ते
रट दिनरात बात पाव नहीं मन की।
करुनानिधान मेरी करनी न धारो अब
विरद पिछान आस पूरो निज जन की ॥४॥

---

२ BCD विघन-हरन। A ईंद्रादिक। B इन्द्रादिक। D ईन्द्रादिक।

३ A ऐकल्यग। BCD निस दिन।

४ ABC क्रपानाथ। AC करा। AC राखा। A सिहाय। BCD सब। BCD विधि। BCD वृजराज। D दिन राति। BCD बात। BCD पावे। BCD नहीं।

छप्पय

जटा मुकुट मसान भूत सहचर संग सोहत ।
चिता भसम अंग लेप कंठ रुंडमाल विमोहत ।।
भूषन अहि उर लसत बसत भ्रकुटी मधि पावक ।
दिग अंबर गर गरल सदा हर शोक सभावक ।।
सब अशुभ अमंगल रूप यह अगम निगम जग उच्चरत ।
निज दास आन पूरन तिनहि प्रभु महा मंगल करत ।।५।।

देवी अंबाजी की स्तुति

दोहा

सबदटारन जयकरन, जय जननी अंबाय ।
सरणागत के तरन को, तेरे परिहों पाय ।।६।।

---

५ [illegible] । D मसान । D [illegible] । D विमोहन । CD [illegible] । D भ्रकुटी । D [illegible] । A [illegible] । D [illegible] । A [illegible] ।

६ C [illegible] । C [illegible] । D [illegible] ।

कवित्त

पूरनकरन सब मन के मनोरथ को
चूरनकरन महिपासुर को माथ जू ।
चंद सो बदन नैन सोभित विसाल नित
बंदत सकल जन पूजत है पाँव जू ॥
विरद विचारि चित्त कीजिये दयाल दया
लीजिये लगाय मात सेवक सुभाव जू ।
धरन त्रिसूल कर मरन त्रिलोक सदा
सकटहरन जयकरन अवाव जू ॥७॥

श्री रामचन्द्रजी के चरणारविंद का वर्णन

सतन करत नितप्रति सुख-सपति सु
हरत भवन दुख जम मित्र पाथ के ।
अमर सुरन को बचाय लय रघुवीर
असुर बिगार जयकारी दसमाथ के ॥
जग में सुजस लीनो भभीपन लंक दीनो
दीनों पहुमी प या उदार असे हाथ के ।
परम धरम अंग मगलकरन अति
सकटहरन द्वै चरन रघुनाथ के ॥८॥

---

७ A मनोरथ । C को । C करत । C सो । D नन । C सोभित । C बद नित । D वन्न । BC है । D विरद विचार । AB D चित । AB कीजिये । D कीजिय । C ल्याय । A लीजिये । CD त्रिसूल । A त्रिलोक ।

८ D सतन । A सपत । ABC असर । B सुर । C को । D बचाय । BC रघुवीर । BCD बिगार । BCD वकारी । C जग म । AB लाना । C लीना । C दीनों । B पहुमी । C या । D यो । D धरम ।

श्री रामचन्द्र की स्तुति

सवैया

सुंदर स्याम सुरूप मनोहर अम्रत से म्रदु बोलत बायक।
दीनदयाल कहै सब ही तिनके पद को निरभावन लायक॥
कोसल राजकुमार सुजान अनाथन के नित है जु सहायक।
रच्छस घायक पायक कीरत है जगजीवन जानुकि नायक॥९॥

कवित्त

दीन के दयाल काल असुर अनेक हू के
    मनन के तन हू की पीर के हरन हौं।
गज गीध ग्राह और केते हू अनाथन की
    गनिका की नार ही के तारन तरन हौं॥
नाम मान ज्ञान राम सेवक अनेक ही के
    सीता हू सखी के सदा आनंदकरन हौं।
धरा रे रसन जुग चरन पै वारौं मन
    सकटहरन राम रावरी सरन हौं॥१०॥

---

९ AB सु दर। D स्याम। D सरूप। AD मनोहर। C मृदु। LCD मृदु। A बोलत। D बायक। A निरभावन। CD कहै। D सब। A कौसिल। A राजकुमार। सुजान। C सहायक। C रच्छस। D है। AD जानुकी। B जानकि।

१० A दयाल। D काल काटन। D हू। ABD की। D हो। C हौं। L हौं। C हो। B हो। C हौं। A पद। A राम। हौं। C हौं।

कौसल कुमार राम दसरथ तात हू को
वचन प्रमान कर साचौ कर्‌यौ पन कौ।
चित्रकूट पचवटी जाय बिसराम कर्‌यौ
दड दयो स्याम तहा सबै असुरन कौ॥
भूमि ही को भार सो उतार दयौ सीतापति
अति ही सुचैन भयौ जबै सतजन कौ।
दीन के दयाल ही के विरद निभाये जिन
मार दसकध लक दीनी भभीषन कौ॥११॥

भूपन के भूप महिमडल के मडन सु
खडनकरन नत सब ही अरन के।
दीन के दयाल खयकाल दससीस ही के
पालन अमर अरु च्यार ही बरन के॥
कासलकुमार भानबस रघुबीर धीर
गोतम की नारि आद तारन तरन के।
सकटहरन मन आनदकरन नित
सरन सदा हा राम गवरे चरन के॥१२॥

---

११ A राम। AB कौ। D के। BCD वचन। A प्रमान। C साचा। C का। BCD पचवटी। D माय। A बिसराम। D करयो। A ग्यौ। C दिया। C याम। D असुरन। C का। ABD कौ। ABD सो। A ऊतार। A दयौ। A अत। D सुचन। C का। A दयाल। BCD विरद। D निभाय। C का।

१२ D स। D तन। BC वरन। A कोसिल। B कौसिल। BC रघुवीर। D नारि। C हा। A राम। A के।

श्री परमेश्वर की स्तुति

कवित्त

केसव नारायन गुरु व्रज कृपानिधि
मोहन मुरारी चक्रधारी सुधि लीजिय।
द्रोपदी की राखी लाज गज को उबार दियो
त्योंहीं मेरो दीनानाथ हाथ गहि लीजिय॥
ध्रुव को बताय ध्यान ध्यान मैं लगाय लियो
ऐसी बात मेरी अबै जग मैं पतीजिय।
करुनानिधान स्याम सुनिय अनाथबंधु
बिरद पिछान मोको भक्तिपद दीजिय॥१३॥

दोहा

बिपति परे दुख को हरे, धरे न चित में धीर।
मोहन बिनु या जगत में, मेटि सके नहिं पीर॥१४॥

---

१३ A करुनानिध। BC कृपानिध। C सिधि। D कार्मीर्जे। AIC की। A उबार। A त्यो। A त्योंगी। D ज्यों। AIC मेरो। BCD दीनानाथ। D लागाय। A मैं। D पतीजिये। D स्याम। A सुनियें। D सुनिदे। BC बिरद। D पिछान। BCD मोको। D दीजिये।

१४ BCD बिपति। D दुखा। AIC धरे। CD मे। A मोहन। A बिन। BC बिनु। A में। CD मैं। BC सके। D म।

श्री परमेश्वर सौं प्रहलाद वाक्य

कवित्त

मेर जिमवास घनस्याम ही को सुनौ तुम
कहे प्रहलाद वा ही काल त बचावगो।
केतिक अविद्या ब्रथा गालत हो वेर वेर
हरि नाम लेत मौको काल यो छुरावगो॥
मात के उदर वीच नारद सुनायौ ग्यान
ध्यान म ल्गायो माहू नक न भुलावगा।
जव मन चाव यह प्रभु गुन गावै नित
ताप कौं मिटाव निज दरस दिखावगो॥१५॥

शान्त रस को कवि-वाक्य मन प्रति

सवैया

रे मन मूढ अजान अग्यान सुजान सियावर को भजि ल र।
चेत अजा हित की सुनिक अपने मन की कबहू मत ग र॥
ह सुग्न म सव वधव यात विगार भय यन म रस नै रे।
नेगहिवग विकार निवार सु मोहन के चरनो चित द र॥१६॥

१५ CD मर। BCD घनस्याम। ABD कौ। A कहै। ABD वो हो। BCD वृथा। A कौतक। AD वर वर। D नाम। BCD मारौं। BCD माता। A उन्दर। C सुनायौ। C लगायौ। BCD माहू। D सोह। C भुलावगो। A गावैं। D निति। A कौ। C को। C ताप को। ABC मिगावैं।

१६ A मूढ। A अग्यान अज न।। CD सियावर। BC कौ। AB भज न। C भज न। D अजो। C मन गे। BCD है। BCD विगार। D भय। C म। A रस नैं। C रस न। BC वर्गहिवग। D नगहिवेग। BC विकार। D कौ। A चरनो। C चरनो। C चित द।

दोहा

दीन सहायक बिरद है मोहन श्रीब्रजराज ।
यह बिचार करुना करौ, स्याम गरीबनिवाज ॥१७॥

मैं हौं पापी मूढ़मत कपटी कुटिल कपूत ।
ब्रजपति के सरन परयौ नाहिं डरौं जमदूत ॥१८॥

रे मन सुनि नित बिषय में लपटि रह्यौ दिन-रात ।
अजहूँ चेत अग्यान तुव काल बिनास्यौ गात ॥१९॥

सुख भावी नाहीं मुकति पावौ निज पुर बास ।
ताते मत चित बिषय में लावौ हरि रति आस ॥२०॥

सवैया

तात के मात पिता सुत बंधव कौन के दाम सुबन्धन नारी ।
कौन को धाम करावन को यह गात को भूमि बड़ी अधिकारी ॥
कौन को राज तुरंग गज सुंदर भूत सबै रह जायगो भारी ।
चेत अजौं मन मूढ़ हरी भज क्यौं तुव भूलि रह्यौ गिरधारी ॥२१॥

---

१७ BD बिरद । A मोहन । BD बृजराज । BCD बिचार । BCD करो । D स्याम ।
१८ C मैं । D मैं । D हौं । A मूढ़मत । BD ब्रजपति । AD के । AB परयो । AC नाहिं । D जमदूत ।
१९ A मन । BCD बिषय । C मैं । D मैं । A लिपटि । BC रहे । AC रह्यो । BD निशदिन । C अजहूँ । D अजहूँ । D अग्यान । C बिनास्यो ।
२० AC भावो । A के । C पावो । AC ताते । AC लावो । A रति । C मन । CD [illegible] ।
२१ C के । AB कौन । D कै । C धाम । AB कौन । D के । C धाम । AB कौन । A कौन । AB करावन । ABD को । ABD कौन । B [illegible] । CD धाम । A को । B को । A सब । C सब । BC रहै । D रहै । A सुंदर । D सुंदर ।

कौन दिसा भूम कहा जाय कौन ठौर पर
करै कहा काज अवल्ब नाहि गिन को।
जायक मसान हू म जार छार ढरी कर
भूल जाय बात यो मुभाव ग्रमो मन को ॥
केते हू उपाय दवा तौहू न इलाज चल
मेटि कौन सकै यह काल ही के दिन को।
धन कौ न जोर अरु जन कौ न जार लग
पल कौ भरोसौ नाहि काचे यह तन को ॥२२॥

मास नव मात ही के उदर मे पायौ दुख
गायौ तहा स्याम विथा मेटी सब त्रास की।
जोबन को पाय अति छाय रह्यो अम ही म
गाफिल ह्वै फेर चाल चल्यौ पाप रास की ॥
तन को गुमान कर छिन का भरासा नाहिं
चेत मूढवादी यह मूरति ह नास की।
सास की निरास भय स्याम बिनु और नाहि
ग्ररे मन तू तो कौल भूल्या ग्रभवास की ॥२३॥

---

२२ यह कवित्त BCD प्रति म नहा है।

२३ AB उदर। C मै। C पाया। A गाय्यौ। C गायो। BCD विथा। A जोबन। AB कौं। D की। C रह्यो। C अस। A हू। C मे। D म। ABC ह्वै। ABD कौ। A गुमान। ABD की। C भरोसो। BCD मूरखानी। A है। BC बिनु। ALC नाहि। AB तू। AB ता। C कोल। C भूल्या।

बालकपन में नित खेल में बितायें दिन
जोबन को पाय विषै मारग घटायो ना।
वृद्ध ह्वै भये तें जग आयक अन्यत भई
ताहू ब्रजराज हू को ध्यान उर लायो ना॥
आन के अचानक ही काल तन घेर्यो जब
तब तो उपाय कछु चित्त पै दिखायो ना।
अरे मुनि डूब रह्यो पाप के समुद्र ही में
रिव मन तोको मनमोहन को गायो ना॥२४॥

करुनानिधान तुम करुना करहु मोप
और हू न दीसै कोऊ रावरे समान नाथ।
पातिग अपार मोम पार हू न आवै ऐसे
यतनी अविद्या भरी तन में उतिम गाय॥
जगत जु ऐसी मोहि दीसत न दीनवधु
जासो मर काज रहि जाय लाज मित्र पाथ।
निरद पिछान स्याम करियै उपाय अब
मेटि दुख-जाल प्रभु मेरे गहो दाऊ हाथ॥२५॥

---

२४ C पनैं। C म। C म। AD जोवन। ABD कौं। C घटायो। BCD वृद्ध। D मै। C व। AB तो। BCD वृजराज। AB को। D कौं। A उरा। ABC आंन। CD घेरयो। ABC मी। A उपाय। ACD चित। C दिखायो। BCD देरे। A मन। C म। D जासी। C तोको। AD कौं।

२५ D पै। CD पार। C ऐसें। ADC समान। D पतित। A मो। C अमें। AD अमें। C अमें। A उतिम। C जगत। BCD दीनबंधु। CD मेरे। BCD विरद। C सब करिये उपाय। A करियें। D करिदे। A उपाय। C दुखी। A मोऊ।

गज गीध ग्राह कीर गातम की नार अरु
केते जीव तारे स्याम त्योंही अब तारौगे ।
सज (द ?) न कसाई नामदेव औ कबीर कहो
नरसी को सारयो काज त्योंही काज सारोगे ॥
रावरो कहाय और कौन प पुकार करो
ऐ हो व्रजराज तुम बिरद बिचारोगे ।
सकट को टारो प्रतपाल क्या न पारो नाथ
मेरे अपराध ही का चित्त प न धारोगे ॥२६॥

सवैया

सकट मेट करा नदलाल जु लाज रखो व्रजराज बिहारी ।
बेर अनेक अनाथन की सुधि वगहि ल चित पीर बिचारी ॥
द्रौपदि की सुनि क छिन में तुम राखि लई सिर खचत सारी ।
तो बिनु कौन करै घनस्याम सु या जग म प्रतिपाल हमारी ॥२७॥

---

२६ C गातम । CD तार । A साम । A त्यो । A अब । A मा । C कहो । ABD को । C सारयो । AD त्यो । AC सारोगे । D रावरो । ACD मोर । BCD कौन । A प । BD अहो । B बृजराज । D ब्रजराज । B बिरद । B बिचारोगे । B बिचारोगै । A को । BD को । A क्यो । ABC पारो । A को । BD को । ABD चित । C चित्त ही पै । AC प । ACD धारोगे ।

२७ C करो । BD बृजराज । BD बिहारी । BD वर । BCD वगहि । A नै । BD बिचारी । D नारि । C रिस । A कै । D राख । CD खचत । A बिनु । BC बिनु । AB कौन । AD करै । C मे ।

कवित्त

आनद के कद ब्रजचद ब्रजपाल तुम
नद हू के लाल काल-डर ते बचावोगे ।
मै तो हों मुरारी पापी पाप ही मे पूर भर्यो
भ्रम गुन औगुन को चित्त पै न लावोगे ॥
काम अरु क्रोध लोभ मोह ते लपटि रह्यो
बह्यो अब जात तन मोच को मिटावोगे ।
दीन के प्यारे नाथ दीन की पुकार सुनि
हो हों ब्रजराज पद-पकज लगावोगे ॥२८॥

श्री कृष्ण सों हरि की प्रार्थना

सवैया

बूड रह्यो भवसागर मे अवलबन और कछू न सरो जू ।
मोह जजाल त्रिताप सबै तन को तुम स्याम सु पीर हरो जू ॥
दीनदयाल स्या मन्त्रि अपने ब्रद की सुधि ना बिसरो जू ।
एक निसासि रहों मन आस जु श्रीब्रजराज सहाय करो जू ॥२९॥

---

२८ [illegible] वृजराज । [illegible] दबायाव । [illegible] जो । [illegible] A मैं । C [illegible] । [illegible] को । [illegible] चित । [illegible] दै । [illegible] लावोगे । [illegible] मै गुन की चित प न लावोगे । [illegible] काम । [illegible] [illegible] की । A [illegible] मिटाव [illegible] हो । [illegible] [illegible] वृजराज । [illegible]

२९ A डूब । [illegible] । [illegible] सरो । [illegible] जजाल । [illegible] त्रिताप । [illegible] स्याम । [illegible] [illegible] । [illegible] करो । [illegible] [illegible] सुध । D बिसरो । [illegible] निसास । [illegible] वृजराज । [illegible] वृजराज ।

श्री परमेश्वरजी सौं कवि की विनय

कवित्त

मूढ मतवादी कूर कपटी कुचाल भरयौ
करयौ नाहिं दान नित लोभ ही के काम कौ।
ग्यान को न लेस सतसंग को न उपदेस
रसना न लह्यौ सुपनै हू नाम राम का॥
करुनानिधान मेरी करनी न धारौ कछु
बिरद बिचारौ है भरौसो घनस्याम कौ।
दाम को न जोर धन धाम हू अकाम सब
मेरे विसवास एक रावरे ही नाम कौ॥३०॥

दोहा

करुनानिध करुना करौ करना सुनि ब्रजराज।
बिरद निभावन पतित कौ, वाह गह की लाज॥३१॥

---

३० C भरया। C करमा। BC नाहि। A क। AIC काम। C का। D कौं। BD कौ। D समतसग। ID कौ। A उपरम। A नयो। B लह्यौ। AB नाम। AD राम। C कौ। AD निधान। AC धारा। BCD बिरद। BD बिचारौ। C विचारा। A हैं। AB भरौसौ। C भरोसा। B कौ। ABD दाम। ABD कौ। AB जोर। ABD धाम। AD अकाम। ABD मेर। BD बिसवास। ABD नाम। D नाव। C कौ।

३१ AC करा। ID बृजराज। C बृजराज। B बिरद।

मन को शिक्षा

कवित्त

धम्म को छाडि अपकम्म हू मे चालै नित
    सीस प करम दाच नलो ना दिखावगो ।
इय ही की चाह मेट स्वर्ग पै चाह धरै
    एसो करै काम सो ता काहू को न भावैगो ॥
स्याम ही सो द्रोह कर मोह करै औरन सों
    हरि को बिसार फेर पीछै पछितावैगा ।
मान के सुनन पान कीयै हू न धाप्यो ता तो
    तान क सुनन ही सों फर रहा पावैगा ॥२२॥

करै नित पाप ही तो पाप ही त डूबै तन
    धम ही की राह चलै धन ही बढ़ावगो ।
स्वारथ को मार परमारथ पै चल्यो नाहि
    जग ही म आये योही जनम बितावैगा ॥
नरदेह पाय अवमान जो न चूकै तो ना
    कभू रामधाम ही कै पद म न आवैगो ।
स्याम तो रिझावगो तो आपन मिटाव कहि
    जमा बीज बोवैगा सु तमो फल पावगो ॥२३॥

---

२२ A[illegible] क । D [illegible] । C [illegible] । C [illegible] । C [illegible] । A [illegible] । D [illegible] ।
C [illegible] । A करै । BC [illegible] । D [illegible] । C [illegible] । A काम । AB को । AB हो ।
D [illegible] । AB [illegible] । D [illegible] । C [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । A [illegible] ।
A [illegible] । C [illegible] । D [illegible] । BCD बिसारै । ABD [illegible] । A पछितावैगा ।
C [illegible] । AD [illegible] । BCD [illegible] । AB [illegible] । C [illegible] । C [illegible] ।
ABD हो । ABD [illegible] । AB [illegible] । C [illegible] ।
२३ A करै । A [illegible] । AB [illegible] । D [illegible] । ABD [illegible] । ABD [illegible] ।

दाहा

विघन टर सब दुख हर, कर सकल सुभ काज ।
रे मन मूढ अग्यान तुव, क्या न भजै व्रजराज ।।३४।।

श्री परमेश्वर के बिरद वर्णन

कवित्त

गोतम की नार ग्रीध ग्राह कीर गज कहा
अजामेल आदि तार त्योंही चित्त धरौग ।
द्रोपदी कौ चीर सिर खचत ही राखलयौ
पडव सुधारयौ काज त्याही काज सरौगे ।।
ध्रुव का बताय निज रूप या अभय किया
हर्यौ प्रहलाद दुख ज्यौही अघ हराग ।
करुना जिहाज महाराज जग सिरनाज
ग्रैहो व्रजराज त्याही मेरी सुधि करौगे ।।३५।।

ABD को । CD चल्यो । BCD नाही । D म । A मायँ । B माय ।
A थ्योहा । BD थाहा । AB बितावगा । D बितावगा । A पाय । BD जो ।
ABD तो । ABD तो । ABD क । ABD आवगो । D स्याम । AB कों ।
D यो । AB रिझावँगो । D रिजावगा । ABD तो । D जैसो । AB बावगो ।
D बावगा । AB पावगो ।

३४ BCD बिघन । ABC टरैं । ABC करैं । D अग्यान । C तव । D क्यो ।
ABC भज । A वृजराज । C वृजराज । D व्रजराज ।

३५ AB तार । ABC त्योहा । AC चित । A धरोग । CD धरोगे AB गोपता ।
D गोपता । D खैंचित । C खचत । A राखलयो । C त्या । । A सरोगै ।
C सरागे । AB को । D यो । । A हरोग । CD हरागे । A माहाराज ।
BC वृजराज । D व्रजराज । A त्यों । ।

दोहा

म अनक औगुन भरया तुम गुन की हो म्वान।
अपनी दिस चित क्या धरो, अपनो बिरद पिछान ॥३६॥

विश्राम को अंग

सवैया

या ब्रजचंद बिहार हरी नरसिंघ जु देव सु रूप उजारो।
गोविंद गोकुलनाथ दमोदर बीठल वामन मोहन प्यारो॥
तारन तारन के सब नाम अनाथन को दुख मेटनहारो।
श्रीपति श्रीनिधि स्याम सुजान मुरारि मनोहर नंददुलारो॥३७॥

दोहा

नार मान लिम ग्विम हू माल करी जिन गाय।
राम नाम जीवन मरन, हरी करे सो होय॥३८॥

घट घट नरि ततव हू, मदि मव नहिं वाय।
जा ग्रिरि ग्गिरी ग्गिनाट प मा मिथ्या नहिं होय॥३९॥

---

३६ C म। C [illegible]। C भरया। C हो। C धरा। C [illegible]। AB अपनो। B बिरद।

३७ A [illegible]। B बृजचंद। C बृजचंद। D बृजचंद। A बिहार। D हरि। A [illegible]। CD नरसिंह। A उजारो। C उजारो। A गोविंद। C बिरद। D बिरद। A वामन। C वामन। AC प्यारो। A तारन। AB D सब। CD नाम। AB D [illegible]। AC मेटनहारो। A [illegible]। A [illegible]। D स्याम। D [illegible]। AC दुलारो।

३८ A [illegible]। AB D करी। C [illegible]। D करे। ABD सो। A [illegible]।

३९ A घट। B हू। D [illegible]। A [illegible]। BC [illegible]। D [illegible]। A सो। D [illegible]। A [illegible]। B [illegible]।

श्रीकृष्ण-महिमा

कवित्त

मूढ मतवादी अत कपटी कुचाल चल्यो
  करयो नित पाप पाप ही के नित काम को ।
काम क्रोध लोभ मोह तन हू में व्याप रह्यो
  या को अब छाडिक भरोसो राख स्याम को ॥
मेरो मेरो कहत सब तेरो यह नाहिं कछु
  तात मात भ्रात बाम चाहे धन धाम को ।
अत छार भय एक दाम का न है रे तुव
  भज मन कृष्ण कृष्ण बिन कृष्ण नाम को ॥४०॥

सवैया

हानि सु लाभ अरु सुख सपत दुरख बटायो हू नक घटै ना ।
जेतइ चाम में दाम भरै सोइ काल के काल सो सास घट ना ॥
ह्वै नरसक रह्यो मन रे तुव श्रीव्रजराज को नाम रटै ना ।
भाल में लीक लिखी विधि सो कछु कोट उपाय किय हू मिटै ना ॥४१॥

---

४० C चल्यो । CD क । ABC काम । A काम । BCD क्रोध । A क्रोम । A मोह । A व्याप । A रह । A छाडि । C भरोसा । D भरोसो । D स्याम । C का । CD मेरा मेरा । C करै । CD तरो । C नाम । A चाहैं । ABD धाम । D कों । D भया । ABD को । C तब । A कृष्ण । ABD नाव । AD कों । C को ।

४१ AD हान । B हान । D नाभ । A दुख । C बटायो । AD नेंक । C वढ । BC जेतई । A चाम । AD दाम । D भर । A सोइ । B साई । D साई । C घट । D ह्व नरसक रह ना पाठ नहीं । B वृजराज । C बजराज । D मे । BCD लषा । A विध । BC विधि । A सो । A कोट । A उपाय । A कियैं । D किय । A मटै । C मि ।

दोहा

सपने में मिलि हैं सब, जिपत पर्ग नहिं कोय ।
दुस्र पुर य दुहु मम गिन, जे नर विरला होय ।।४२।।

श्रीकृष्ण नाम

मोहन गिरधर स्याम छवि वनमाली गोविंद ।
श्रीपति हरि निधि चक्रधर कृष्ण कुंवर व्रजचंद ।।४३।।

---

४२ C है । C [illegible] । B C [illegible] । A [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । A में ।
A । C [illegible] ।

४३ B C D [illegible] । A [illegible] । A । C [illegible] । A [illegible] । B C । [illegible] ।
A । [illegible] ।

शृंगार-माधुरी

श्रृंगार-माधुरी

वर्षाऋतु वर्णन

सवैया

घोर घटा चिहुँ आन चली मिलि सोर करैं पपिया अति भागे ।
मारग में सुनि होत मरो चख चित्त बर मिनु श्रीगिरजागे ।।
छाय विदेस रहे मनभावन आवन की यह बोल बिरागे ।
है धन भाग सु री सजनी जब आनि मिलैं पिय कुंजबिहागे ।।१।।

दोहा

गरजि घटा चपला चमकि, चिहुँ दिस दादुर गाय ।
अवनी अति प्रफुल्लित भई, लालन चातक मोर ।।२।।

पावस रितु है अति भली, मोहन नित ढिग होय ।
पिय वियोग वारी जनी चाहत नाहिंन कोय ।।३।।

---

१ A घोर । C चहुँ । ABC सोर । A मिल । A मारग । A सुन । ABD बिनु । A घर । D है । ABD बिरागी । D है । A बिरमाय । A अति । A मिलैं । ABD बिहार ।
२ CD दिस । C गाय । D लालन । A मोर ।
३ A है । A रितु । A वियोग । C दिन । ABD नाहिं । C नहिं । A कोय । B कोय ।

कवित्त

घुमड घुमड घटा बरसत बूद बूद
चमकि चमकि बीज नित्त कौ डरावै है ।
दादुर पपीहा मोर बोलत अनेक खग
बिरह बिहाल करि तन कौ तपाव है ।।
कहत हा तोकौ सुनि सुघर महेली अब
कसे हू सुजान हू पै पाती का पठाव हे ।
सही हू न जाव रन नीद हू न आवै छिन
कछु न सुहावै स्याम दरस कौ चाव है ।।४।।

नायक प्रति सखी वचन

छप्पय

करत मोर अति सार घोर घन बरसत जित तित ।
नित अनग मन दहत महत नहिं बाल लाल चित ।।
जह तह बोलत बर बर दादुर सु डरावत ।
भावत नहि कछु भोग रोग तन तन दरसावत ।।
यह समय वेग सजि चलहु तुम तजहु स्याम सुनि काज सब ।
सुख पाय चाय उरमाय रम जाय मिलहु ब्रजराज अब ।।५।।

---

४ BCD बरसत । BC बूद बूद । D बूदे बूद । AC है । D पपीया । A मौर । A बौनत । BCD बिरह । BCD बिहाल । A कौ । CD को । C तपाव । D तपाव । C है । C हा । A ताको । C ताकों । AB कसैं । D कैसे । D ह । ABD पैं । CD का । D हू । C पगाव । B रैंन । A नीद । A आवैं । A सुहावैं । C को । C चाव । A है ।

५ A मौर । D अनग । D बाजत । A जह तहा । BD जग तहा । D बानत । D कछू । A यह । BD वग । C वगि । D तजिहु । A सुन । BCD ब्रजराज ।

विरहिनी की पत्रिका नायक प्रति

कवित्त

प्रीतम सुजान प्रानप्यारे घनस्याम अब
तेरे दरस बिनु जिय अकुलात है।
ख्याल अरु पान तन भूषन बसन सब
अंगराग अतर फुलेल ना सुहात है॥
पावस की फौज मिलि घेरत है चिहू ओर
मारु मारु मार ते पुकार के डरात है।
नैन बरसात अंग अंग सुरझात तन
नींद नहीं आवत ब्याधि सही हू न जात है॥६॥

उद्धव आगमन

सवैया

ऊधव आय गये ब्रज में सुनि गोपिन के तन में सुख छायो।
आनंद सों उमगी सगरी चलि प्रेम भरी रुधि आन बँधायो॥
पूछति है मनमोहन की सुधि बोलत ही द्रिग नीर चलायो।
परि सनेह सखा हरि के घनस्याम वियोग कछू न सुनायो॥७॥

---

६ BD बिनु। D अकुलाव। AB है। BCD बसन। A फाम। C मार। A मिल। ABC घेरत है। AB चौर। A मोर। A न। AB है। D न [illegible]। BCD ब्याध। AB है।

७ A ऊधव। D उधव। BD ब्रज। C बृज। C म। D के। C के। BC आनंद। A उमगी। C बधायो। C है। B मनमोहन। A बोलत। AC [illegible]। C चलायो। D नेह। AB के। D घनस्याम। A बियोग। C सुनायो।

उद्धव प्रति गोपी वचन

सवैया

ब्रज में सुनि आगम उद्धव का चिहुँ आग सखी जन आन खरी ।
सुध पूछत ह वहि प्रीतम की तन में मन म अति प्रेम भरी ॥
ठगलै हम का नदलाल तब अब नह दुरावन को जु करी ।
मिलि ह कब स्याम सुजान कहा तुम जानत हो मन की सगरी ॥८॥

दोहा

विकल भई सब ब्रज वधू गइ दह सुधि भूल ।
मनमोहन के चलत ही प्रगट लही उर सूल ॥९॥

कब मिलि ह मोहन अली अत सनेह सुख दन ।
जब जानत   जीवो सुफल, सुनि हो सुदर बन ॥१०॥

उद्धव तुम   आय   इहा   करत जाग की बात ।
बरन   बरन   एस   लग, करत वज्र की घात ॥११॥

---

८ BCD ब्रज । C म । A ऊद्धव । BD को । C का । BD चिहु । C चहु । ABC ओर । A पीतम । C म । C मे । ABD ठगन । A नँदलाल । CD तब । ABD कौ । A मिल । D है । C कहो । D 'तुम जानत हो' पाठ नहीं । CD हो ।

९ ABC विकल । BD ब्रजबधू । D भूलि । D थ । A उर ।

१० A मिल । C है । A मोहन । A नैन । AC जाओ । A सुन । D हो । ABC बैन ।

११ A ऊद्धव । AB यहा । D जोग उपरम । BD बरन । C एसे । CD बज्र ।

कहत तुमी मा ब्रजवधू, बात बिचार विचार ।
नाग भाग्य का मनों, है माहन नवार ॥१२॥

कवित्त

पहल लगाय प्रीत रीत ही बताई स्याम
कुजन म सग ग्रग रग बरसाये ह ।
कपटी कठोर रहा जानें पर पीर हो म
रसिक बितामधान मधुपुर छाये ह ॥
बनी प्रम भय रत ह हम जानत ह
काहे को दुराओ तिय रूप प लुभाय ह ।
ऊधौ तुम आय बात भली बतराये हरि
नह को दुराय ग्यान दन का पठाय ह ॥१३॥

श्रीकृष्ण जन्म उत्सव

सवैया

मोहन स्याम भये जगजीवन जे बसुदेव सु गोद खिलावे ।
मात बिलोकत सु दर मूरत नन निहार महा सुख पावे ॥
गारुर की जुवती मिलि के रसि गार चिर्ह रिस आनि बधाव ।
आनद प्रेम भरी ब्रजवार निसार भई सब मगल गावे ॥१४॥

---

१२ BCD कहत । C मा । BCD ब्रजवधू । BD बात । BD बिचार । BD बिचार । C मारव । D मारव । AD को । C मना । ABC है । A मोहन ।

१३ ABD पहले । A [illegible] । C स्याम । A म । C म । C बरसाद । AD जानें । C है । BCD बस । C रूप । AB ह । [illegible] । BCD जानत । A है । ABC काहे । CD को । AC दुराय । D न्याने । C है । D लुभाय । C है । CD उन । BC बताय । C को । D को । C को ।

१४ A म । BCD बसुदेव । D सुन्दर । C सुख । D सुख । C नन । A मोहन । ABD रिस । C के । C का । A जन । BC बधाव । BCD मगल ।

नेत्र-वर्णन

दोहा

खंजन से म्रग मीन से, राखे तेरे नैन ।
लागत ही मो मन विषै, प्रगट करत है मैन ॥१५॥

लाज भरे आलस भरे, छक प्रेम मद मैन ।
गिरधर कौ बस करि लियौ, प्यारी तेरे नैन ॥१६॥

भौह-चाप चढाय कै, द्रिग जुग बान लगाय ।
तन मन सो मोहन सखी, तेरे परिहै पाय ॥१७॥

चंदमुखी मृगलोचनी, हंसगमनि अति चारु ।
मनमोहन तापर सखी प्रान करत बलिहार ॥१८॥

---

१५ D में । BCD मृग । AD मान । D में । BC है । C नन ।

१६ ABC उक । C मन । D को । C को । A लाय । D नाथ ।

१७ C मा‍ै । D मौहै । D चाप्पद । C के । D नागाय । C सो । A मो न । ABD नर । CD है ।

१८ A म्रग । D हंस । ABC गमन । A मोहन । A बलिहार ।

नेत्र वर्णन—सखी प्रति सखी वाक्य

कवित्त

सजन मे तिरछन सु मीन से चपलता में
कंज मे विसाल ये कुरंग जैसे वारे है।
नींद भरे घुर अलसान ही म आप रहै
उपमा न नाग जे रिग्च हू वे डारे हैं॥
प्रीतम सुजान घनस्याम ही वे चित्त चीत्र
लागत सु प्यारे हिय प्रान हू ते प्यार है।
टरत न टारे न्यारे नच न रहत आली
अति अनियारे नन मैन मतवारे है॥१६॥

सवैया

आनन प रद चंद धरी अरु भाहन प वहि चाप विडारी।
बैनन की छिन प मनभावन भाग्न की अवनी मन टारी॥
भूपन अंबर नाभि रह तन चारु हिय जु मगाए न जागी।
सुदर न वृषभान सुता निय ननन प मग गजन वारी॥२०॥

१६ BCD तिरछे। D मीन। D मैं। C प। D म। D अप। C है। D नारे। D मरा। C म। A और। D रह। D उपमा। C नाग। BCD विरंच। C है। A चित। A चीत्र। A सुप्यारे। C है। CD तारे। ABD मैन। A अनियारे। BC अनियारे। CD है।

२० यह सवैया BCD प्रति म नहीं है।

दोहा

नखरारे कारे घुर भर प्रेम मद मन।
अरे करेजे म अली, अजब गजब मे नन ॥२१॥

प्रगट करै सुख मन हर, निपट नह नित दन।
खजन से म्रग मीन से आली तरे नन ॥२२॥

नेत्रवर्णन–सखी वचन नायक प्रति

कवित्त

मोहन सुजान घनश्याम हू के चित्त बीच
लागत कटाच्छ अति नह भरे दरस।
तो विन विहाल रह ऐरी अलबेली नित
तेरे ही दरस काज प्रान अति तरसे॥
ऐसो कहा कीनो वस और कछु दीस नाहि
तू ही बडभाग पिय पाय गिरधर मे।
भजन कुरग मान अजन सँवारे नन
खजन चकोर कज मर से सफर मे ॥२३॥

---

२१ D करज । C म । CD नन ।
२२ A करैं । A हरैं । C रन । D म । BCD मृग । A मीन । D स । D नन ।
२३ A मोहन । A चित्त । C रस । A तो । BCD बिन । BCD विहाल । C रहै । C ऐसो । D असो । A कीनो । D तू । AB सवारे । D सवारे । A नैंन । A चकोर ।

केश-वर्णन

दोहा

स्याम सचिक्कन सरल अति, तिछ्छन मृदुल सुबेस ।
मनमोहन मन मोहने, राधे तेरे केस ॥२४॥

वंशी-वर्णन

मोहन कर मुरली नहीं, कछु इक बड़ी बलाय ।
या ब्रज की सब ब्रजवधू, सुनि धुनि अति अकुलाय ॥२५॥

हे बैरी तुव बँसुरिया, तन को करत बिहाल ।
छिन छिन खटकत हीय में, रहत बिरह जम बाल ॥२६॥

वंशी प्रति गोपी वचन

सवैया

मोहन पै मुख लाग रही अभिमान भरी अति बयो नित गाजै ।
ब्याकुल ह्वै ब्रजवारि मन वह भूलि गई सिगरे ग्रह काजै ॥
कानन बीच परी धुन जो जब तें गुरुलोगन को डर भाजै ।
बेर हि बेर पुकार यह मुनि बैरन बाँसुरिया मत बाज ॥२७॥

---

२४ A छीगन । CD तिग्न ।

२५ A मोहन । A इक । A बड़ी । IC बलाइ । D बलाइ । A या । BD ब्रज । B बुध । D बध । FCD अकुलाइ ।

२६ ABD बैरन । BC बसुरिया । D बँसुरिया । CD तन का । A बिहाल । D बिरह । D जम ।

२७ A ब । ICD व्याकुल । ICD भूलबान । CD गई । AFC कानन । ABD को । D ?? । D बहू । C बैरनि । D बांसुरिया ।

मुख वणन–सखी प्रति सखी वाक्य

कवित्त

सु दर सलौनौ अति रूप को समुद्र सोहै
पीतम सुजान हू को जीवन सु जीकौ है ।
गुरजन लोक ही को आनद करनहार
सौतन निहारत ही होत दिल फीकौ है ॥
सची रती रभा कछु समता न पाव नैक
सब ही तिया को सदा सीस ही को टीकौ है ।
मोहे मन पी को सुखदाई नित ही को सखि
भाननदिनी को मुख चद हू त नीकौ है ॥२८॥

दपति वर्णन–सखी प्रति सखी वचन

सवैया

श्रीधनस्याम सुजान अली ढिग सोभित ह वृषभान किसोरी ।
नैनन सौ मिल नैन रहै रस पाय रिझावत है नित गोरी ॥
हौ छवि देखि निहाल भई सुनि दोउन के तन नेह बढोरी ।
धू ससि सूरज त पुहुमी पर राज करौ वह सु दर जोरी ॥२९॥

---

२८ C सलाना । ABD मौ । AB सोहै । D साहैं । ABD को । C जोका । ABD हैं । A लोक । C नक । ABD कौ । BD सोतन । [illegible] मोतन । A हौन । CD फीको । ABD हैं । BCD पाव । ABD नैंक । ABD मौ । ABD को । CD टीका । B टाको । A हैं । A मोहैं । D मोहे । ABD को । ABD को । D नदनी । ABD को । C नाको । D नीका । AD हैं ।

२९ BCD है । A किसोरा । ABC रह । AD गौरी । D हो । A दोऊ । BD दोउ । BCD बढोरा । AB जितैं । ACD करा । A जोरा ।

दोहा

कु जविहारी कु ज म, राजत निज तिय सग ।
मानो अपने भवन म, सोभित रती अनग ॥३०॥

नायिका अज्ञातयौवना

खेलन के मिस लै गई, कु जभवन म बाल ।
चकित भई नवला नई, दरसत ही नदलाल ॥३१॥

नायिका मध्या धीरा

कवित्त

सुघर सुजान स्याम नेह के निधान तुम
प्रान हू पै प्रान गुनवान प्रेम पागे हो ।
नीद भर लोचननि रोचन की लाली अति
घूमत घुमत अलसान रैन जागे हो ॥
जामा बिन भाग सो लगी है उर रावर सों
रावरोऊ भाग बिन वाके उर लागे हो ।
वैठिये गुपाल आये भोर मेरे भौन लाल
दास यहा नाम लीन जासों अनुराग हो ॥३२॥

---

३० A कु ज । ALD बिहारा । A कु ज । D कुंज । C म । BD माने । C माना । BC अपने । D भवनै । BC सोभित । D सोभत ।

३१ AD मैं । B मैं । A नद । C म ।

३२ ABD निधान । C हो । D हौ । ABC घूमत । A भाग । C हो । BCD अलसान । AD हो । A है । A उर । A रावर । D व । A उर । A भाग । C हो । D हो । ABD बैठिये । BCD मेर । C नाम साम । C सौने । C अनुराग । C हो ।

नायिका रूपगर्विता

सवैया

एक सम मनभावन छैल निहारत ही बस मोह भयौ री ।
चदमुखी कहिक बतरावत चाह करै कर जोर रह्यौ री ।।
हौ सजनी अति ही सकुचावत पीतम को नित नेह नयौ री ।
रूप लुभाय सुजान अली त्रिय औरन की सुधि भूलि गयौ री ।।३३।।

दोहा

अपन तन के रूप को, अति ही करत गुमान ।
रूपगर्विता नायका, ताहि कहत कवि जान ।।३४।।

मुग्धा अभिसारिका

कवित्त

केलि के भवन मग निकसी सुजान तिय
सु दर सलोनी अग सोभा दरमात है ।
चद को सो भाल राजै भ्रकुटी कमान जसी
जाकी रूप पेखि रति रभा हू लजात हे ।।
सची उरवसी कछु समता न पाव नक
बचन पियूख मद मद मुसकात है ।

---

३३ C सम । D निहाररति । A मौह । BCD भयो । A करैं । A जोर । C रह्यो । A मत । ABD कौ । BCD नत । A नय्यौ । CD नयो । CD प्रोरन । D भून । BCD गयौ ।

३४ ABC ग्रपन । D क । BCD कौ । A पत । A गर्विता । D क्वि ।

चली नव बाल नंदलाल पै गुमान भर
ज्यों ज्यों ढिग जात त्यों त्यों अति सकुचात है ॥३५॥

कुलटा नायिका लच्छन

दोहा

मोहत है सब नगर कें, ऐसी सु कुलटा नार।
यते पति गो को गिनैं, जेते सिर पर बार ॥३६॥

छिनरहि में सब नगर के, मोहत है लिय छैल।
निडर भई कुलटा नई, मगी हत नित गैल ॥३७॥

कवित्त

मोहन नगर ग्रह ग्रह पे सकल छल
मन में भरी है रस आन बतराय है।
निडर निमर मद राह् को न आन अंग
रग नों अनेकन सा नैनन मिलावै है ॥

बाह् कौ डुलावै चावै जग कौ रिझावै गावै
एते यह लच्छन सो कुलटा कहावै है ॥३८॥

खंडिता नायिका को वचन नायक प्रति

कवित्त

पाघ ही के पेच खुलि रहे घनस्याम आज
नैनन में नीद कहो कौनसी तिया बरी।
बूझत हौ बेर-बेर काहे कौ दुरावौ बात
जान ल्ई घात जे सुभाय सब रावरी ॥
कपटी किसोर चोर ठौर-ठौर ह्व के मीत
करत अनीत निज प्रीत कौ सब हरी।
धरी जिन आस जाके पास ही बिताई रात
प्रात समें मोप मनमोहन मया करी ॥३९॥

आये घनस्याम मेरे भौन अति प्यार ही सौ
भूपन विचित्र अग अग प कहा करै।
विन गुन हार हिय वीच ही बिराज रह्यौ
सीसफूल ही कौ फूल भाल प भलौ धरै ॥

---

३८ A मोहत। D छल। C म। ABD हैं। BCD बातें। BCD बतराव। ABD हैं। ABC काहू। D ननन। D मिलाव। ABD हैं। ABD रातें। C म। ABC लीयैं। ABC कीयैं। ABD बिभचार। C औ। C माव। ABD हैं। ABD डुनावैं। ABC चावैं। A सौ। B कहाव। AB हैं।

३९ D पाय। C कहो। A काहैं। D वात। D कपटी। A चौर। BCD ठोर ठोर। B मित। BCD सब। D माप। BC मापैं। A मनमोहन।

कौन की तिया की आस पूरी नंदलाल तुम
काहे को दुरावो बात टारी अब ना टरै ।
हरै हरै बोल्त बिलोकत हो मूधे चित
रन की गुमारी नैन वैन प लखी परै ॥४०॥

सवैया

कोऊ नहीं बरजै घनस्याम रहो चित ही जित ही रत मानो ।
काहूको साह हजार करौ सग रन जगै सु रहै न अछानो ॥
एती अनीत करो नित हो अपने चित पै सु भली मत ठानो ।
मावरे गावर नेह की रीत दुरावो कहा हम तौ पहिचानो ॥४१॥

अन्यसभोग दुखिता नायिका का वचन सखी प्रति

कवित्त

नैनन मिलाय अति जोबन जनाय आली
माह्यो नंदलाल चित्त पौन कौं लगाई है ।
भूषन नुगाय अग अग मसलाय सुन
ए री उर बीच नगरेम छवि छाई है ॥
अधर दबाय रम पाय मनमोहन कौं
बनुभी पराय मव गीत दरसाई है ।

४० D गौ । AB दै । ABC हूघ । C प । D कसो । A घरै । BC नन्दलाल ।
A काहे । ABD को । C दुरावो । BCD बाउ । ABC हरैं हरैं । A बोल ।
D चै । BCD बिलोकत । C हो । C नैन । A परैं ।
४१ A कोऊ । C बरजै । D बरै । D घनस्याम । D रहो । B नेह । C करो ।
A ऐ । ABC लगो । ABC पै । A मन । D मानो । C दुरावो । A हा ।

बात को पठाई तन आग सी लगाई मेरे
स्याम को रिझाय बेगसीस पाय आई है ॥४२॥

उत्का नायिका

सवया

बीत गई जुग जाम अली यह रीत नई घनस्याम न आये ।
औध बितीत भई अब तो घर सोय रह मन बात भुलाये ॥
कौन बिचार करो सजनी तन मैं सिफरध्वज बान लगाये ।
छाय रहे मनमोहन छैल मनो बहु भामिनि रूप लुभाये ॥४३॥

उत्का नायिका सखी प्रति मखी वाक्य

कु जन बीच खरी मनभावन आवन प्रानपतो चित चावत ।
आनँद सौ मन ही मन म अत नेह धर अग काम बढावत ॥
चौक पर छिन ही छिन म अनमेख किय जुग नन लगावत ।
बेर भई निसि बीति गई यह रीत नई मनमोहन आवत ॥४४॥

दोहा

मनमोहन के मिल्न की लाग रही तिय आस ।
ज्यौ ज्या निस बीतै अली त्यौ त्यौ निपट उदास ॥४५॥

---

४२ A जोबन । AB जनाधि । A मोह्यो । CD मोह्यो । ABD है । A ऊर ।
A हैं । A मोहन । C को । A हैं । C को । C को । A हैं ।

४३ AB बाति । C बीति । C प्राघ । D बितो । A तो । D स्योय । C करो ।
C म । A मोहन । D छन । D बहु ।

४४ D प्रानपन । D चित्त । D चावत्त । AD आनन्द । ABC मन । C पर ।
C म । D बरि । C बिति । BD राति ।

४५ A ज्यां ज्यां । ABC बातैं । A उदास ।

उत्का नायिका सखी प्रति वाक्य

सवैया

आज कहा बिलम्यो मनमोहन सुंदर नागर नंददुलारा ।
बीत गई सुन री सजनी निस भोर भयो प्रगट्यो उजियारो ॥
व्याकुल है मन मेरो अली अब याको कछू नो विचार बिचारा ।
भूल रह्यो रस में मनभावन क्यों नहिं आयो री प्रान पियारो ॥४६॥

अन्यसंभोग दुखिता नायिका का वचन दूती प्रति

कवित्त

प्रीतम के पास जाय निस ही में सुख पाय
अति ही रिझाय भई तेरी मनभाई है ।
मैं तो नहीं जानी हरी करी मनमानी अब
रही है न छानी सब रीत दरसाई है ॥
अति ही गुमान भरी हरी मत मोहन की
गरी ऐसी कहा मोसों भई दुखदाई है ।
अधर ललाई छाई कंचुकी फटाई पिय
लैन को पठाई तासों रस करि आई है ॥४७॥

---

४६ D कहा । C बिलम्यो । D सजनी । A भोर । CD कछु । AD व्याकुल । A मेरो । AC अली । A याको । C कछु । A नो । D है । C बिचारा । C नहिं । A क्यों । C आयो । AB पियारो । D पियारो ।

४७ A सुख । AD मैं । C में । A छानी । A री । DD है । CD हरी । AD है । A गुमान । A मों । C रस । A है । A रत । A मोहन । A मोसों । C भरी । D है । D करि । A है ।

जैसे ही मिस वात वे, गई सुहागन सैल।
ननन सौ वस कर अली, छल आई तिय छैल ॥४८॥

अधर दगे कुच नख लगे, भई कहा यह वात।
नैन घुरे श्रेरी अली, जगी कौन सग रात ॥४६॥

नायिका कलहांतरिता प्रति सखी वचन

वात अटपटी नेह की, करत चटपटी स्याम।
चल गिरधर प री सखी, बिकल करत तन काम ॥५०॥

हे वडभागिन भामिनी, तेरो है वडभाग।
व्रजनिध नदकुमार कौ, है तो प अनुराग ॥५१॥

मानिनी नायिका प्रति सखी वचन

मनमोहन तोकू सदा, जानत तन मन प्रान।
ऐस पिय सौ ह अली, मान न भलौ सयान ॥५२॥

---

४८ A हा। BCD वात। ABD क।
४६ D दगो।
५० BC वात। BCD विकल।
५१ D वड। A नरो। BCD व्रजनिध। D नद नदकुमार। BC कै। D कौं।
A तो।
५२ A मोहन। A तो। BC ऐसे। D जैसें। C सो। ACD भलो।

दोहा

आरतवान अधीन ह्वै, ठाढे दुहुं कर जोर ।
व्रजनिध प्रीतम सौं अली, क्यों बैठी मुख मोर ॥५३॥

नायिका कलहांतरिता प्रति सखी वाक्य

सवैया

प्रानपती चित आनद सौं मनभावन के ग्रह आवन कीनो ।
भामिनि भौंनन बीच लगी मुख मौन गहै कछु बोल न दीनो ॥
स्याम सुजान करी मनुहार निहार करे अति प्रेम नवीनो ।
रूठि गये घनस्याम तजे जब बैठि रही करि सोच मलीनो ॥५४॥

मानवती नायिका प्रति सखी वचन

बीत गई जुग जाम अली हठ छाड़ भटू अति क्यों अब छीजे ।
मोहन चाह तजी चित मे अपने हित कौं निज चाहहि कीजै ॥
बेर हि बेर पुकारि कहै कछु मान भलो हमकौं जस दीजै ।
क्यों मुख मोर रही सजनी पिय सो मिलकैं अधरा रस पीजै ॥५५॥

---

५३ C आरतवंत । D आरतवान । ABC ठाढ़े । ABC दुहुं । A जोर । BCD व्रजनिध । D क्यों ।

५४ ABC मनभावन । BCD के । D भौनन । ABC गहै । A बैन । A दवै । A मोच ।

५५ AB दोर । D गई । A कै । D वो । A मोहन । D चा । BC आपन । A ही । A भर । C हमारो । A हमकूं । A मोर । D मैं । D पीजै ।

दोहा

चमकि चमकि चपला चपल, घुमडि घटा चिहु ओर ।
पिय बिनु तिय तन छिनक म, डारत मदन मरोर ॥५६॥

कवित्त

मोहन सौ मान करि बैठी प्रानप्यारी अति
कैसो री अयानपन पर्‌यो है री तन म ।
प्रान ह त अधिक सुजान स्याम जान नित
राखत है मान तेरो सब तीय जन म ॥
भोर अरु साभ दिन राति मैं न दीसैं और
लेत मुख नाम ध्यान चाहे छिन छिन म ।
ए री अलबेली हठी सुन री नवेली अब
मेरी कह्यो मान कान राख मेरी मन म ॥५७॥

सवैया

मनमोहन की छवि देखि अरी उठि बठि रही घर क्यो लजनी ।
चित चाह कर घनस्याम सुजान सु बीतत जात सबै रजनी ॥
मुसिकाय मिलो अपन पिय सो तुव चाल निहार लज गजनी ।
तन मैन बिहाल कर उनको सुनि मान कह्यो चल री सजनी ॥५८॥

मोहन सौ कबहू सजनी सपन हिय मैं कछु मान न कीजै ।
नैमन सौ तनसौ मनसा वह रूप निहारत ही नित रीज ॥

---

५६ D चपला । A घुमडि । BC घुमँडि । BCD चहु । A विनु । D मैं । C मरोर ।
५७ ABC मान । ABD करो । A हे । A है । D ह । C नरो । A भोर ।
D राति मन मैं दन नीस । C भार । A चाहैं । ABC नरनो ।
५८ A मोहन । C करि । A उठ । D कौं । A सबैं । BCD अपने । A निहारि ।
AB लजैं । A बिहाल । A उनको । D सुन । ABC चलि ।

नेर हि बेर कह्यो मनभावन या जग में जस वास सु लीजै ।
पीतम स्याम सुजान हि सों भुज भेंट अली अधरारस पीजै ॥५९॥

नायिका प्रति सखी वचन

नैनन जोर मरोरन मोहन मंत्र मनों पढ़ि कछु दीनो ।
तौ बिन स्याम सुजान अली छिन ही छिन में तन हाल सु छीनो ॥
दच्छन सों अनुकूल भयो ब्रजराज पतो अति ही परवीनो ।
नैंक निहारत ही मनभावन मोहन को बस मैं करि लीनो ॥६०॥

कवित्त

सुंदर सलौनी गजगौनी अलबेली नारि
नव ही निहारि बस करे ब्रजराज तव ।
तेरो ही वियोग रोम अंग में अनत भयो
आवै सुधि तेरी वह बोलै नीठ नीठ जब ॥
एस कहा कीने बन बावरे से रहै नित
और हू त्रिया की सुधि भूले घनस्याम सब ।
रव की कहो री सुनि मिल मनमोहन सौं
व्याकुल भये हैं प्यारी प्यारे नंदलाल अब ॥६१॥

---

५९ D मनसों तामों । D कहूं । AD ही । C कह्यो । A स्या । D न । AFC ही ।
६० C मैं जोर । A जोर । A मोहन । B मारन । D के । BCD बिनु । A हीत ।
A छीनो । D दुनो । A स्यान । D स्युन । A मो । D यदी ।
BCD ब्रजराज । AB नैंक । A मोहन । D करि । A लीनो ।
६१ A सुंदर । A स्यानौना । C नारि । D करै । BCD ब्रजराज । ACD तेरो ।
A बियोग । A रोम । CD नदी । A आवै । A बोलै । BCD बन ।
BCD बावरे । A रहै । D कहो । A मोहन । D सो । BCD व्याकुल ।

मानवती नायिका प्रति सखी वचन

सवैया

रैन दिना हिय ध्यान रहै सब सोतिन तें तुव है अति प्यारी ।
ता पिय सौ नित मान करै जु अरी सजनी यह रीत सु न्यारी ॥
हास बिलास बिना सुनि नागर व्याकुल है व्रजराज बिहारी ।
मोहन जानत है अति बल्लभ प्रानहु तें व्रपभानकुमारी ॥६२॥

परकीया नायिका प्रति सखी वचन

मोरपखा सिर सोभित है गल गुंजनहार सु काछ कछी कट ।
बेर हि बेर लै नाम सखी सुनि प्रानहि मैं अति लाग रही रट ॥
मोहन की छबि देख अली चल मान कह्यौ अब छाड सबै हट ।
बैन बजाय रिझावत छैल सु ठाढै गुबिंद कलिंदसुता तट ॥६३॥

सखी प्रति सखी वचन

कीरत की तनया मनभावन स्याम मिटावन काम की बाधा ।
देव तिया रति औरहु की कछु नाहिं रहै पति कै चित साधा ॥
हैं नख तें सिख लौं अति सुंदर नेम बढावन प्रेम अगाधा ।
प्रान की प्रान सुहागिन भामिन रूप निधान सुजान है राधा ॥६४॥

---

६२ D रन । ABC दिना । A सोतन । ABD हैं । A करैं । C ज । A सन । BCD बृजराज । BCD विहारी । A मौहन । [illegible] है । BCD वृपमान ।

६३ [illegible] पखा । ABD सोभिरह । A गू जन । D हि । BCD न । A सुन । A मौहन । C देखि । AB छाडू । ABC सबैं । C नैंन । D बैन । ABC ठाढे । A गुन्दद । D गोबिंद । A कल्यन ।

६४ यह सवैया BCD प्रति म नहीं है ।

नायिका प्रति सखी वचन

कवित्त

सुंदर सलौनी गजगौनी अलबेली नारि
तो बिन बिहाल नंदलाल तन पीर है।
भूषन बसन खान पान बिसराय दिये
रैन दिन तन मन धरत न धीर है॥
तेरे ही कटाछ ही सौ घायल भये है स्याम
चलि गो निहार अति व्याकुल अहीर है।
ए री बृषभान की कुमार राधे वन सुनि
तेरे नैन काम की कमान के से तीर हैं॥६५॥

निस दिन मोहन को चैन हू न परे आली
काम हू की आग तन मन मैं जगी रहै।
रंग अरु राग खान पान औ उमंग भूले
और हू तिया की सुधि दिल ते भगी रहै॥
सुंदर सलौनी तेरी मंद मुसक्यान प्यारी
पीतम के नित प्रति चित्त मैं पगी रहै।
मान की कुमारी सुनि तेरो मुख देखिबे की
स्याम हू के लोचन की लालसा लगी रहै॥६६॥

---

६५ D सुंदर। C सलनी। AIC गजगौना। A नारि। ICD ता। C है। A दीए। BD दये। ICD है। C धरा। C है। IC स्याम। D करा नहीं। C चलि। BCD व्याकुल। IC है। PCD वृषभान। A कुंवर। ALC सुन। A नैं। A के। D के मैं। CD है।

६६ A मोहन। ABD को। AB परैं। P रहैं। A उमग। D संग। C तें। AB पैं। ABC सलौनी। A कं। D रहें। D मुसकान। A कुमार। ACD की। A देखबे। B देखिबे। ICD को। D को। PCD लालसा। A रहै।

नायक प्रति सखी वाक्य

कवित्त

रावरे दरस विनु बिकल बिहाल वाल,
लाल उठि चलौ मिलौ प्यारी सौ महल मैं ।
नीद हू न आवै नैन तन म न पावै चैन,
परी रहै रैन ऐस काम की दहल म ॥
निठुर मुरारि अत सब ही बिसारि हित,
कहौ एती बात तुम मानत सहल मैं ।
प्रीतम सुजान निज प्रीत को पिछान वहे
हुकम अधीन रहै नित ही टहल म ॥६७॥

सवैया

भूल चलौ घनस्याम अजान सुजान कौ चित्त न धीर धरगौ ।
जानत हू मनभावन यौ हम सौ ब्रजनायक ना बिछरगौ ॥
हौ वलवीर सुनौ विनती यह फेरि तुम्है हू बिचार परगौ ।
गौन कौ नाम सुन मनमोहन प्यारी के प्रान हू गौन करगौ ॥६८॥

सखी प्रति नायिका प्रोषितपतिका वाक्य

जा दिन त बिछुर ब्रजराज वियोग की पीर सु प्रान कौ दागै ।
भूपन अवर नाहिं सुहावत री सजनी अकुलावन आगै ॥

---

६७ BCD विकन । BC बिगन । A उठि । A मिनो । D नीन । D मैंन मैंन । ABC रैंन । D प्रति । C कहो । ABD कौं । A रहै ।

६८ [illegible] सुजान सुजान । D चित । C घरगो । BCD है । D स्यो । BCD बृजनायक । AB बिछरैगो । [illegible] बिछुरगा । A फर । ABC तुमैं । C परगो । BCD गौन । BCD कौं । ABC सुन । A मनमोहन । ABD को । A करैगो । AC करैगो । D करैगौं ।

सी करो अब हा मनभावन प्रीतम भूलि गयें अनुरागें ।
याम सुजान बिना सुन री यह चंद जुन्हाइ उन्हाइ सी लागें ॥६९॥

चंदन चंद अँगार सा लागत चैन नहीं कहुँ साँझ सवेरें ।
सेज सँवार सु सूल से मालत कटक से अति फूल करेरें ॥
भूलि गयें सुधि प्रान पिया अब बीति गयें दिन हू बहुतेरें ।
जा दिन स्याम चले परदेस सुदेस बिदेस भयो सखि मेरें ॥७०॥

सखी प्रति नायिका वचन

हौं जु गई जमुना तट पै वट मैं मनमोहन बैन बजावें ।
गावत है मधुरे सुर सों सुनिकै जुवती तन मैन बढावें ॥
या छबि देख सखी उठ री चलि प्रेम भरे जुग नैन मिलावें ।
श्री घनस्याम सुजान हिये सों भुज भेट भली अधरा रस पावें ॥७१॥

---

६९ D [illegible] । BD [illegible] । C [illegible] । A [illegible] । BD [illegible] । D [illegible] ।
D [illegible] । BC [illegible] । ABC [illegible] । BD [illegible] । C हो । A पालम ।
AD [illegible] । D बिना । A [illegible] । ABC [illegible] । A उन्हाई । D [illegible] ।
७० BCD [illegible] । AB से । D चैन । BCD [illegible] । D [illegible] । A [illegible] ।
D [illegible] । ABC [illegible] । A [illegible] । C [illegible] । D [illegible] । A [illegible] ।
D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । C [illegible] । D [illegible] । BC [illegible] ।
BC [illegible] ।
७१ D जमुना । C पै । D [illegible] । A मोहन । A [illegible] । A है । D मधुरे । D [illegible] ।
AD [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । ABC मिलावें । C [illegible]
[illegible] । A पावें ।

स्वाधीनपतिका नायिका को वचन सखी प्रति

कवित्त

मोर को मुकट सीस पीतपट राजै कटि
सु दर सलौनो अग छवि सरसान प ।
चद हू सो भाल नैन अरुन अनोखे आली
तिरछी चितौन मद मद मुसक्यान प ॥
नद हू को नद सुखकद व्रजचद पेखि
लाज कोटि काम घनस्याम हू की आन प ।
जोर दुहु पान मेरो प्रीतम वढाव मान
वारा तन प्रान मनमोहन सुजान प ॥७२॥

दोहा

अति अधीन नित प्रत रहै चहै प्रेम दिन रात ।
वा पिय सो हो री सखी, मान न करत रूजात ॥७३॥

सखी प्रति विरहिनी वाक्य

खान पान भूपन वसन सव ये कछु न सुहाय ।
गिरधर विनु ए री अली प्रान रह्यो अकुलाय ॥७४॥

---

७२ A मौर । A को । A राजैं । AB कट । C सु द । C सलोना । D पग । BCD सरमान । C प । ABC सो । AB अनोख । C अनोर । CD प । AB को । BCD वृजचद । D पखि । A नाजैं । AC प । A जोर । BCD दुह । A पातम । A बग्रारें । C प ।

७३ A रहै । A चहैं । C सा । D मो । ABD हौं ।

७४ BC वसन । D विन । BC रहो । D रह्या ।

चद-किरन चदन मवल, प्रगट करत तन वाम ।
पिय विदेस है री भटू, कव मिलि है घनस्याम ॥७५॥

नायिका वचन

सोरठा

विकल करत है वाम, जाम महा दुख सौ कटै ।
लैहौ सुधि घनस्याम, विनती सुन मेरी अब ॥७६॥

स्वाधीनपतिका नायिका को वचन सखी प्रति अनुकूल नायक

कवित्त

गज ही लिया त निज मान का उठाय अलि
रहे कर जोरि मेरे नैन ही निहारते ।
साजत सिगार तन भूषन जु चाह करें
मेरे मन ही चाल सुन तन के उघारते ॥
पूरन प्रीत सौप घनस्याम हू री आली
जोरि करु प्रान की न्हौ न मन आगे ते ।
गौरि सौ रिझाय माय पायौ पति नदनंद
पैर रगो मान वा सुजान प्रान प्यारते ॥७७॥

७५ ... D प्रति म नहीं है ।
७६ 1CD ... AB ... D ... A ... C ... AB ... D सुधि । D ... ।
७७ D ... D ... AB ... D ... D ... D ... । D ... D ... AB ... D ... D ... A ... D ... । AB करें । ABC करें । AD मो । D ... D ... D ... । D ... D प्यार । D पूरन । ICD है । ICR ... D ... D ... D ... । D ... D ... D ... ABD ... D ... D ... D ... A ... । D ... D ... D ... ।

सखी प्रति नायिका वचन

जमुना की तीर तहा सीतल समीर चल
खर वह ठाह आय छैल गिरधारी जू ।
सीस प मुकट कटि पीत पट राजै अति
सावरे सलौने हू की छवि ही प वारी जू ॥
अैसी नित आवत है मन माझ मेरी भटू
कबहू रहू न छिन प्रीतम त यारी जू ।
सु दर छटा री लखि टरत न टारी जिय
भुरकी सी डारी सौह गुरकी बिहारी जू ॥७८॥

सखी प्रति स्वप्नदर्शन नायिका वचन

नीद की उनीदी सोय रही रग भौन ही म
सु दर सलौनो आय दरसन द गयौ ।
आनद सौ रग गई चैन भयौ मन ही म
भौर भय वहा जानौ पीतम चित गयौ ॥
व्याकुल बिहाल भई ता छिन त ये री भटू
बिरह बढाय अग प्रान सग ल गयौ ।

---

७८ D जमुना । D तिर । D तन्ह । D ठाहू । D म्राए । D गीरधारी । D पे । D मुकट वा कटी । A राजैं । D राज्य । D स्यावरें । ABC सलौंन । D ऊ । C हू । D हि । C प । D प । D नान । C मावति । A हैं । C तना । D भट । D कबऊ । D रऊ । D त । D ध्यग । BC छ्यारि । D नखो । D ज य । D सा । D बीहारी ।

है गयो सुजान रस बात अति प्रीत ही की
सुपने मैं स्याम को मिलाप नगि ह्वै गयो ॥७६॥

परकीया प्रोषितपतिका की सखी को वचन नायक प्रति

सवैया

जा दिन ते बिछुरे तुम स्याम सु ता दिन ते तन रोग भयो है।
स्नान रु पान बिसार दयो तिय आगिन मे जिय आय रह्यो है॥
बोलत नाहिं सखी जन सों अति अंग अनंग मरोर लयो है।
वेग चलो न बिलंब करो अब सुंदर या यह नेह नयो है॥८०॥

कवित्त

वन मां नगाय प्रान माह सुनि ए री भटू
टाग्य गल म नन्या प्रेम ही के फंद को।
रत कहाँ जाय अरु मन हू बताय यहा
एसो है सुभाव निन रागी नंदनंद को॥

७६ D न [illegible] । A उना । । D उति । । D रहि । AIC मौन । D [illegible] । D मै । D सुन्दर । A सनानो । D [illegible] । D द । PC [illegible] । D नो । D रैन । IC चैन । C मर्ई । AB मदा । D [illegible] । D थे । D सदो । D नाहा । D कानो । ABC [illegible] । IC [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । AC मैं रो । D मद्दु । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D मर । A [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । IC सुन्ने । D [illegible] । D म । AD [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । A [illegible] ।

८० D ज्या । D दैन । D [illegible] । IC [illegible] । D [illegible] । C [illegible] । D तुम । D तू । D [illegible] । AIC मैं । D [illegible] । IC [illegible] । AB है । A [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । CD [illegible] । ABD है । D [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । D [illegible] । D मरोर । AIC [illegible] । AIC है । IC [illegible] । A [illegible] । IC [illegible] । D [illegible] । AD [illegible] । D [illegible] । B [illegible] । ABC [illegible] । AB है । D है ।

साहिब है मेरो पै मुसाहिब है कूबरी को
पार हू न पाव कोऊ या के छलछद को ।
आनद को कद ताकी मद मुसक्यान लखि
कौन बिसवास करै प्यारे नदनद को ॥८१॥

सखी प्रति नायिका वचन

सवैया

नैनन प रद कज करौ अरु आनन प सखि चद बिडारौ ।
भौहन से जुग चाप नही अलक लखि नागन चित्त न धारौ ॥
भाल प केसर खौर करी तिन प चपला रुचि कौटिक टारौ ।
सु दर स्याम सुजान के ऊपर मन मनोहर मूरति वारौ ॥८२॥

नायिका प्रति सखी वाक्य

मोर पखा सिर सोभित हे गर गु जन हार महा छबि पावत ।
सग सखा सब ही ग्रह के हित धनु चरावन को नित जावत ॥

---

८१ D वन । ABC कौं । AB मौहैं । D माहे । D सुना । D मदु । D मं । ABC गनै । CD म । D म । D नि । D क । ABC कौं । BC कहा । D कना । ABC सैन । D कहा । A हैं । C ने । D हे । D सुमाव । A नदन^ । AB हैं । D हे । D मेरा । ABC पैं । D हे । D कुबरा । ABD कौ । A पावै । B पाव । C पाव । AD कोऊ । A स्या । ABC कौ । A भ्रान । ABD को । D लि । ABC मुसक्यान । D लखी । D कौन । BC बिसवास । D बीसवास । A करैं । D कर । A नन्दन^ । C को ।

८२ A नैंन । D करो । D ग्रानन । D प । D सखी । D वानारो । D मौ न । D नहि । D मनश । D नमा । D चीत । D धारो । D प । D कसर । D खोर । D तान । D प । D रुची । BC कोटिक । D कोटक । D टारो । D सूदर । D स्याम । D सूजांन । D के । ABC मैंन । AD मनोहर । D मुरति । D वारो ।

मोहन की छबि देख बने कहत न बन मुनि रीत बतावत ।
चावत छावत प्रेम पियूख बने बन त ब्रज में फिर आवत ॥८३॥

कवित्त

हुकम अधीन रहो नित प्रति मोहन के
कबहू न धारो आली हिय ही में मान कौं ।
मन चतुराई लय चाहवे प्रमान करो
कमिना म जानो औ पिछानो गान तान कौं ॥
पुन्न हू की रीत की नु चलो तुम सोही चाल
तन मन धन कुरबान करो प्रान कौं ।
मन मुसकान आन बान दरसाय अति
ऐम बसि करो प्यारी प्रीतम सुजान कौं ॥८४॥

सवैया

प्रानहु त अति वल्लभ जानत मोहन के मन की यह चोरी ।
तो सम और तिया न गिन पिय झूठ नही मुन हैं गुर गोरी ॥

---

८३ D मोर । D भार । D मोहिन । D है । D सुभग । D मान । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । AIC धेन । D बतावत । D की । D मोहन । D [illegible] । C बने । AD बन । D मुनि । D बतावत । D [illegible] । A पियूष । D पियूष । A बन । D बन । AIC बन । D ब्रज । D [illegible] । D [illegible] ।
८४ D [illegible] । C [illegible] । AD मोहन । ADD [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । CD [illegible] । D [illegible] । CD [illegible] । D [illegible] । AC को । D को । D [illegible] । D [illegible] । C [illegible] । C [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । AIC [illegible] । AD को । A [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । AD [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । C को । D को ।

पूरन प्रीत रहो नित ही प्रति बेर हि बेर असीस जु दोरी ।
हे वडभाग सुहागन भामिनि नंदकुमार की जीवन तारी ॥८५॥

जीवन है मनमोहन । की तुव कीरत की तनया ठकुरानी ।
चंदमुखी सुकुमार कँवार सुजान सदा अति ही दरसानी ॥
बेर हि बेर पती मनभावत वारहिक नित पीवत पानी ।
सौतिन को अभिमान मिट्यो सुन रूप निहार सब मुरझानी ॥८६॥

कवित्त

सु दर सलोनो गजगौनी अलबर्ली तिय
तो बिन सुजान प्यारी काहू सों न प्यार है ।
सजन चकोर कुरबान करों ननन प
आनन प इ दु वारो योंही निरधार है ॥
भान की किसोरी तुव जीवन है जीव हू की
सोहै सीस तेरे या सुहाग ही को भार है ।

---

८५ D हू । D तै । D प्रता । A वल्लभ । D वलभ । AD मोहन । D क ।
D कि । AB कीरो । C कारी । CD ता । D मम । D त या । A गिन ।
D गाने । D पाय । D जुठ । D नकि । D मु न । CD है । D सोरी ।
D पुरन । D नीत । BCD प्रन । ABC नेरा । A हैं । BC है । D सूहागन ।
A भामिन । D भामनि । D कि । CD तोरा ।

८६ DC है । D ह । A मोहन । D किरत । D कि । D तनया । D ठकु रानि ।
D चन्मुखि । D मु कु मार । D कुआर । D मुजान । D दरसानि । D बर ।
D बर । C क । D क । D मोनान । ABD को । C मिट्या । D मीम्या ।
D सू ना । D सब । D मुरभानि ।

अति सुकुमार गो सुगति वहैं ता" बार
मद सुमनयान हू प प्रान बलिहार है ॥८७॥

सुंदर सिंगार करें भूपन जराय जर
घुर बजगार नैन जुरि जुरि जात है।
पीतम लुभात एगो नर हीं निहारत ही
मोनन का चित्त न्यन मुरि मुरि जात है ॥
प्रान की पियारी उजिहार करा प्रान मेरी
नद का टुवा-। प्यारी टुरि टुरि जात है।
अति सुकुमार ब्रपभान की कुमा" सुन
तरो मुन न्य नद टुरि टुरि जात है ॥८८॥

---

८७ D सुन्दर । A1C सरीनां । 1 मवरौनि । A मनरसा । D गाय 1C हो । A बिनु । 1 कान । D सुजान । D रा । D मो । AB है । AD चरोर । D चरी । A1C नैनन । CD व । D पै । D वारा । AB यो । D मन । D । AB है । D मान्न । । कियोरा । D कसोरा । A है । D आवहि । AB मो । D मोन । A1C मर । A मा । D सा । D सुमन । D । AB है । D सुकुमार । D सुमरा । CD । CD बारवार । D हू । CD है । C बलिहार । D हारा र ।

८८ D सुन्दर । A सनार । D सनार । AB करे । D करें । D सुनन । AB करें । D दुर । D कनगर । D नैनन । D जुरि जुरी । AD है । D म भात । A मैरा । D दरा । AB नैन । D नहारत । D । ABD की । A पिन । D म न । D सुमु मुरा । AB है । A1C प्रान । D रि । D न्दर । D मन्नारा । D मरा । C नर । D मरा । CD दुखारा । CD प्यारा । D सुरा रा । AB है । D सुमार । 1C कुम्भ न । D रि । D कुमार । D मुन । C रा । D रा । 1 रा रा । AD है ।

नायिका वर्णन

दोहा

अटा चढी ब्रजनागरी, घटा निहारन काज ।
रतन जरत भूपन धरैं, करैं कसू मल साज ।।८६।।

पति अधीना नायिका वर्णन

सवैया

प्रान करी कुरवान सदा घनस्याम सुजान पिय पर हा री ।
जो उनकी मुरजी लख नन सु वन कहे जिहि चाल चलो री ।।
नैक हि बेर अवोल रहे तब खानन पान सबै बिसरो री ।
चाहत हा नित रीत यहे सुन री सजनी कछु झूठ न का री ।।६०।।

आगतपतिका नायिका को वचन सखी प्रति

नित कोकिल मोर सु सोर कर पपिया अति पीत वढावत है ।
घन घू मि रह्यौ जित ही तित ही चपला चहुँघा चमकावत है ।।

---

८६ B ब्रजनागरी । D बृजनाररी । D भुपन । ABC धरे । ABC करैं ।
D कसु मन । C राज ।

६० D करौ । D सूजान । D पीय । C हो । D हो । A ऊनको । D उनकि ।
ABC नैंन । D सू । AB वन । A जिंहि । D जाहा । CD चलोरी ।
ABC नैंक । D वर । D अवोन । ABC रहैं । ABC सवैं । BC विसरौं ।
D वीसरौं । D हो । D नीति । ABC यहै । D सू न । D सजनि । D झुठ ।
C कारा । D कौरा ।

फुरकैं चख दाहु अरी सजनी ब्रजराज सुरूप बनावत है ।
मनभावन आवन त जु अली यह सावन तीज सुहावत है ॥६१॥

विरहिनी नायिका को वचन सखी प्रति

स्याम बिना नरक सम प्रान विहान भयो अत क्या करि राखौं ।
हार दयो गु~ ~ागन का हग नाहिं लगै जा कौ अब धावौं ॥
प्रीतम सौ मिल~ ~ा ~च ही सब हा~ बनाइ सु देहुगि तोखौ ।
तीन बज जमुना तट पै वहै ~ै चलि री सजनी सुनि मोर्वौ ॥६२॥

गोपी प्रति गोपी वचन

बूझन हा सुन ~ी ~जनी ~हैं दय प~यो कपटी वह या~ी ।
भौ~ ही भौन मैं आन ब~यो अ~ मा~ बन्यो ब्रज मैं अति ~यारी ॥

६१ C जि~ । D न ठा । D कैन~ । ABC मार । D मू । ABC थार । C ~ि~ दा । ABC बनावन । A है । D घुम । D आठा । D C ३ । D ि~ । AD धन्य । D धन्दा । AD बमदावन । D बनदावन । A है । ABC हुरकै । D बा~ । D दरि । CD ~बताव । D वुबराब । D मू ~ब । AB धान्द्र । D मनवादन । D है । D दरि । D दै । ABC ~बन । D सुहावन ।
६२ AC बिना । D बिना । A न~ै । AC बिमान । D ब ~ा । ACD क्या । A दर । D दर । A रैन । C पोरै । D पोरी । D ~नो । AD हीन । BD को । C दा । AC ि । ACD न~ँ । A धैरो । CD धरो । D को । D दर । D हो । D ही । A ऊना र । D ~ा । D ~ । ABC दरूना । C ह रो । D नौरा । ACD न र । AC हर । D बजु नी । CD द । D बहै । D पहनि । A सुन । A मोरो । C मरो । D मरा ।

मानन नैक न काहु की कान सु ऐसो भयौ वसुदेव को प्यारो।
माखन ढौर मरौर गयो वर नदकिसोर है चौर हमारो ॥६३॥

परकीया प्रोषितपतिका को वचन सखी प्रति

कवित्त

जा दिन त स्याम को वियोग भयौ ए री भटू
ता दिन त तन मन धरत न धीर को।
जायक विदेस छाय रहे ब्रजराज अब
टारक गर म चल प्रम के जजीर को॥
निस दिन भौन हू में व्याकुल विहाल रहा
मस सहो घाव पचबान ही के तीर को।
एसो बल्बीर निरदई पिय मोहन है
नद को अहीर कहा जान पर पीर को ॥६४॥

---

६३ D बुभत। D फी। D मू नरी। D सजनि। B कहु। C कहू। D कहू। D कपटि। D हि। D म। BC सार। BC बुज। D बुज। D मती। ABC नव। D काऊ। D सू। D यसो। A भय्यो। A वसुदव। D वसू देव। ABD को। C प्यारा। ABC मापन। BC ढोर। BCD मरार। A गय्यो। BCD नदकिसार। D नदन्कासोर। BC चार। C हमारा।

६४ D ज्या। D दोन। D त। D स्याम। ABD को। A वियोग। D वीयोग। D भयो। D यरी। D भटु। D दीन। D त। D निर। D को। CD के। BC विदस। D वीदेस। D रये। BC बृजराज। D बृजराज। D क। D गने। C म। D म। A जजीर। D को। D नीसदीन। D भौन। D हू। D म। BC व्याकुन। BC विहाल। D वहान। C रह्यो। D रहो। D वस। D सया। D हू। D के। D को। D दमे। A वनवार। A निरदई। D पीय। A मोहन। D हे। APD को। D प्रहिर। D जान। D क।

दोहा

दरस बिना मुनि सावरे, विकल भई ब्रजबाल ।
छिन डोले सकुचे छिनक, रह्यो न तन मैं हाल ॥६५॥

ब्रजपति बिन छिन पल घरी, बरष बराबर जात ।
मनमथ के सर विषम अति, तन पै नाहिं समात ॥६६॥

प्रोषित तथा विरही नायक

कवित्त

नींद हू न आवै नैन चैन हू न परै रैन
बिसरे न जात हाव भाव वै गुमान के ।
चंद सी वदन सुभ भौहैं धनु चाप जैसी
खंजन से नैन किधौं बान पचबान के ॥
भूषन जटित अंग अंबर जरी के नीके
समता न पावै रति रंभा नैन आन के ।
विरह वियोग रोग तन मैं अनंत भयो
सुनी रैन रैन प्रान प्यारी वा सुजान के ॥६७॥

---

६५ B बिन । D धरस । D मुना । D सावरे । BC बिकल । D बीकल । BD ब्रजबार । D बृजबाल । D छन । A डोलै । D डोलै । D [illegible] । C स । D स ।

६६ B ब्रजपति । D बृजपति । BC बिन । D बीन । D छन । D घरी । BC बरस । D व । D सार । BC विसम । D बनमथ । D दुजा । D सीन । D प । D सा । BC समात । D समात ।

६७ D न । D नैन । D हू । AB बिसर । D बासर । D [illegible] । ABC के । ABC के । D गुन । D सोहै । D [illegible] । D स । ABC नैन । A किधौ । D [illegible] । ABC के । D [illegible] । D नीके । D समता । BC पावे । D [illegible] । D रंभा । ABC नैन । ABC के । BC बिरह । D [illegible] । BC बियोग । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D सुनी । ABC रैन । D [illegible] । D सुजान । ABC के ।

चद ही त नीको मुख जीवन है जी को वहि
        अम्रत से वैन नैक सन ही मैं कै गई।
सु दर किसौरी अलवेली सुकुमार अग
        मेर तन मन का वियोग विथा दै गई॥
अति ही सुजान गुनखान पिय प्यारी विन
        कते दिन रात विन देखे हू वित गई।
र गई मिलाप ही की आस अव जिय ही म
        मैन कौ मरोर चोर प्रान तिय लै गई॥९८॥

प्रोपित नायिका को मानसिक विचार

चद ही सौ आनन चपल नैन मीन जसै
        सौधै त सवारे वार माग मुक्तान की।
भौह पचवान के सु चाप ही त राजै वक
        विंवफल की सी छवि औप अधरान की॥
जा दिन त प्यारी कौ वियोग भयौ मोसौ वहि
        ता दिन त भूल्यौ सुधि खान अरु पान की।

---

९८ D त। C नाका। AB हैं। D हि। AB वहि। C वह। BCD म मृत। D स। ABC वैन। ABC नैंक। BCD सैंन। D हि। D म। D कं। D सु न्दर। BCD किसारा। D कीसोरी। AB अलवली। D अलवली। D सु कु मार। ABC मर। D की। A वियोग। D वीयोग। BCD व्यथा। D द। A मत। D हि। D सु जान। D गु नखान। D प्रीय। D वान। ABC वन। D दान। BC विन। D वीन। AB दर्ल। C दखें। ABC हु। BC रितैं। D वित। D र। D मीलाप। D हि। D हि। D हि। C म। D म। ABC मैंन। D की। AD मरार। AD चोर। D ते।

मद मुसक्यान या सुजान हू की त्यौं बन
प्रान हू त वल्लभ किसोरी व्रषभान की ॥९९॥

प्रोषित नायिका सो स्वप्न दर्शन वारी वचन मन प्रति

जा दिन त प्रान अकुलावत ह कहा कहा
औ न उपाय बाल जात न कछू कई ।
सुपन म भान की कुमार मुसकाय नय
कहा जानी कौन ठौ छिपक किनै रई ॥
तन मैं न चैन मैन मारत है दाव कर
हाय यह मारौ पिया जान न गती मई ।
गई सब भाग ही की दई हू सिनारौं अब
चदमुखी नैन की मिलाय क तिन गई ॥१००॥

९९ D [illegible] । AIC मैन । D मैन । AIC मान । D मोय । D ज । A [illegible] ।
D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D सू । D कि । D [illegible] । A दर्द ।
D [illegible] । [illegible] । D कि । FC [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । D [illegible] ।
D कि । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । A किशोर । D [illegible] । FC [illegible] ।
D [illegible] । D [illegible] । AID ज । D [illegible] । D [illegible] । [illegible] । D [illegible] ।
D [illegible] । AFC [illegible] । AD [illegible] । D [illegible] । AD [illegible] । IC [illegible] ।
D [illegible] । D कि ।

१०० D [illegible] । AF [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । D [illegible] । AB [illegible] । D [illegible] ।
[illegible] । D [illegible] । D [illegible] । [illegible] । AIC मैन । D [illegible] ।
AIC [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । [illegible] । AB [illegible] ।
[illegible] । D [illegible] । D [illegible] । [illegible] । D कि । D [illegible] । D [illegible] ।
D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D कि ।

पद-माधुरी

राग लूहर्‌यो सारग

राधजी म्हारो मन वस कीनो हो
हो जी म्हारी प्रान री प्यारी राधे ।
रूप अनुपम सुंदर अत ही अंग अंग भीनो हो ।
श्रीव्रजराज सुजान सनेही वचन अधीना हो ॥१॥

केसरियो सु बर मिलमान छै रंगभीनों लाडी ।
आतर [illegible] सज साज बनावो अतर अरग अर पान छै ।
गिरधर स्याम सुजान रंगीलो नंद महर का लाल छै ॥
श्रीव्रजराज विनोद मनोहर आनन्द हू का प्रान छै ॥२॥

---

१ A C राधे । A [illegible] । C [illegible] । D बस । C बसि । A C [illegible] । A C हो । A C [illegible] । A [illegible] । D प्रान प्यारा । A C राधे । D [illegible] । D [illegible] । D भीना । D C हो । D सुवराज । D सुजान । D सनेही । D C वचन । C [illegible] । C हो ।

२ D C [illegible] । D [illegible] । D सुबर । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । D C सुजान । D सुजान । C [illegible] । A D [illegible] । C D सुवराज । A C [illegible] । D मनोहर । D [illegible] । D [illegible] ।

ख्याल राग श्रडाणो

स्याम तुम घर घर हू के मीत
निस औरें भौर श्रौरन के ऐसी है नित रीत ।
सौहे खाय दिखाय दया मुख करत फिरत हो प्रीत ॥
तन मन की हमको अब गिरधर जान परी परतीत ।
श्रीव्रजराज कहाये व्रजपत ऐसी करत अनीत ॥३॥

राग श्रडाणो

हे री सुन क्यो अब मौन गह्यो री ॥ टेर ॥
बेर बेर मनुहार करी पिय बचनन नाहिँ चह्यो री ।
रुठ चले घनस्याम पियारी अब कछु नेह रह्यो री ॥
चल मिल ल गिरधर सो हली मेरो मान कह्यो री ।
श्रीव्रजराज वियोग तिहारो कबहुँ न जाय सह्यो री ॥४॥

ए री मेरे उर बिच दरद भयो री ॥ टेर ॥
अगियन मैं कुच बढन लगे अत यो कछु रोग नयो री ।

---

३ D तुम । D हू । D क । D मीत । D नीस । C श्रोरें । D श्रौरें । C श्रारें । D भौरें । AD क । D कँ । D नीत । D रीती । D सौहैं । C सौहैं । D दाखाय । A दय्या । D करत हो प्रीत । C ह्रो । D हमको । C हमका । D गीरधर । D परि । BCD वृजराज । C कहाये । BCD वृजपत । D प्रनित ।

४ D होरी । C क्या । C मान । AB मौंन । BC गह्यो । D वरवर । D मनु हार । D करि । D पीय । D नाही । LC चह्या । ABC चले । D पीय्यारा । D नह । BC रह्यो । D मान । D गारधर । C सा । D सौ । मेरो । AC कह्या BCD वृजराज । A वियोग । D वियोग । C तिहारो । D तारो । D कब । A जाहि । BC जाहि । C सह्यो ।

नैन लजात गात अरु कंपत बचन न जात कह्यौ री ।।
श्रीव्रजराज प्रिया के तन पै मदन निसान दयौ री ।।५।।

राग सोरठ

अरज करां छां म्हारा मैल्हा आज्यौ ।
चरणा री दासी साहीबा जनम जनम री
आप पिया सौ प्रीत निभाज्यौ ।
श्रीव्रजराज सुजाण सनेही नेह करि न दरस दिखाज्यौ ।।६।।

हमकौं बिसरि न जावौ जोग ।। टेक ।।
जा दिन तैं बिछुरे हो गिरधर ता छिन त तन रोग ।
काजर तिलक तमोल तज यह बिरह गई सुख भोग ।
श्रीव्रजराज निठुर तुमकौ अब हँसत सबै व्रज लोग ।।७।।

---

५ D भरे । D मैंघे । A डर । D कांप । IC हिय । IC भयो । D व्रजनृप । C प । D भ । A स्यो । ID सी । A तोन । D नयो । C न्या । A मैन । IC नैंम । D गात । IC कमा । ICD व्रजराज । D पैमा । D व । D प । D मीन म । IC न ।

६ D हरां । D मै.. । D आज्यो । AIC म्हारा । A साम्वा । IC साहि । D सभाज्यो । ICD व्रजराज । D सुजाण । D सनेही । D नेह । D दिखाज्यो ।

७ D हमको । D बिसरि । D जावो । D जोग । D जा । D दिन । D त । D बिछुरे । CD बिछरे । IC हो । D गिरधर । D ता । D छ । D छिन । A तनरोग । IC कमल । D तज । AD यौं । ICD व्रजराज । C सुनत । D तुमको । D सबै । ICD व्रज । D लोग ।

गिरधर दोस नहीं प्रभु तौ मैं ॥ टेक ॥
निसदिन तौ हू करत अविद्या क्ब ही नाम न लौ मैं ।
भाव तौ दुख सुख दौ मोहन सीस नवाय महौ मैं ।
मेरी तौ चित करनी न धारौ केते करम करौ मैं ।
श्रीव्रजराज सदा गुन तेरौ सब औगुन है मो म ॥८॥

रे करम म लिखियौ नाहिँ मटै ॥ टक ॥
हान लाभ जस अपजस सपत तिल भर हू न घटै ।
सुख ही म ग्रधव सब ही जन वासौ दुख न बटै ।
दीनदयाल सहायक गिरधर नितप्रत क्यौ न रटै ।
श्रीव्रजराज समर मन रे तूँ समर पाप कटै ॥९॥

राग सोरठ मलार

चढि आयौ मनभायौ सावन आवन क्यौ न विचारौ ।
म्हारा राज ॥ टेक ॥
पिउ पिउ पिउ पपईया बोलै लागत सोर अकारौ ।

---

८ D गीरधर । AD दौस । D नहि । BC ता । D मे । D दीन । C ता । D अवाद्या । A कब हौ । [illegible] कबहि । C ना । C म । D म । C तो । D सूख । C दा । AD मौहन । D महौ । D मे । CD सो । CD धारा । CD करो । C म । D म । BCD बृजराज । D गुना । C तरा । D तरा । D ग्रोगु न । C है । D हैं ।

९ D म । AD लखीयौ । C लिखियां । D ना । । D मट । D तौन । D हू । D मू ख । D हि । A। C म । D हि । C वासा । D कासौ । D व" । D दीयान । D साहाय करा । D गारधर । D नाति । D प्रत । D क्यौ । D टर । CD बृजराज । D समुर । [illegible] समर । D ममर ।

उमड घुमड घन बिजुरी चमकै बिरम करै क्यां मारो ।
श्रीव्रजराज किसोर कृपाकर अब तो वेग पधारो ॥१०॥

ख्याल राग सोरठ मलार

हेली म्हारा मैल्हां आवसी है म्हारो बेसरियोजी
परम सुजान ॥ टेक ॥
नदिया तो सरवर भिरो है हलधर भरिया निवान ।
दादुर मोर पपीहा बोलै घन छायो असमान ।
अब चढिया गढिया हासी है पीह उगतै भान ।
अन्तरियामी पिय आवसी जी बाट माईला मोहे नादान ।
आगतडा थे करज्यो बेंधाज्यो गाज्यो मीठी तान ।
श्रीव्रजराज किसोर करो अब करसो बचन प्रमान ॥११॥

राग मलार हिंडोरो

हींडार चल राजे नन्दकुमार झुक झुक अग मिलाय ॥ टेक ॥
उमड घुमड घन बरसत बृन्द चमकत बीज अपार ।

---

१० A [illegible] । C [illegible] । C [illegible] । BC [illegible] । C [illegible] । C [illegible] । A [illegible] । A [illegible] । BCD [illegible] । A [illegible] । AD [illegible] । C [illegible] । A उमड । A घुमड । A [illegible] । C [illegible] । [illegible] । BC [illegible] । BC करै । C [illegible] । BCD कृपाकर । C [illegible] । A [illegible] । C [illegible] । BCD [illegible] । C [illegible] ।

११ ABC [illegible] । C [illegible] । D [illegible] । C [illegible] । D [illegible] । C [illegible] । A [illegible] । CD [illegible] । AD [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । A [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । A [illegible] । A [illegible] । A [illegible] । C [illegible] । A [illegible] । C [illegible] । A [illegible] । C [illegible] । A [illegible] । AC [illegible] । C [illegible] । A [illegible] । B [illegible] । C [illegible] । AB [illegible] । C [illegible] । ABC [illegible] । BCD कृपाकर । BCD [illegible] । C [illegible] । A [illegible] ।

चदमुखी बनिता चिहुँ ओर गावत राग मलार।
श्रीव्रजराज प्रिया की छवि प तन मन धन बलिहार ॥१२॥

राग ठुमरी हिंडोरो

मोहन झूलत रग हिंडोर सग भाननदिनी जोर ॥ टेक ॥
दादुर पिकहि पपीहा बोल मोर कर अति सोर ॥
रैन अँधेरी बिजरी चमकै और घटा घनघोर ॥
श्रीव्रजराज प्रिया मनभावन सौतन को चित चोर ॥१३॥

राग यू ड मलार

हे री अब बरस बरस बदरिया ॥ टेक ॥
अपनी पिया अपनै घर आये री हे री तन मन के कारज सरिया।
हरिया गिर हरिया द्रुम बेली सर सलिता सब भरिया ॥
श्रीव्रजराज सुजान सुघर री हँस मिल आनद करिया ॥१४॥

---

१२ AB हाडोर। D हीडोरे। A नदकु वार। D नदकुवार। A ऊमड घुमड। BC उ मड। BC घु मड। D झून्न। BCD वनिता। D चिह। C मोर। BCD वृजराज।

१३ A मोहन। AD हिंडोरैं। C हिंडोर। ABC भान। D नदनी। A जोरैं। BC जारे। A पिकही। D पिक पपोहा। AB बोरैं। C बोन। A मोर। CD कर। AB सोरैं। AB बीजरी। AB घोरैं। C घारैं। BCD वृजराज। ABD की। AB चोरैं। D चोरे।

१४ BCD बरस बरस। A बदरीया। D वदरिया। D अपनों। A पीया। A सरीया। A हरीया। A द्रुम। BC बनी। D सलता। A भरीया। BCD वृजराज। A हसमिलक। D हस। BC आनद। A करीया।

राग धनासरी

हे री म कैसे धरू जिय अकुलाय उर मैं नाहिँ समाय ॥ टेक ॥
माधुरि मूरत चित चित बस गई टारी टरिहु न जाय ।
धीर समीर तीर जमुना प मुरली तान सुनाय ।
जब त स्याम लिख्यो तब हो त निसदिन कछु न सुहाय ।
श्रीव्रजराज मिलाव सखी री तेरे परिहूँ पाय ॥१५॥

राग सहाणो

ह री बिन कीनो कहा स्याम सलोना ॥ टेक ॥
कागद दस पढ़यो कछु मनर पटि दीनो मोपे टोना ।
दिन नहिँ चैन रैन नहिँ निद्रा कम पीर सहोना ॥
चित ललचाय चल्यो मनमोहन नद महर को छौना ।
श्रीव्रजराज बिसासी सौं हा कबहू प्रीत करौंना ॥१६॥

राग बिलावल (बधाई)

नद महर घर बजत बधाई ॥ टेक ॥
धन स नाद निसान धुरै री भेरी पिनाक बज सहनाई ।

---

१५ A कैसे । B कैंसे । A उर । BC स । D नाहिं । A माधुरी । BCD मूरति । D स । AD कै न । D न । A तीर । A लो । D लख्यो । D हु । BCD बृजराज । BC री । A पर ।

१६ D सलोना । A कागद । C पढ्यो । CD मोपै । B मनैं । C टोना । D दीनों । A [illegible] । ABC चैन । ABD रैन । D चैन नहिं । A नहिं । A निन्द्रा । A सलोना । C सहोना । D सहोना । BC चल्यो । A मोहन । ABD को । C छौना । D छौना । BCD बृजराज । BCD बिसा सी । A सौं । A करौंना । C करौंना ।

मजन कर सिंगार सजे तन ग्रह ग्रह त गोपी मिलि आई।
आनँद मगल सज्जन के चित असुरन के हियाम दुखदाई।
श्रीव्रजराज भय तव व्रज म मानो रक महा निधि पाई ॥१७॥

राग काफी

रग हिंडोर वहँ झूल नदलाल हो ॥ टेक ॥
नदनदन सग भाननदिनी चदमुखी मव गाव व्रजवाल हो।
उर सो उर मुख सौं मुख मोहत पचसरी उरझी वनमाल हो ॥
श्रीव्रजराज किसोरी नागर दोउ परमपर होत निहाल हो ॥१८॥

राग काफी (वधाई)

ए री हा अति आनद भयौ ए री हा अति आनद भयौ।
हरि जनम री हरि जनम चलि दरम करी यह छन म।
सव गावौ री मव गावौ दुरवा लै कलम वधावौ।
सव मगल नाम सुनावौ ह री तुम मु ह मागी साई पावौ।
धन भाग पिता महतारी ह री ग्रह प्रगट देव मुरारी।
प्रभु जनम लियो यह कारन ह री यह भू को भार उतारन।
अघ टारन री अघ टारन कमादिक असुर सघारन।
यह गोपिन को मुख देवन अधरामृत का सुख लेवन।

---

१७ A घर। BCD धजत। BC वधाई। BCD धुर। A स्यगार। A गौपी AD मिल। LCD मान॰। BCD बृजराज। BCD भय। BC बृज। A निध।

१८ C हिंडोर। BD हिंडौरै। BCD वह। BCD झूल। A नन्दलाल। ABD नन्दा। CD गाव। D बृज। A उर। A उर। A मोहत। A उ झी। BCD वनमाल। BCD बृजराज। BCD किसोरी। A दोऊ। BC दोउ। A हौत। C हो।

यह ब्रजजन चित सुखदाई ह री मनु रच महानिधि पाई ।
यह श्रीब्रजराज सु वारी मेरो तन मन धन बलिहारी ॥१९॥

राग जैजैवंती

ए री मय की कही री तोको मेरी सुनि कान दै ॥ टेक ॥
भौंह मा चढ़ाय उठी एती गीम जान दै ।
नद मा जलग्न उनी तेरे वारन प्रा दै ।
श्रीब्रजराज पिया सो मिलत तेरो तन कुरबान दै ॥२०॥

राग गुनायती

राधारानीजी ग रायन मनहिं हर मनमोहन रूप निहार हूगी
॥ टेक ॥
रजन मीन चकार कुरग नव नि लगि लाज मरै ।

---

१९ D यही । C मथा । AB मे । C म । D दुरबा । C बधावो । AD नाम । C गुनाको । D रो । ICD मु । CD मारो । A होई । DC ह्नार । A माध्यो । C लिया । D साधो । A रू । A को । A मिथारन । A यह । IC पूब । A मनु । A मनिम्य । A द । A गोविन । AB को । AD को । A यह । IC ब्रजराज । CD मरा । D प्रन्तु अन्य लिया दह चारन के बाद का पाठ इस प्रकार है—
॥देहा॥ यह सुख ब्रजन चित सुखदाई ॥ ९ ॥ मनु रच महानिधि पाई ॥
यह गोविन को रस रसन रूपराजन को रस मगन ॥
यह ॥ ब्रजराज सु वारो मेरो तन मन धन बलिहारी ॥

२० D कही । AB सुन । D ै । C ह ब्रजराज नैना वारा मेरा सुन मन द । D भौं । AD को । D द न । AD को । C चलबला । D चलबेलो । C नैनी । IC नरे । ICD ब्रजराज । C सो । ICD न । ICD मरा । D है ।

रगरसियो गिरधर वसि है नित हुक्म अधीन फिर ।
श्रीव्रजराज किसोर कुंवर हित पल पल ध्यान धर ॥२१॥

थारा मल्हा आव छ ह केसरियो जी आज ॥ टेक ॥
नखसिख भूषण अवर सुंदर करोजी अमोलख साज ।
रगभीनो रसियो वस तौसू सरब सुधारन काज ।
धन धन भाग सुहाग सु तेरो वर पायो व्रजराज ॥२२॥

राग पूरवी

लाडी थार हे अँखियन म अनुराग ॥ टेक ॥
तन मन सौ वसि ह गिरधर पिय नित प्रति अचल सुहाग ।
औरन सौ मिलवे हसिवे की छाडि दई सब लाग ।
श्रीव्रजराज किसौर कुंवर सो बर पायौ बड भाग ॥२३॥

राग परज

आव छै आवै छै अलवेली ह सहेली हे गिरधर प्रीतम पामणा
॥ टेक ॥
कौल निभासी चढ खड आसी आज हुवा छै मनभामणा ।

---

२१ AD रानी । D मोहन । C निहारे । A बकोर । C मर । A रसीय्यो । BC रसियो । BCD वृजराज । D कुंवर । C म तिम पक्ति बसि है नित पल पल ध्यान धरे ।

२२ D पाहूरा । C मेला । C ग्रावे । C छ । BCD है । A कमरायो । BC कमरियो । D सुन्दर । ABC करो । A मानो । AD रमायो । C तो । ABC मु । C तरो । ABC पाया । BCD वृजराज ।

२३ C थारे । ABC है । A म सियन । C म । C सो । BCD वसि । C प्रारन । *C सा । A मिलन । D मिलन । A हसिवे । D हमन । । CD व्रजराज ।* BCD किसोर । BCD कंवर । AC सो । D बर । C पायो ।

बरसस बधाज्यो ले भट आज्यो गाज्यो हरख बधावणा ।
ममद निछाज्यो सेज बसाज्यो चहुँदस अतर लगावणा ।
दादुर मोर पपीहा बोलै लागत परम सुहावणा ।
श्रीब्रजराज सुजान कुंवर को रगमहल पधरावणा ॥२४॥

राग कल्याण

नद के नदन अति सुख के सदन तुम
दुख के कदन दया दिल प धरोगे कब ॥ टेक ॥
म तो हू अनाथ नाथ गहो मेरे दोऊ हाथ,
लैहो अपनाय पीर चित्त की हरोगे कब ।
तार्‌यो ग्राह ग्रीव गज नाम हू को नेम पार्‌यो
करुनानिधान मेरी करुना करोगे कब ।
व्रज के सु राज धीर एहो हरि बलबीर,
निन्द विचार स्याम जिन त्रिभगीग कब ॥२५॥

राग गौडी

भला प्रसीवारे जानी लगी प्रीत ॥टेक॥
सोहैं गाम नजाय रहा नित उमी पर गई रीत ।
श्रीब्रजराज सुजान पीतम तुम निमर एक ये मीत ॥२६॥

---

२४ C [illegible] । C [illegible] । C [illegible] । D [illegible] । C कौन । ICD [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । B [illegible] । C बधाज्यो । C [illegible] । C [illegible] । IC [illegible] । D [illegible] । A [illegible] । [illegible] । AD [illegible] । A [illegible] । ICD कुंवर । D [illegible] । B [illegible] । C [illegible] । [illegible] ।

२५ AD [illegible] । C [illegible] । CD [illegible] । IC [illegible] । AIC [illegible] । AD [illegible] । D [illegible] । C गहो । AD [illegible] । C [illegible] । ICD [illegible] । ICD [illegible] । D [illegible] । ICD [illegible] । ICD [illegible] । C [illegible] । D [illegible] ।

२६ A [illegible] । C [illegible] । AIC [illegible] । ICD [illegible] । IC [illegible] । D [illegible] ।

राग पजैवती

देखो भीलनी के चाखैं वोर पाये रघुवीर न ।। टक ।।
प्रीत की हे रीत न्यारी मन की लखैं वो सारी ।
भाव ही के भूखे स्याम जान ना अमीर न ।
गज ग्रीध ग्राह तार्‌यौ रिख तिय श्राप गार्‌यौ ।
गोह कौ विचारयौ मित्र सग लीहा'कीर न ।
इन कहा कियो जप कवहू न मह्यौ तप ।
हर वो विहारी व्रजराज पर पीर न ।
मीरा जू को भात करमा को खीच खायौ ।
देखो भीलनी के चाखैं वोर पाये रघुवीर न ।।२७।।

राग जगलौ

हे री वह सु दर स्याम सुजान प्रीतम सौ हित कर मिल ल री
।। टेक ।।
विन अपराध मान कर वैठी तेरो कसो हठ है री ।
श्रीव्रजराज पिवाय अधर रस जस मोका द री ।।२८।।

---

२७ C देखो । D क । ABC चाख । BC रघुवीर । A पीत । A हैं । D हे । ABD को । D भूख । BC जान । D जानैं । D ना । ABC ने । A गाप । D ग्राप । A गाह । BCD विचारयो । A यन । A कायो । ABD को । D विहारा । BCD वृजराज । ABD को । A वोर ।

२८ D सुन्दर । D सो । D मन । BC विन । ABC मान । D करि । C तेरो । ABD वैसो । A हैं । BCD वृजराज । BC मोकों । [illegible] दरी ।

कीनें बरमाये ए री सावर की ॥ टेक ॥
भोर भयो सिगरी निस बीती अब हू घर नहीं आये ।
या ब्रज की त्रिय बस कर राखत जिनके रूप लुभाये ।
वा बिनु प्रान भयो अत व्याकुल उठ सजनी लो जाय ।
तन मन धन वारों मैं तोय श्रीव्रजराज मिलाय ॥२९॥

राग बिहाग, [illegible], बिलावल

गिरधर क्यों न गहो कर मेरो ॥ टेक ॥
दीनदयाल महाप्रभु निज हौं मैं चरनन को चेरो ।
दुसट दलन अनाथन को तुम रच्छो अब मेरो ।
काम क्रोध लोभ मद मच्छर उनकी आन लग्यो चित घेरो ।
श्रीव्रजराज सरन मैं आयो सरनागत बछल बिरद तेरो ॥३०॥

राग सोरठ

टौना कहा कीनो है रगभीनो राजे मन्दिर गुमान म्हारी आली
॥ टेक ॥
निसदिन प्रान रहें व्याकुल हो हूँ गो तैन पछु दीनो है ।
तेरो दरस बिना बिनु सजनी छिन में अति छीनो है ।

---

२९ A1C [illegible] । A1D बरमाये । D [illegible] । A भोर । C भयो । D नहिं । A [illegible] । ICD [illegible] । IC बिनु । A1D भयो । ICD [illegible] । A [illegible] । D [illegible] । 1C [illegible] । D [illegible] । ICD [illegible] ।

३० D [illegible] । C [illegible] । C [illegible] । A1D [illegible] । C [illegible] । ICD [illegible] । C [illegible] । C [illegible] । A1C [illegible] । A [illegible] । A [illegible] । D [illegible] । ICD [illegible] । A [illegible] । D [illegible] । C [illegible] । ICD [illegible] । C [illegible] । A1C [illegible] । [illegible] ।

पिय मनमोहन ये मनभावन हुक्म अधीनो है।
श्रीव्रजराज कुवर की हेली तन मन हर लीनो है ।।३१।।

गरबी

रूडी भली रलीयावणी जी रे
    आली जमुनाये तीर सुहावणी जी रे आली।
नसन जी नो या नित आवणो जी रे
    मधुरी सी मुरली वजावणो जी रे।
हियै सोचे घणू ने कलपो घणी जी रे
    नणे लाधो नथी व्रज नो धणी जी रे।
रैन आधी रही न चदो ढल्यो जी रे
    मोन नदजी नो नद नथी मल्यो जी रे।
मोथी भूठो थयो वलमे रयो जी रे
    कभै अेटलो दुस नथी सह्यो जी रे।
सखी घोअे उपाय करया थकी जी रे
    साम आव नथी तो जावो मुकी जी रे।
सखी वात कर वसो वजी जी रे
    सरवै दुस नी जाल त्या थी भजी जी रे।
वान मार्थं मुकट लकुटी लीये जी रे
    वछे नट नो भेस भलो गीये जी रे।

---

३१ C टोना। D टौंना। C कीना। D कीन। C हा। D रगभर। BCD करकें। ABC मारा। ABD र३। AB तैंनें। C तनें। D दीनों। AB ह। D हैं। A कार्यं। D क्रियैं। AB छानो। D छोरों। AB है। D हैं। A मोहन। A अ। C मधोना। AB ह। D हैं। BCD वृजराज। AB हे। D हैं।

ऐते श्रीब्रजराज सु आवीयो जी रे
मानु रके महानिधि पावीयो जी र ॥३२॥

राग सारट

मावरी पीतम प्यारो नगगारो है ॥टक॥
देग सखी मेरो मन हर लीनो नद को कामनगारी ।
बिनु देखें छिनु कल न परतु है कमे धरिय न्यारो ।
श्रीब्रजराज किसोर कु वर री जीवन प्रान हमारो ॥३३॥

राग मलार

ह री ए री पिय कब आव गे दादुर बार डराव ॥टक॥
उमडि घटा चढिक चलि आई चपला चित चमकावे री ।

---

३२ ICD नहो । A राझ्यावणा । D रीझावणा । ABD रै । BD रैं । AD न । D नो । A व्या । D मावणो । ABD र । A मपुरा । A बजावणो । BD बजावणो । ABD र । AD ह्५ । AB मोन । D पगुँ । AB न । D नैं । ABD बन्नो । D र । D नेणैं । ABD लाषो । ICD ब्रज । AID नो । A पणा । ABD रै । AD रैन । ALC पगे । ABD हामो । AID ५ । A मोन । ICD नो । ABD मन्यो । AID र । ADC मन्दी । A म्यो । D कुरा । A रम्यो । BCD र । ABD घैटनो । AID रै । AD उमाव । ICD रै । D आयो । D रै । C परै । AID रै । D मरैं । D मना । ABD रै । AIC मान । ICD मावँ । IC रिद । ABD रै । AB नाँ । B नम्यो । D महयो । ICD मनो । ACD रै । AB कहै । D प ग । IC बृजराज । D बृजराज बावजो । ABD रै । AIC मनू । D रैन । A महानिध । C पावारा । AID र ।

३३ C म रो । AIC प्यारा । C नगधारा । AID ह्र । ICD सखा । C म नो । D म नो । AID यो । BCD कामनगारो । ABD रवैं । A बिन । AD है । AID बैरे । A कहिये । ID कहिये । C नारा । ICD बृजराज । ICD किस र । D वरर । AIC प्रान । C हमारो ।

गिरधर स्याम विना मुन सजनी तन मन अति दुख पावै री ।
है कोऊ ग्रैसो सन हमारौ श्रीव्रजराज मिलाव री ।।३४।।

राग सोरठ

पिय सौं मौन न लीजिय री गौरी,
चढ कर आयौ घन मान मिटावन ।।टेक।।
रूप जोवन धन दिवस च्यार को बिन अपराध न छीजिये ।
दादुर मोर पपीहा बोलत धुनि सुनि अब चित दीजिये ।
श्रीव्रजराज पिवाय अधर रस हुकम अधीनौं कीजिये ।।३५।।

राग कानडौ

बूडत सिंधु गयद बचायौ ।।टेक।।
रसना राम नाम को लेत मारयौ ग्राह गजद्र छुडायौ ।
दीन पुकार सुनी जब गिरधर दीनदयाल पयादौ धायौ ।
कमला छाड छोडक खगपति देर भई तब चक्र चलायौ ।
श्रीव्रजराज सहायक है नित सुर मुनि आदि सब गुन गायौ ।।३६।।

---

३४ BCD मावे । A मौन । A ऊ म॰ । BC उमड । CD चढिक । A आंई । B चमकाव । A सुनि । ABC मत । BCD पावे । AB कौऊ । D कोउ । ABD अ सो । C हमारो । BCD बृजराज । BCD मिलावे ।

३५ D पीय । BCD मान । A लीजियें । D गोरी । C मन । A जोवन । ABD कौं । A मौर । A बोनत । BCD धुन । PC सुन । C अ – । A दीजियें । BCD बृजराज । ABC अधोनो । A काजियें ।

३६ BCD बूडत । D सिंधू । C वचायो । D रसना । ABD कौं । AB नेतें । C नन दान दयान पयादौ धायो । D सत । A दीन दय्याल । B दान दयाल । C गिरधर मारयो ग्राह गजेन्द्र छुडायो । A पय्यादौ । CD क । D बृजराज । CD ग्राह । C सब । D पायो । A आ व्रजराज गुन गायो पंक्ति नही ।

राग बिहाग

बृंदाबन लागी भावनियारी ॥टेक॥
उमड घुमड घन गरजत आयो उर बिरहागन जागी ।
पीतम स्याम बिदेस बिलंब रह भूलि गय अनुरागी ।
श्रीब्रजराज सखी री मोंनो मन मिल है बडभागी ॥३७॥

राग भैरवी

ऐ री म्है बन्सी बजन लगी बाज रही री ॥टेक॥
मन दई बन में बनमाली बंसन जमुना तीर बही री ।
श्रीब्रजराज बिना मैं व्याकुल चित की पीर न जात कही री ॥३८॥

राग धनासरी

गिरधारीजी थारे की मोह लगी ॥ टेक ॥
चित गोकुल मथुरा बृंदावन चित चाहे ज्यां फिरी ।
थारे री रहिया नहिं मानत अब क्यों पाय परी ।
श्रीब्रजराज नवर तुम नागर नवरंग नार बरी ॥३९॥

---

३७ C बृंदे । A भांवनीयारी । D म बन लागा । A उमड । BC गरजंद । AC घुमड । D घुमड । A गरज्यो । C लागा । A उर । A बिरहागन । BCD मन । ACD बृजराज । BD मेरो । C मन । C है ।

३८ D ऐ री । A म्है । C बजै । B जमना । BCD बृजराज । D बिना । CD व्याकुल । D व ।

३९ A थारे । A को । AC करो । A गोकुल । BCD बृन्दावन । A थारे । A [illegible] । A करो । C फिरे । ABD को । AB कहि को । C परो । CD बृजराज । A नागर । D करो । C करो ।

पराई पीर न जानत स्याम ॥ टक ॥
पहिल तौ रस वस कर लीनी पीछ कौन काम ।
मेर तौ तुम हौ मनभावन है तुमको वहु वाम ।
गरज सरी ब्रजराज तिहारी कबहू लौ नहिं नाम ॥४०॥

राग केरवौ

हे कजरार ननौवारी हे री मौप कहा ठगौरी डारी ॥ टेक ॥
रग सुही को लहँगा पहनें हे री तेर सीस पिरोजी सारी ।
तो बिन चित ही रहै अति व्याकुल ह व्रपभान दुलारी ।
श्रीव्रजराज पियारी तौप प्रान करौ वलिहारी ॥४१॥

राग पट ताल जलदी तेतालौ

कैस जाऊ कस जाऊ जमुना तीरैं ठाढो नटवर छैल अहीर ॥ टेक ॥
काहू की वो सक न मानत भरन न देत अली अब नीरैं ।
नैन मिलाय सग सग धावत नैक ही चित म धरत न धीरैं ।
श्रीव्रजराज विलोकत ही सुनि वस कर डारत है बलवीर ॥४२॥

---

४० C ता । BCD वस । A पाछैं । A कौनैं । AD काम । C तो । C हो । ▪ तुमका । BCD धाम । BCD बृजराज । ABD लो । D नहिं ।
४१ D है । ABC कजरारे । C तावारा । CD मोप । C ठगोरी । D की । C लहगा । D लन्गा । BC पहन । C तर । BCD बिनु । AB रहैं । BCD बृजराज । CD ता ।
४२ ▪ जाऊ । D जावू । C जाऊ । D जावू । A तीरैं । D ठाऱ । A सो । BC यो । C मजो । A नारैं । ABD नैंक । BCD बृजराज । A विलोकत । BC सुन । A हैं । A बनवारैं ।

राग बिलावल ताल जपदी तेतालो

मोरपखवारो अत है नखरारो स्याम सुंदर जी नंद दुलारो ॥टेक॥
टेढ़ी चितवन मोहे मन कों जमि बजावै वो मनवारो ।
कोट मदन छवि जिय को जीवन रूप उजारो ।
ऐसो मन कहा घट दीनो रोम रोम अति कपट न्यारो ।
श्रीब्रजराज वा रूप रसी वस मेरो अति ही प्रान पियारो ॥६३॥

बसौ ब्रज ही जमुना तीर ॥ टेर ॥
तीखी तान सुनी री सजनी जब ते उर में है अन पीर ।
टेढ़ी चाल चले वो गज सी सुंदर प्यारो स्याम सरीर ।
श्रीब्रजराज मोह लई मोको डार गर निज प्रेम जंजीर ॥६४॥

ख्याल जंगला री रमत

छलबल जानत हो तुम जादौ जिनकी बस्यो ब्रज वनिता री ॥ टेर ॥
दरस बिना चाहूँ ता मन है सबर न औरे निसा सी ।

---

६३ [illegible]

६४ [illegible]

वस करिक गिरवर प्रीतम अव भूलि गये सुधि वाकी ।
श्रीव्रजराज सुजान कु वर को पतिया लिख लिख थाकी ॥४५॥

राग अडाणो

पिय सौ कवहुँ मान न करि हा ॥टेक॥
जित चाहै तित्त प्रीत करौ अत सुपन ही नहिँ ल्रि हो ।
काहू कैं कहियै नहिँ लागत विनप दोस न धरि हौ ।
श्रीव्रजराज किसोर कु वर सौ हँसि हसि अक हि भरि हा ॥४६॥

राग जगलो

सखी विन सावरे म निपट अनोखो आन ॥ टेक ॥
वसीवट जमुना के तट पर गाव तीखी तान ।
कवहू वा छव नरखौ नैनन वारौ तन मन प्रान ।
तव तें निसदिन रहै व्याकुल्ता मुरली सुनियत कान ।
श्रीव्रजराज कहाव व्रजपत सु दर स्याम सुजान ॥४७॥

---

४५ A ऊद्धव । D जानत । C हा । C त्रिनती वनिता की पाठ नग । D विनती । A कहिय्यो । BD वृज । A निता । D विनत । BCD विना । C है । CD मार । C मै । A निसा । ABC कर । D क । BCD भून । BCD गये । D सुध । [illegible] मुधि । BC वृजराज । D दजराज । AFC मुजान । A पतिय्या । D पठिया । BCD नख नख ।

४६ BCD कव न मान । C हा । C करी । C मुपनें । BCD नर । C ना । D कहिय । ABC नना । C पॅ । AB दोम । CD धर । C न । BCD वृजराज । BCD किसार । D कुवर । BC हस हस । D हस हस । FCD मर । C हा ।

४७ D वन । C मॆ । C मनाना । BCD गाव । A छिव । C नरखा । [illegible] वारो । A तौं A रहै । C है । BCD व्याकुनता । BCD वृनराज । ICD कहाव । BCD वृजपत D सुन्दर । A स्यम ।

हे री ह री मेरी कैसें रहे री देह
री वह व्रजनिध स्याम सुजान प्रीतम विनु ॥ टेर ॥
गिरधर गवंन कियो जब हो त उर म पीर अछेह ।
दिन अरु रैन रहौं अत व्याकुल ननन वरसत मेह ।
श्रीव्रजराज रठौर करैं चित छाड चलै री नेह ॥४८॥

राग काफी

जमुना तट जाय स्याम बा[illegible]ी बजाई ।
सारी व्रज ना[illegible] रान मन दै बुलाई ॥ टेर ॥
मधुर [illegible] लई तान रचक धुन पगी वान
ग्रह ग्रह ते [illegible]ाहि [illegible]ाहि गोपि[illegible] उठि धाई ।
व्याकुल [illegible] अधीन जल [illegible] ज्यो पर मीन
राह [illegible] [illegible] आतुर ह[illegible] आई ॥
भूल [illegible] [illegible]ान पान [illegible] दर तिम आन [illegible]ान
परी [illegible] वान [illegible] [illegible] [illegible] मार्ई ।
ठा[illegible] [illegible] रोक [illegible] नटव[illegible] पिय रसिक छैल
[illegible] [illegible] [illegible] तोहि [illegible] [illegible] [illegible] ॥
मिली जबै [illegible] [illegible] पूछी [illegible] नदलाल
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
मोहन तुम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ह अजान
[illegible] [illegible] बाते तुम [illegible] [illegible] [illegible] ॥

४[illegible] [illegible]

वस करिक गिरधर प्रीतम अव भूलि गयै सुधि वाकी ।
श्रीव्रजराज मुजान कु वर कौ पतिया लिग्न लिख थाकी ॥४५॥

राग ग्रडाणो

पिय सौ क्वहुँ मान न करि हा ॥टका॥
जित चाहै तित प्रीत करौ अत सुपन ही नहिँ लरि हौ ।
काहू क कहियै नहिँ लागत विनप दोस न धरि हौ ।
श्रीव्रजराज किसौर कु वर सौ हँसि हसि अक हि भरि हा ॥४६॥

राग जगलो

सखी विन सावरे म निपट जनोखो आन ॥ टक ॥
वसीवट जमुना के तट पर गाव तीखी तान ।
कवहू वा छव नरखौ ननन वारा तन मन प्रान ।
तव त निसदिन रहै व्याकुल्ता मुरली सुनियत कान ।
श्रीव्रजराज वहाव व्रजपत सु दर स्याम सुजान ॥४७॥

---

४५ A उद्धव । D जानत । C हा । C विनती वनिता की पाठ नहा । D विनती । A कन्ह्यिौ । BD वृज । A निता । D विनत । BCD विना । C है । CD भार । C मै । A निसा । ABC कर । D न । BCD भन । BCD गये । B सुध । B सुधि । BC वृजराज । D दजराज । ABC सुजान । A पतिया । D पतिया । BCD नग्व नख ।

४६ BCD कबहू न मान । C हा । C करौ । C सुपनें । BCD नर । C ना । D कहिय । ABC नहा । C पै । AB दोम । CD धर । C नै । BCD वृजराज । BCD किसार । D कुवर । BC हस हँस । D हस हस । CD भर । C हा ।

४७ D वन । C मैं । C मनाखा । BCD गाव । A छिव । C नरखा । D वारो । A तौ A रहै । C है । BCD याकुलता । BCD वृजराज । BCD व जै । BCD वृजपत D सुन्दर । A स्यम ।

हे री हे री मेरी कैसे रहै री देह
री वह ब्रजनिधि स्याम सुजान प्रीतम बिनु ॥ टेक ॥
गिरधर गवँन कियो जब ही त उर म पीर अछेह ।
दिन अरु रैन रहौ अत व्याकुल नैनन बरसत मेह ।
श्रीब्रजराज कठोर कर चित छाड़ चलै री नेह ॥४८॥

राग काफी

जमुना तट जाय स्याम बासुरी बजाई ।
सगरी ब्रज नार कान सन दै बुलाई ॥ टेक ॥
मधुरे सुर लई तान रचक धुन परी कान
ग्रह ग्रह त चाहि चाहि गोपिन उठि धाई ।
व्याकुल अत ह्वै अधीन जल बिन ज्यौं परै मीन
काहू की न सक कीन आतुर ह्वै आई ॥
भूल गई खान पान सुंदर तिय आन कान
परी कान जान यह कान्ह की भाई ।
ठाढ़ौ इह ठौर गैल नटवर पिय रसिक छैल
कहा कहौं सखी तोहि ढीठ की ढिठाई ॥
मिली जब आय ग्वाल पूछी तब नंदलाल
कहौ कहा काम कछु कौन की पठाई ।
मोहन तुम हो सुजान बूझत क्यों ह्वै अजान
झूठी पर बात तुम साच सी सुनाई ॥

---

४८ । D कसे । C कसै । AD रहै । BCD ब्रज । BCD गवन । BCD रैन । A कियो । C कियौ । A उर । C रहौ । BCD श्रीब्रजराज । C कठोर । AB चलै ।

रावरे ही दरस काज मेटी सब लाज पाज
करौ कहा प्रीतम तुम अैसी चतुराई।
हमको पुन दोस दियो अपनौ हू काज कियौ
प्रीत हू की रीत कहूँ दुर ना दुराई।
मधुरै से सुनत वन तन मन को भयौ चन
मोहन ब्रजराज आज छाक सी छकाई।
आनदमय भई बाल सब ही तिय ह्वै निहाल
गिरधर रस ल गुपाल रीझक रिझाई ॥४६॥

राग बिलावल

या जग म जीवौ मपना सम करत अक्रत देख नहिँ रे मम ॥टेक॥
जनम सौ खप ह द्रढ ये ही नाहिँ रहै जडता तजि अधम।
मात पिता बधव को बस हिन पकरि खच लज ह वे जम।
श्रीव्रजराज बिना नहिँ साहिक तन मन सौ वाके चरना नम ॥५०॥

---

४६ BCD जमुना। D वासुरी। A सिगरी। BCD बृजनार। A दै। D दे। A मधुर। A धुनि। A गोपिन। A ऊठि। BCD याकुल। A प्रति। A त्न्हें। A मधीन। A विनु। CD परे। ABC मान। A काहु। A ह्लैं। D सुन्दर। AB यहै। C हे। A यन। A रीक। C कन्हो। D ताप। C ढिठ। BCD मनो। B जबैं। A कछू। A मोहन। C हो। A है। C बातैं। D साचा। C करो। BD करौं। C हमका। A दोस। BC न्यिो। D दायौ। BCD अपनौ। D कहू। BCD मधुरे। D मे। ABC बैंन। AB कौ। D कौ। BC भयो। D मया। D चन। A मोहन। BCD बृजराज। D क। D रीभाई।

५ C जीवो। D जीवौ। BCD अकृत। C देख। C जनम। D जनम। AD सौ। D खप। BCD है। AB दृढ। AC अेहो। A रहै। A प्रातम। D खचि। D तज। BCD बृजराज। C विना। BCD साहब। BCD वाक। D चरनौ। D मन।

ऊधो कान्ह कहूं बल्माये जोग सिखावन तुम हू आये ।।टेक।।
केहू भाग सजोग दियो विन अवहू वा विन पल न रहाये ।
आवन सुनत जियें अतनें दिन हमको मारन तुमहि पठाये ।
तुमया मिन तवै हम जानत कृष्णचद्र को दरस कराये ।
श्रीव्रजराज कृपा कर आवत जव हू आनद की निध पाये ।।५१।।

राग पूरवी

परी तोमें अजव अनोखी आन ।। टक ।।
नींद भरी नैनो कजरारी छाय रही अल्मान ।
नग मिग रूप रमीली नागर मोहत तन मन प्रान ।
वसि है प्रान पिये मनभावन श्रीव्रजराज सुजान ।।५२।।

राग अड़ाणो

ह री तर ननन वानन जोर ।। टेर ।।
वामे जिय म अत व्याकुलता तू मन को मन चोर ।
मोहनी मूरत अत ह सुदर तामों इतनो तोर ।

---

५१ FCD ऊधा । AIC कान्ह । AIC कहू । A बल्माये । A जोग । A हाथ । D क । A जोग । A संजोग FCD दियो । D विन । CD विद । A वहते । D अतन । C हमको । D हमको । FC तुमहें । D तुमहू । A तब । A तवै । D क । A व्रजराज । C क । AIC व्रजराज । A कर । ICD दनिध ।

५२ ICD मैं । AID अनोखा । AD नाम । AFC नैनों । FC रूप । CD निग । AD वाम । AFC प्रान । A पाद । ICD व्रजराज ।

निसदिन मुमरन तेरो करत है तो चित अव तो ओर ।
श्रीव्रजराज सुजान मनोहर तासों होत कठोर ।।५३।।

ख्याल नाश्रेकी

हेली तेरौ अजब हठीलौ मान ।। टेक ।।
तोकों बार बार समुझावत नक्हु जी (य) मैं आन ।
सुख की बात सिखावौ हौ अत सुन ल तू अब कान ।
द गरबाही मिल मोहन सों करहु सुधारस पान ।
श्रीव्रजराज सलौने ऊपर वैठी भोहन तान ।।५४।।

राग सोरठ

गोकुल आनद मगल आज ।। टक ।।
ग्रह ग्रह त वनिता मिल निकसी मु दर सजक साज ।
भू को भार उतारन मोहन असुरन के ख काज ।
भादों विद आठू सुभ मोरथ प्रगटे श्रीव्रजराज ।।५५।।

---

५३ A गर । A नानन । A ओर । A ओया । A अति । ABC याकुनता । BCD तू मत मन । D तू । ACD घोर । A मौन्ना । ABC ह । A यतनो । C इतनो । ABC तोर । ABD हैं । A तिहारो । BCD तो । ABD अवतो । AD भार । BCD बृजराज । A मनोहर । AD कठोर ।

५४ D हारा । C तरा । BC हठीनो । BCD नैंक । C सिखावो । D सुख की सिखावा । C हो । BD हो । D सुन ल अब तू । BCD दे । D गरबाहो मन माहन । A मोहन । C यान । BC व्रजराज । D बृजराज । A सलौंन । B सनैंन । C सलान । D उपर ।

५५ A गोकुन । D आनन्द । D त । BCD विनता । D मुन्दर । D सजव । A क । A ऊनारन । A मो न । AD क । IC भा दो । D भादु । D आठू । A मोरत । D गौरथ । BD प्रगट । BCD बृजराज ।

राग काफी

व्रज में प्रगट भयो है कंस हू को काल ॥ टेक ॥
मात पिता चित भरम मिटायो जनमहु तें वहै बाल ।
व्रज जन के अति ही सुखकारी असुरन को उर साल ।
श्रीव्रजराज निरख चल सजनी निरखें होत निहाल ॥५६॥

झूठ बोल पिय मोल लियो मन ॥ टेक ॥
तिय मनभावन अति ही सुहावन
साच ही को तरें चित में पन ।
है रस वस गिरधर नंदनंदन
तो सी और नही वाकें धन ।
श्रीव्रजराज मनानी सुन न
नहि बिसरत तोकों इक पल छन ॥५७॥

गजल

कौन परी बान तेरे नैनों की अहा परी ।
तलफ रहा प्रान मेरी देख त वो ही घरी ॥

---

५६ ICD बृज । C भयो । AD है । AB को । C बिच । ABD मिटाया । A जन । A वै । D कर । ICD बृज । A दल । BCD को । A उर । ICD बृजराज । D मना । A होत ।

५७ A बोर । A मोर । A साचो । A दल । D दगधर । BCD नि । ABD को । A नर । A है । A नैंन्दन्न । BC नैन्दन्न । BCD तो । ICD बृजराज । BC मनौर । A न । D बिसरत । A तोको । B तारो । A इक । A दिन ।

सुरमौ त सवारे छिन टरत हू न टार अग ।
सजन त वारे यह सूरत दिल मै अगी ॥
मासूक या ही लजाती घू घट ही मैं मुसक्याती ।
आसक कौ लुभाती महबूब तौ जाती टरी ॥
व्रजराज प्रानप्यारी पल हो न करो न्यारी ।
मुजन तौ ज्यानवारी सुन वात कौ रहवै खरी ॥५८॥

राग सारठ (वधाइ)

व्रज तिय फली अग ना समात ॥ टेक ॥
मगल गावत कलस वधावत आवत चित उमगात ।
भादौ मैं हरि जनम लियौ ह आठा की अधरात ।
श्रीव्रजराज निरखि छवि नागर रीझ रीझ छकि जात ॥५६॥

राग (वधाइ)

है वसुदेव तौ धन तात ॥ टेक ॥
धन्य तव ग्रह कृष्ण जनमे धन्य देवकी मात ।
धन्य है वह नद जसुदा निरखि रूप लुभात ।

---

५८ D नैंनौ । A अ ो । D अहा । D पर । C मरो । A सवारे । BC सवारे । C म्हू । BCD मग । ABC वार । BCD इ॰ । BC सुरत । C सासूक । BCD या हा । BC घूघट । BCD म । ACD मुसकाती । BC को । A भुनानौ । AB तौं । BCD वृजराज । D पन । BCD हा । C चारा । B वात । ABC रहव ।

५६ BCD व्रज । D वधावत । A ऊमगात । A नीयौ । ABD हैं । BC वृजराज । D वृजराज । BCD निरख । BC निरष । BCD छक ।

धन्य हैं व्रज गोप गोपिन धन्य सो दिन रात ।
धन्य हैं व्रजराज गिरधर दास बल बल जात ॥६०॥

राग अडाणो

रे मन क्यों विसरै व्रजराज ॥ टेक ॥
इन विसरैं विसरे जग तोमों कछुहू न सरहैं काज ।
जिन गज ग्रीध ग्राह क्यों तार द्रुपद सुता की राखी लाज ।
तू हैं दीनदयाल हरी भज विरद गरीब निवाज ॥६१॥

हरी बिनु कोऊ न पीर हरैगो ॥ टेक ॥
अपनैं अपनैं स्वारथ के सब नर न काज सरैगो ।
झूठें क्यों माचो वह मानत कैस पार परैगो ।
मन जप साथ चलै सुभ संगत तब भव सिंधु तरैगो ।
है व्रजराज प्रभू जगतारन मो हीं माहि करैगो ॥६२॥

---

६० A धन्य । AB तो । C हो । BCD धन्य । A बाग । D हुन्ना । ABC दरहि । AB धन्य । A कहै । D निरग । AD धन्य । CD है । BCD बृज । A गोप । A गोपिन । AB धन्य । BCD सो । A धन्य । CD है । BCD बृजराज ।

६१ C क्यों । ABC बिसर । BCD बृजराज । A ईन । A बिसरै । A बिसर । B तामों । C तामा । D तोमा । C सरहै । D जग । D द्रुप । D तू । CD है । D निवाज ।

६२ ABC हरि । BCD बिनु । A कोऊ । AD हरनैं । C अपनो । AD अपनैं । D क । AB मैंन । BD मरना । C करैगो । BCD नर । A परैगो । CD परैगो । A कै । D सिंधु । A तरैंगो । A है । BCD बृजराज । BCD मो । A करैगो ।

राग परज

कहा खेली पिय फाग हो व्रज म ॥ टेक ॥
जा तिय क निस जागे मोहन ताही को बड भाग ।
वाके हाथ रगे हो रग में वाको परम सुहाग ।
श्रीव्रजराज आज भौरन के लसत अधर दल दाग ॥६३॥

राग विहग

या व्रज में फागन की रत आई ॥ टेक ॥
कु जन भीर भई भौरन की कोकिल कूक सुनाई ।
घर घर डगर डगर बट तट प मोहन धूम मचाई ।
अमिली होय रही क्यो सजनी मिल प्रीतम सा दे गलबाई ।
श्रीव्रजराज सखी गे तो बिनु पल पल जुग सी जाई ॥६४॥

राग झीझोटा

काहे को रग डार है हो व्रज के बसैया ॥ टेक ॥
चुवा चदन अतर अरगजा पिचकारी जिन मार ।

---

६३ CD हो । BCD व्रज । C में । ABC जागे । ABD को । A का के रग रगे ।
C हो । C वाको । D वृजराज ।

६४ A य्या । D व्रज । C मे । A माई । A कू जन । D कुजन । A कोकिल ।
A सुनाई । C प । A मोहन । ABC धूम । A मचाई । BCD अमिनी
व्है क्यों र ी री सजनो । BC क्यो । A प्रातम गलबाई । BC सों गलबाई ।
BCD वृजराज । BCD बिन । A आइ ।

घूघट खोल बोलत है बक बक दोय बापन विच बार ।
श्रीब्रजराज धीठ मनमोहन नेक न लाज तिहार ॥६५॥

राग परज

खेल रह्यौ नदलाल आगनिया मैं ॥ टेक ॥
राधे प रग डारत छलकर टारत है ब्रजबाल ।
रीझ रीझ मुसक्यात सखी री दोऊ परमपर होत निहाल ।
श्रीब्रजराज पियारी कौं पिय कर राखी उरमाल ॥६६॥

राग बसत

अे री स्याम बिन दिन कठिन जाय
कोकिल बोली निकट आय ।
सब कुसुमहू फूले अे री बीर
अरु चिहुं दिस गु जत भँवर भीर ।
फिर मद मद गति चलै समीर
मेरो तन मन कैस धरत धीर ।
अे री पत्र पिया पैं लखि पठाय
ब्रजराज रहैं क्यों अनत छाय ।
अब बिलब न करियै मिलियै धाय
इह बिरह रोग को दुख मिटाय ॥६७॥

---

६५ A घाई । BCD बार । BCD बमद्या । BCD घारे । A घु घट । BC घु घट । ABD है । A बिष । BCD बृजराज । A मोहन । ABD नैंक । BCD तिहारै ।

६६ A आंगणियां । D धारै । A डारत रंग । BCD बृजबाल । C दाऊ । A होत । BCD बृजराज । A उरमाल ।

६७ A बिन । A दन । A यह कोकिल । ABD कुसमहू । D बहू । BCD भवर । A गत । A चलैं । C धरा । BCD कैसें । A सखी पत्र पीव्या पें लिख पठाय । D बृजराज । BCD रहे । A क्यूं । BCD 'अब बिलब''''धाय' पंक्ति नहीं । A यह । BCD बिरह । A रोग । ABD कौ ।

राग ललित

खेलन कौ चलियै अव सजनी
  खेल कियौ वहि छल मुरारी ।।टेक।।
सुन निक्सी तिय भाननदिनी
  रग लिय अरु भर पिचकारी ।
ग्रह ग्रह त गापी सब उमडी
  नदनदन को गावत गारी ।
मदु मुसक्याय पाय सुख प्रीतम
  आय मिलै ब्रजराज बिहारी ।।६८।।

ग्याल राग

अब सुध लीज्यो मेरी स्याम सुजान ।।टेक।।
गज के कारन छाड्यो खगपत सवद परे तिह कान ।
भगतविछल के विरद कहावौ तासा नहिं आसान ।
श्रीब्रजराज धरौ चित करुना मो मन तेरी ध्यान ।।६६।।

---

६८ C खचन । A चनीयैं । D चनिये । A काधा । bCD सुनि । BCD नदना । A लीयँ । A गौपा । [illegible] गापीन । A ऊ मन्ग । A नदन । D को । A म्रदु । BC मिने । LCD वृजराज । A विहारो ।

६६ CD छोन्यो । D तिय । D कान । BC बिरन्द । C कहावो । C तोसो । D तार्सों । BC नन्हि । BC म्रासान । [illegible] धरो । C तेरो । यह पद A प्रति म न्हा है ।

देह को मानता साचा, समझ ले घट्ट है काचा ।
पतग के रग सो राचा, कहे सो मान ले वाचा ।
सबै कौं जानता अपना, इहै जग रैन का सपना ।
ये कोउ है नहीं अपना, जुगल निज नाम कौ जपना ।
सांस की आस है काई, जस इन वृछ की छाई ।
पतासा नीर के नाई, एक दिन छार वै जाई ।
अविद्या बहुत करता है, हरी सौं नाहिं डरता है ।
दरब के लोभ लरता है, क्यों जम पास परता है ।
नीत की राह सौ चल रे, अरे मन कलपना तज रे ।
परम लै चरन री रज रे, सदा ब्रजराज कौ भज रे ॥७०॥

राग अडाणौ

सजनी प्रीतम को बस कर ले ॥ टेक ॥
बिन अपराध मान नहिं करिये प्रीत रीत सौं तर ले ।
इहि विधि सो रस बस ह्वै मोहन सोग कहाँ चित धर ले ।
हुकम अधीन रहे नित हाजर भुज भर अंकहि भर ले ।
श्रीब्रजराज रिझाय सुहागन तन मन वा तूं हर ले ॥७१॥

---

७० BD को । D साचा । BD के । D सो । BC सो । BC मान । D साचा । D करि । D नाम । D है । BC रहा । BC जाय । D क । D क्यों जम परता है पंक्ति नहीं । BC र । D रे । D सै । D रे । इस पद A प्रति में नहीं है ।

७१ BC करना । D करिये । BC बस । D हो । यह पद A प्रति में नहीं है ।

राग सोरठ

हो जी म्हानै प्यारो जी लाग मान
थे तौ क्यो न करो मृगानेणी जी म्हासू ।।टेक।।
जुभक भुकण अरु तरछी चितवन मोहै तन मन प्रान ।
अणरूठण अत रस वस कीधा कामण परम सुजान ।
श्रीव्रजराज पियाजी थारा कर न सकत वाखाण ।।७२।।

राग कल्याण

मोहन की मुरली सुनियत कान ।। टेक ।।
कहा करौ करिये कछु सजनी दिल प अति अकुलान ।
आय मिलाय मसो नदनदन वा विन तजिहौ प्रान ।
क्यौ विसरै प्रीतम सुन मोकौ श्रीव्रजराज सुजान ।।७३।।

राग विहग

अँखियन म आन परी इह वान ।। टेक ।।
छिन हू रूठ रहौ सुन सजनी जिय म अति अकुलान ।
रूप छकै व्रजराज बिहारी जानत मोकौ प्रान ।।७४।।

---

७२ BD हो । D म्हान । C ता । C करो । D मृगनैणी । BD कीया । D कामण । C मुजा । CD पियारी । CD थारा । CD वाखाण । यह पद A प्रति म नहीं है ।

७३ D प । D अकुलात । BC मिलायै । D प्रान । यह पद A प्रति म नही है ।

७४ C में । BC वांन । C रहो । C अकुलान । D छके । BC मोकौं । यह पद A प्रति म नहा है ।

राग मारू

प्यारी जी के स्याम सु जीवन वेस ॥ टेक ॥
सरल सुगध निरख सवारे सुन्दर सरल सुदेस ।
पिय मनभाय अति हि सुहाये सौतिन देत विदेस ।
श्रीब्रजराज कृपा तें पाय पूजें देव महेस ॥७४॥

राग सारंग

सखी री वह धन वृन्दावन धाम ॥ टेक ॥
सीतल छाह तीर जमुना को चित्त का है अभिराम ।
वन नरनारी बसें न पशु निसदिन लहैं नाम ।
सेवाकु जन रहत निरन्तर गावामोहन स्याम ।
श्रीब्रजराज पिया की छवि पर वारी रति अरु काम ॥७६॥

सखी री तू रानहुल बनि आज ॥ टेक ॥
तू ही जीवन है मनभावन जानत पिय सिरताज ।
काजर तिलक तमोल आदि लै सुन्दर तन को साज ।
तेरे राह बाट निहारै प्रीतम श्रीब्रजराज ॥७७॥

---

७४ BC स्याम । D सवारे । D सुन्द । CD सरल । D सुदेस । BC ? । यह पद A प्रति में नहीं है ।

७६ D ? । BC धाम । BD नार । BD की । C सखी । D लहै । D निर । C सवा । यह पद A प्रति में नहीं है ।

७७ B सहेल । D आज । D ठवट । BC ? । BD की । यह पद A प्रति में नहीं है ।

राग केरवो

हे री म कैस जमुना जावौ री गल विच छैल खरो है ।। टेक ।।
कहत न सकत वचन कछ विनत चत ही म अकुलावौ री ।
बहिया मरोर तोर कस ये री नीर भरन नहिँ पावौ री ।
श्रीव्रजराज रसिक को छलबल क्यों करि तोहि सुनावौ री ।।७८।।

क्यौ ढारी मथनिया मोरी ।। टेक ।।
पकर लई मोहि जान अकेली बहिया पकर झकभोरी ।
श्रीव्रजराज कस के घर म नाहिँ चलगी जोरी ।।७९।।

राग खुमायची

आवण कीज्यौ पिया सावणी तीज ।। टक ।।
उमड घुमड घन पपीहा बोल चहुदिस चमक वीज ।
आप विना म्हान नीद न आव तन मन रह्यौ छै छीज ।
भीँजतडा व्रजराज कृपा कर चढि आज्यौ कर रीज ।।८०।।

७८ C खरा । D विन । D त । C अकुलावो । D नहा । C पावो । BD को । BC कर । C सुनावो । यह पद A प्रति मे नही है।

७९ C क्या । D मथनीया । BC मुहि । BD क । BC म । D नाहि। यह पद A प्रति म नहा है ।

८ DC कीजो । D पपाया । C वाने । C चमक । BC म्हानँ । D नाद । रह्यो । PC चढ । C आज्या । यह पद A प्रति म नहा है ।

राग आसावरी

दरस बिना बहुते दिन बीते ॥ टेक ॥
बैठ रहे मधुपुर में मोहन कुबज्या सों रस पाय न चीते ।
कोऊ जाय कहो विनती इह नंदनंदन अति ही अनीत ।
श्रीब्रजराज दरस अब दीजो हम हारे तुम जीते ॥८१॥

हे मनमोहन माखनचोर ॥ टेक ॥
आप न खाय खवाय सबन कों देत मथनिया टोर ।
घर घर मार तार बाछू कम जाय दुरयो ब्रज की इह खोर ।
श्रीब्रजराज निठुर तुम हू हो नाहिं चलै कछु जोर ॥८२॥

राग पूरबी चौताली

चलिये जु नंदलाल कुंजन रही बाल
देखें हैं मग मोहन अति रसाल ॥ टेक ॥
चंदमुखी चतुर नार बैन कला गुन अपार
गवन देखि लाजत हैं मराल ।
तेरे ही दरस काज आनी पिय ब्रजराज
नाजुक नागर नवल बाल ।

---

८१ BC बिना । D आर । BC दरस । BC दरसन । D हम हारे तुम । टेक पद A प्रति में नहीं है ।

८२ C हो । D माखन । BC करत । B आइ । D निठुर । D हो । B नाहिं । D नहिं । टेक पद A प्रति में नहीं है ।

केसर को तलक भाल मोतियन की गरै माल
निरख नैन रीभ गीभ वो निहाल ॥८३॥

राग देवगधार

आयै भान भोर उठ प्रीतम तुमको मोस हे अनुराग ॥ टेक ॥
बिन गुन हार विराज उर प अधरन प भोरन दल दाग ।
हुक्म अधीन रहे जाहर सव मव वाकौ अत परम सुहाग ।
श्रीव्रजराज दोप नहिं तुमका है मेरो असो ही भाग ॥८४॥

पोढी सेज मुजान पियारी आय गय तहा प्रीतम स्याम ॥ टेक ॥
नव दुलही के रस वस व्हे अत पाये अकेलो सु दर ठाम ।
श्रीव्रजराज निहाल हि व्हे क नित ही का भयो पूरन काम ॥८५॥

राग पूरबी

काहि करो मनुहार म्हासू म्हे तो थारा दल री जाणी ॥टेक॥
इण वाता थानै कूण पतीजे प्राण पिया ये तो रम वस वासू ।
श्रीव्रजराज म्है परत न वाला रगभीना रसिया जी थासू ॥८६।

---

८३ C है। D माना। C नाजक। D मागुर। BD का। C गरे। यह पद A प्रति म नहा है।

८४ D भ्राम। D मार्तो। B विराज। C विराजे। C प। D न्गर। D नहि। D तमसौं। D मरो। EC ऐस। यह पद A प्रति म नहा है।

८५ BC सुजान। D गय। D सुन्दर। D हा। BD कौ। CD भया। यह पद A प्रति म न। है।

८६ C करा। D म्हासू। D म्हे। D ज णा। EC थानै। D वाया। C ता। B वासू। D म्हे। D रगभाना। D रसीया। D थासू। यह पद A प्रति म नहा है।

राग गौड़ी

हे मोरी माई साभी के दिन आही ॥ टेक ॥
सेवाकु जन कुसुम मनोहर चुनवे को लै जाही ।
कब ही त चित चाह बढी अति इह औसर अब याही ।
श्रीब्रजराज रसिक नदनदन मोकों आन मिलाहीं ॥८७॥

राग (आरती)

जय अब जननी, मा सेवक कलिमल हरनी
महिषासुर दलनी ॥ टेक ॥
असुर सिंघारन रन जयकारन तारन सब जन की ।
सुभ निसुभ सु मारन टारन है अघ की ।
अति सुखदाई बरत महाई माई मदमाती ।
महिमा कहत न जाई छाई त्रिग राती ।
जग जस लीजे दरसन दीज कीजे चतमाई ।
विनती अब सुनि लीज (मगर कीजे सु द महमाई) ॥८८॥

राग मल्हार

आया री प्रीतम चित्त पै उछाह छायो
मोरा मलार गाया भया मन भाया री ।

---

८७ BD घा । D कुसम । BC कुसम । FC कुसब । D को । D कु । C लेजा ।
D मजो । D य । IO दमर । C याग । C आर। C सिग । यह पद
A प्रति म नहीं है ।

८८ D दव । D अम्ब । D मा । D स्वर । D यह पद की पाठ नहीं ।
D [स । IC विनती । C स अ । यह पद A प्रति मं नहीं है ।

उमड घुमड घन विजुरी चमक चमक
नई नई बूँदन रग वरसायो र।।
धन धन भाग हेली परम सुहाग तेरो
सुख सौ छिकाय स्याम दुख विसरायो री।
उठ री सिंगार साज मिलै ब्रजराज आज
पिय हू को आगम पपीहा सुनायो री ॥८६॥

ठुमरी राग जगलो

बैरन पायल रनझन बाजै सुन री पिय प कैस जाज ॥टेक॥
या ब्रज को सखि लोग बावरी गुरजन सो अति लाजै।
प्रीत लगी ब्रजराज कु वर सो क्यो करि नेह नभाजै ॥६०॥

बदरी काहे को चढ धाव नई नई बूँदन क्यो वरसाव ॥टेक॥
दादुर मोर सोर कर मापै विजुरी मल चमकावै।
पापी पपीहा पिउ पिउ कबहू डर नहिँ पावै।
श्रीब्रजराज कुँवर मनभावन प्रीतम अब घर आव ॥६१॥

---

८६ D मायो। O मे। BC उवाय। BD छायो। D बीजुरी। D नइ नइ। O तरा। C मिने। BD को। D पपाया। O सनायो। यह पद A प्रति मे नही है।

६० O सन रा। D सुनि री। BD को। CD बावरी। D सो। BC कुवर। यह प८ A प्रति मे नहा है।

६१ D नइ नए। C मार। C बिजुरी। D पपिहा। D नहि। यह पद A प्रति म नही है।

राग अडाणो

हे री हे री मोको भूल गये घनस्याम
हे री वह मथुरा जाय पाय प्रभुता अब ॥टेक॥
कुबज्या सौं रस बस ह्वै अब ही हम सौं नाहिंन काम ।
वाकैं कारन ब्रज बिसरायौ छोड्यौ घन अरु धाम ।
श्रीब्रजराज निठुर है नागर भूपन मैं नहिं नाम ॥९२॥

राग बिलावल

नटवारो छदगारो मोपै टोना कीनो है ॥टेक॥
हो जल जमुना भरन जात ही चित हर लीनो है ।
बरजोर मोरी बईयां पकर अधरामृत पीनो है ।
तलफत जात रैन दिन सजनी कछु पद दीनो है ।
श्रीब्रजराज सुजान सलोनो अति रसभीनो है ॥९३॥

राग गुणासरी

कामण कीधा छै जी नाजक नार ॥टेक॥
जिण सूं रस बस आप हुवा छो पीवा छो जी पाणी वार ।
म्हैं छा हुकम अधीन राज रा थे वाका भरतार ।

---

९२ D प्रभुता । C बाक । C बिसरायो । C छोड्यो । IC कुदने । D न । यह पद A प्रति में नहीं है ।

९३ C नटवारो । C छदगारो । D पै । D टोनों । D हीं । D जमुना । D भरन । C हरन लो । C बंईया । C पकर । D पानो । D रै । C रैना । D है । FD सुजन । C सलोनो । D रै । यह पद A प्रति में नहीं है ।

कागद देस न म्हे वी जास्या पढस्या मन अपार ।
श्रीव्रजराज पियाजी थाकी जाण पडी मनुहार ॥६४॥

राग गोडी

साभी पूजन चला री सखी साभी पूजन चलो री ॥टेक॥
वा हू के चत लगन वढी अत मन मोहन सो मिलो री ।
श्रीव्रजराज हु वाट निहारत मुभ मोरथ दिन भलो री ॥६५॥

राग सोरठ

प्यारी जी म्हे थारा चाकर कहास्या
मनभावन वचन रहोला मो ही नभास्या ॥टेक॥
हुक्मी छा म्हे कदमी थाका मनस्यो ज्याही मनास्या ।
कर जोरे म्हे अरज करा छा महर करो न कोठ नहिं जास्या ।
श्रीव्रजराज म्हें रस वस थामू म वी छकाला थाने ही छकास्या ॥६६॥

---

६४ C छा । BD थाको । C छा । BC म्ह । D वो । C जास्या । D पडा । यह पद A प्रति म नहीं है ।

६५ D साभी । C चला । C वाट । BD मनो । यह पद A प्रति म नहीं है ।

६६ D म्हे । D थाका । C कहास्या । D हास्या । D म्ह । C थाका । CD मनसा । D मनास्या । D कर जोर । BC मैं । D करा । BC करा । D ने । BC म्हे । D म्हे । D थामू । D म । BC छकाला । BC थान । D छकास्या । यह पद A प्रति म नहीं है ।

काई मानू मान करो मृगानैणी ॥टक॥
म्हे छा हुकम अधीन राज रा यो ही झूठो दोष धरो ।
आप विना म्हानैं कही न सुहावै मेट करो झगरो ।
श्रीव्रजराज सुजान पियारी थे तो मारो मन ही हरो ॥९७॥

राग नगमो

सजनी रजनी बीती जात ॥टक॥
प्रीतम आग मनाया नांहि आइ दाचत मन अति अकुलात ।
कौन सुनै यानू कहिय री दिल अपने की बात ।
श्रीव्रजराज विना सुन मोय घर वर नाहिं सुहात ॥९८॥

गजनी

हे री म कस जीजो री मोहन नन लग ॥टक॥
मैं गई जल जमुना दिस अपनैं ही मनमान ।
कौन परी मान तहां आय गय कान ।
नद रो टोना हे नगीना टोना कीनो जान ।
तिन पै हैं अकुलान मेरो तरफ रह्यो प्रान ।

---

९७ FC काम । LC माक । CD करो । D सुगानद । D ह । FC दों । D अनैं । D कगा । D करा । LC मारा । दन दन (दुनि य न) है ।

९८ LC रहना । D सजन । D सुने । D कामी । LC कद । FD करि । वह दन (नि य न) है ।

जो कोई चावौ ज्यान जिवावौ और ना इलाज ।
आज वहै घनस्याम सखी पिय आय मिल व्रजराज ॥९९॥

राग कानरो

गज की साय करी करतार ॥टेक॥
खेंचत ग्राह ग्रह्यो जल माही अलप रह्यो सिर राम पुकार ।
कमला छाड चढक खगपत पर आवत छन हु न लागी वार ।
श्रसौ दीनदयाल प्रभू है ताको भजत न मूढ गँवार ।
लख चौरासी भ्रमत रह्यो धिक श्रीव्रजराज कों वेग सभार ॥१००॥

ख्याल कालिंगड़ा रो

जानी मारा राज थारी रीत जानी ॥टेक॥
भोर भये तुम बात बनावत रन कहा रति मानी ।
लटपटे पेच खुलै मनमोहन नैना नीद घुलानी ।
श्रीव्रजराज सदा तन मन म सु दर छबि दरसानी ॥१०१॥

---

९९ BC जावो । BC मनाना । BC टौंना । D कीनों । D मर । D कोइ । [illegible] चावो । BC ज्यान । C जिनावो । C श्रोर । B ईनाज । यह पद A प्रति म नग्री है ।

१०० D खचत । D राम । D चन्क । BC वार । C एसा । यह पद A प्रति मे नही है ।

१०१ CD धागे । D रॅन । D कहा । D खुन । BC नेंना । D नीद । यह पद A प्रति मे नही है ।

राग खमायची

भूल मत जाज्यो जी हो छो छदगाला जी थे ॥टेक॥
तन मन प्रान रहे कदमा में सु दर उर दिखलाज्यो जी हो।
श्रीब्रजराज सुनो सुध मेरी पवंगा चढ सड आज्यो जी हो ॥१०२॥

राग सोरठ

विनती सुनज्यो स्याम सुजान ॥टेक॥
मैं पापी चित ग्यान न जानत मानत नेम न ध्यान।
दीनदयाल सहायक नित ही नाम सुन्यो है कान।
श्रीब्रजराज निभाय लिया तुम अपना विरद पिछान ॥१०३॥

राग बिलावल

गिरधारी गोविंद गदाधर ॥टेक॥
मोहन स्याम सरूप श्रीनिधि वीठल वामन रावन भयकर।
केशव समन दयाल दमोदर श्रीब्रजराज सुजान सियावर ॥१०४॥

---

१०२ BC जाज्यो। BC हो। D छदगाला। BC कदमा। D में। BC सो। C सुंदर। BC आज्यो। BC हो। यह पद A प्रति में नहीं है।

१०३ C सुनज्यो। B ग्यान। D जानत। D नेम। D नाम। C सुन्यो। C अपना। यह पद A में नहीं है।

१०४ BC स्याम। BC वामन। D समन। D सुजान। यह पद A प्रति में नहीं है।

राग आसावरी

गिरधारी गोपाल मोहन वनमाली ॥टेक॥
श्रीवर स्याम राम करुणानिध ब्रजनायक नदलाल ।
राधारवन किसोर मनोहर सोभित अग विसाल ।
श्रीब्रजराज सरन मैं तेरै अब मेटो दुख जाल ॥१०५॥

ख्याल परज

मोहन नदकुमार आजौ म्हारै ॥टेक॥
केसर रग अबीर घनौ है मीडत या धनसार ।
जैसे फाग खेलौ तुम नित ही आज हमारी (है) बार ।
औरन के सग खेलत अत ही कु जन करत बिहार ।
अन सन दे राखत तुमकौ अैसी ह ब्रजनार ।
मेरो प्रान असो हर लीनो जित चालत तित लार ।
श्रीब्रजराज वसे उर मेर पल पल कर हो प्यार ॥१०६॥

ख्याल राग

आयो वैरी मेह ते सहेली म्हारी पिऊजी दियो है विरह विदेह ॥टेक॥
कोयल कूक हियो अकुलाव पापी रे पपीहा जिय व् लेह ।

---

१०५ B वर । BC स्याम । D राम राम । BD मनोहर । C म । C मेटो । यह प्न A प्रति मे नही है ।

१०६ C प्राजो । BC म्हारे । C घना । B यो । D धनस्यार । C ऌना । BC म्तन । D विहार । BC म न । C तुमको । D प्रान । BC अंसो । C मर । यन पद A प्रति म नही है ।

दादुर मोर करै या मन हीं मिल्ली वान अछेह।
श्रीब्रजराज सुनो ये विनती उडि गय क्या नेह ॥१०७॥

राग

लाज रखो अब स्याम बिहारी ॥टेक॥
सचत चीर रह्यौ काउ मेरी काउ माह्य करै न टहा री।
अरजुन भीम नकुल सहदेवा धरमपुत्र यों रहु न निहारी।
श्रीब्रजराज दया तुम दखो जनम जनम की दास तिहारी ॥१०८॥

तालु चतरी तिताला

मनमोहन हीं मा तू मत कर री मान ॥टेक॥
हाजर रहन हजूर सदा ढिग सनमुख जोर पान।
जानत तन मन धन ताकौं वै निसदिन तेरी ध्यान।
श्रीब्रजराज बिसार कृपानिध श्रीपति परम सुजान ॥१०९॥

राग सोरठ

राधेजी र रूप लुभानी स्याम बिहारी है ॥टेक॥
बोलत बोल नरम अन सुदर चितवन और अदा री है।

---

१०७ C [illegible] । D है । BC [illegible] । BC [illegible] । C [illegible] । D [illegible] । BD [illegible] ।
C सुन । D [illegible] । D वै । BC [illegible] । [illegible] A प्रति म नहीं है।

१०८ D [illegible] । C [illegible] । C [illegible] । [illegible] A प्रति म नहीं है।

१०९ D [illegible] । D [illegible] । D [illegible] । B [illegible] । D [illegible] निस । B [illegible] ।
D [illegible] परम । [illegible] AC प्रति म नहीं है।

और सखी याक सम नाहिन मनमोहन अत प्यारी ह ।
श्रीव्रजराज यौ निरख निरख छब तन मन प्रान सु वारी हे ॥११०॥

राग सोरठ

अजब अनोखौ ह ह राधे रानी जोबन हदो तोरौ ॥टेक॥
मो मन रहत सदा तो तन मैं अब कछु नैंक न ओरौ ।
श्रीव्रजराज रहै मनमुख ही नैंक हू नन न जोरौ ॥१११॥

थे म्हासौं प्रीत निभाज्यौ जी रगरसिया छला चीरेवाला ॥टक॥
मोरमुकट पीतपट सोहैं सु दर छब दरसाज्यौ जी ।
श्रीव्रजराज मुजान सनेही कु जमहल भल आज्यौ जी । ११२॥

राग

मन वसियो मिजमान सलौनो ह ॥टेक॥
अजहू रुप लिरयो री अब कब अजब अनोघो आन ।
तलफत प्रान रह नित ही प्रत छिन छिन जिय मैं ध्यान ।
श्रीव्रजराज का आनि मिलावै प्रान करा कुरबान ॥११३॥

---

११० C त्रुभाना । D वौनत । C मार । D म दा । D याके । C या । यह प॰ A प्रति म नहा है ।

१११ C तारा । DD नैंक । C बारा । D नैंक । BC नैंन । C जारी । यह पद A प्रति म न॰ा है ।

११२ D म्हासौं । BC निभा॰या । BD प्रित प॰ । C सदर । D मु॰र । BC दरसाजो । D मुन॰ी । यह प॰ A प्रति म न॰ा है ।

११३ D मन । D बसीयो । D मजमान । CD सनोना । C रहे । C म । C ध्यान । D प्रान । यह प॰ A प्रति म न॰ा है ।

राग कालिंगड़ो ताल जलदी तेतालो

थारी ओल्ंू आवै छै हे राधे प्यारी ॥टेक॥
जित जावै तित तेरी सुमरण कैसी मोहनी डारी।
वेबहु आय मिलावै जदुपत चित हित सो यह धारी।
श्रीब्रजराज वसी छव उर मैं वा छव पै वलिहारी ॥११४॥

राग विलावल

छदगारो नंद को यो छोना डार गयो मोप टोना ॥टेक॥
धेन चरावत तट जमुना पै सु दर प्यारो स्याम सलोना।
जब त दीठ परी री हेली तल्फत प्रान रैन दिन सौंना।
श्रीब्रजराज विना अकुलाव विरह ज्वाल को ताप सहौंना ॥११५॥

राग

अत रगभीनो री हे री वो ब्रजपत ॥टेक॥
प्रीत दिखावत नैनन सों नित मन मेरो वस कीनो री।
छल अर छद भरयो तन मन मैं रोम रोम छल लीनो (री)।
श्रीब्रजराज सलोनी मूरत कोटिक काम अधीनो री ॥११६॥

---

११४ B थारी। D आयु। CD मरो। C वसी। BC छवि। BC मैं। BD प। यह पद A प्रति म नहीं है।

११५ BD को। BC या। D टोना। D प्या। B सलौना। C सलोना। CD सोना। BC बिना। BC अकुलावे। BD को। D सहौना। C सहना। यह पद A प्रति म नहीं है।

११६ C भीना। C वो। C मेरा। D बस। C कीना। C लीना। D मानो। C सलोना। D कोटिक। B अधीनो। यह पद A प्रति म नहीं है।

राग

कर जोरे ठाढौ वलवीर ।।टेका।
आरतवान अधीन तिहारे तू सजनी जानै नहिं पीर ।
बस है स्याम सुजान मनोहर वार वार पोवै नित नीर ।
श्रीव्रजराज सनेह वढयो अत चितवन प्रान धरै नहिं धीर ।।११७।।

राग झींझाटी

प्रगट नदनदन सुत माई गाकुल बाजै आज वधाई ।।टक।।
चलौ सजनी मिलि देखन जइये प्यारौ स्याम कन्हाई ।
धन व्रज धन जसुमति धन जननी जिन त्रिभुवनपति जाई ।
सुरपति के घर आनद छायौ असुरन चित दुखदाई ।
सु दर वदन कँवल दल लोचन निरख द्रिगन वल जाई ।।११८।।

राग

प्रगटै श्री जादवराई री मैं ।।टक।।
मथुरा जनम लियौ दुखभजन गोकुल ले पधराई री मैं ।
कस सुयौ सुभ दिन स्रवनन मैं चित मै अति अकुलाई री मैं ।
मगल गावत कलस बधावत जुवती सब मिलि आई री मैं ।

---

११७ D कर ज्योर । CD ठाढा । BC बलवार । CD तिहारे । BD वार वार।
D धरे । यह पद A प्रति म नहीं है ।

११८ BC वाजे । BC वधाई । C चलो । D मिन । BC जईये । CD प्यारो।
BD के । C छायो । D कन्हन । BC निरखो । यह पद A प्रति म नही है ।

कंचन थार लिये कर गोपिन घर घर देत बधाई री मैं ।
तन मन धन नछरावल कीजै अदभुत कँवर कन्हाई री मैं ॥११९॥

राग

भूल करे मास आस धाम की सो मोती ।
सपना को सुख नहीं जान भूल्यो जनि कर गुमान ।
काहू नहिं टारे दुग सुभट सू गाती ॥
सिर ऊपर भ्रमत काल पलटू में ह्वैं बेहाल ।
मात पिता देग स्ह सु द सुख जोती ॥
तीर्थों कहूं मृढ प्रान घर तो हिये ध्यान ।
मोहन ब्रजराज कहैं होती अनहोली ॥१२०॥

राग

र मन कौन पिता अर माता ॥टेक॥
कौन प्रिया सुत बंधव सहचर कौन सुहृद अनदाता ।
कौन दुख सुख दत लेन को का जाना को आता ।
मृगतृसना ज्यूं भ्रमत हत जग झूठो मत दरसाता ।
परमातम को रूप भूल गयो श्रीब्रजराज बताता ॥१२१॥

---

११६ D झारं । CD लियां । B मुत्त । C म । D न्योछावर । B सिर ।
BC न्योछावर । यह पद A प्रति में न । है ।

१२० यह पद ACD प्रति में नहीं है ।

१२१ यह पद ACD प्रति में नहीं है ।

राग

ऐसो को चता नहिं जान ।
देव अमर नप नाग असुर नर रहत वदन कुमलान ।
ज्यो जीतै वासौ हियँ द्रिढ कर झूठौ जग मन मान ।
श्रीव्रजराज कृपा ह्वै पूरन आतम ग्यान पिछान ॥१२२॥

राग

अति दुख नाहिँन जात कह्यौ ।
सलिता सोच सावन की वहै रही चित बिच जात ग्रह्यौ ।
परम सुजान परम जिय जीवन सरवस सग गयौ ।
जानत हो कछु और ही मन और और भयौ ।
श्रीव्रजराज चरन अबुज को इक अवलव रह्यौ ॥१२३॥

राग लाचारी गौडी ताल झपताला

जाके दरबार भरियो तहा सुभट सब
देख कोदड मन मे अनत सोच है ।
एक रघुवीर को निरख भुज प्रबलता
जान लीनो धनुप तोडवायो चहै ।
जानकी धारि छव पेख अवधेस की
डार वरमाल गल राम नाख्यो चहै ।

---

१२२ यह प० ACD प्रति में नहीं है ।

१२३ यह प० ACD प्रति में नहीं है ।

उठ रघुनाथ वल साथ आगे चले
कोप कर अत तिह टूक करवा चहे ।
वोल लछमन कह्यो देह मोकू दुवा
है तनक वात याको कहा सोच ह ।
लखे दुरजन सबै धुने दस सीस सर
ध्यान उर आन दुरग मान हिय यूं चहे ।
हरप उछाह हर भगत आवत भया
श्रीव्रजराज अपन मकट मोच है ॥१२४॥

ताल झुमरा

लाज मेरी रखियो रे प्रभू तुम ।
अति अहकार भर्यो जिय म अति गाम गेम बिगरियो ।
धरम काम औ नाम तिहारो मो मन म मसियो ।
श्रीव्रजराज गुना जिनतो अब दाम दया दिररिया ॥१२५॥

ताल रुपताला

व्रज म आज वधाई वजै हैं ।
यदुवन ये हिय माँ नद्या ह दुष्ट वस कुल देख भजै हैं ।

---

१२४ B F । C दसनता । C आ॰ भागो । C हाडवाला । B कहैं । B ज्य नर । B दसपग । B करमार । B ऊर । C माथ । C ति॰ । B है । C दर । C दुश । B बार । B है । B लग । B मर । C सिर । B उर । B है । B उकम्प । B व्रजराज । C धरने । B रे । यह प AD प्रति में नहीं है ।
१२५ C राखियो । B रहि । C राम राम । C हा । B रखिदा । C बृजराज । B दिरिया । यह प AD प्रति में नहीं है ।

चदमुखी गोपी मिलि निक्सी पेखि सची हिय मान रज है ।
श्रीव्रजराज जनम तव लीनो सबके मदिर साज सज है ।।१२६।।

ताल

करुना मेरी नाथ सुनोगे दुष्ट मेह (मोह ?) कू आप हनोगे ।
अव तो तीरथ को हू गरजी मेरे पातिग नाहिं गिनोगे ।
तेरो दास कहाऊ रघुवर तोह भनावै सोहि भनोगे ।
श्रीव्रजराज भरोसे तेरे जव ता साहक आप वनोगे ।।१२७।।

ताल जलदी तितालौ

रावले चरनन हू को चेरा ।।टेक।।
पाप पुन्य हिय म तुम राखत ये हू दास न मेरो ।
म हूँ मूढ़ कछू नहिं लायक उर मे अत अपार अंधेरा ।
श्रीव्रजराज विना नहिं काऊ एक भरोसो तेरो ।।१२८।।

मोहन मन मोह लिया मुसकाय ।।टेक।।
हेरत हू चित गया री सजनी या विन चित उरझाय ।

---

१२६ B ब्रज । C वजे । C मोंन । B ह । C भन्यो । B हूं । C मिन । B पल । B मान । C नजो । C वृजराज । C सजा । B ह । यह पद AD प्रति म नहा है ।

१२७ B करुना । B भनाव । B भनागे । C वृजराज । C तोरैं । B वनाों । यह पद AD प्रति में नहा है ।

१२८ B पुन्य । B कछून नहि । C वृजराज । यह पद AD प्रति में नही है ।

देखत डगर कहूँ की मे अब निकसत यो हू आय।
मोरमुकुट कछनी यो काछें मा मन रूप लुभाय।
नगर निठोरें पीतम सा तू इतनी कहियो जाय।
श्रीब्रजराज लख्यो तुम गारें अत आनद सरसाय ॥१२९॥

आवत रंगभीनो री हरी वो गिरधर।
नेह सा नेह लगाय स्यावर प्रेम मंत्र पढ दीनौं।
निसदिन प्रान रहै तलफत हो काहा जानू काहा कीनौं।
विरह जाल उर लाग रही री विन दरसन तन छीना।
श्रीब्रजराज सुजान सुधानिधि कोटिक काम अधीनौ ॥१३०॥

प्यारो स्याम अहीर अनारो री।
बंसीवट जमुना तट ऊपर सैन करै बलवीर।
अत व्याकुल जिय रहत निरख छब सह्यो हू न जात सरीर।
श्रीब्रजराज मिले बिन सजनी उठ रहि उर मे पीर ॥१३१॥

राज भई माना माग पीतम प्यारा।
दरस बिना तलफत निस बीते थोडो तो पीर बीर निचारो।

---

१२९ B हू। B जिन। B कहूं। C या हू। B मुकट। C या। B काछें। B निठोरें। B इतना। C बृजराज। यह पद AD प्रति में नहीं है।
१३० B रंग। C हरि। C देना। B रहै। C कहा। B विरह। B उर। C दरसन। C बृजराज। C सुधानिधि। यह पद AD प्रति में नहीं है।
१३१ B अनारो। B तट। C बृजराज। B उर। यह पद AD प्रति में नहीं है।

पल पल बरस बराबर निकसे अब तो दिन मत टारो।
श्रीब्रजराज कृपा कर गिरधर चाह करैं न पधारो ॥१३२॥

हो नैना कजरारे टरत न टारे ॥
खजन कज चकोर मीन से जानेक बान दुधारे।
नेक हि चितवन मे रगभीनो मोहन बस कर डारे।
श्रीब्रजराज सदा मन ही मे लागत प्रान सौं प्यारे ॥१३३॥

हु री म कहा करूँ री आली मग रोक्यो बलबीर।
मोरपँखा पट पीत सुहावत अदभुत चरच्यो अग पटीर।
दध ढरकाव अग (हु) लगावैं नेक न जानत पीर।
श्रीब्रजराज छल छल कर कर छिन हू धरत न धीर ॥१३४॥

छाने कोठे जावो राज छाने कोठे जावो
जावा ब्रजराज अत सुख पावा राज ॥

---

१३२ B थोटि। C बिचारा। C बृजराज। B करैंने। B पधारो। यह पद AD प्रति मे नही है।

१३३ C हो बना कजरार। B दुधारैं। B डारैं। C बृजराज। C सा। यह पद AD प्रति म न ी है।

१३४ C कऱ री। B बलबीर। [illegible] धा। B ढरकाव। B लगावैं। B नेक। C बजराज। यह पद AD प्रति म नही है।

ये तो वहो छो म्ह सो थाका ही छा
अब क्यू बात छिपावो राज।
जिण तिय के रस मे निसि जाग्या
तिण रे अग निपटावो राज ॥१३५॥

राग विभास ताल जलदी तेतालो

भोर हि आवन पिय इह कीनो।
पलकन लग्यो पीक कजरा की
लसे लीक दलमली वनमाल अग रग भीनो।
लटपट पच खुले दृग मग पग चले
पैर्यो है अबर निपट नवीनो।
जावे रहे निस जा वाहि की बडभाग
ले रस ब्रजराज अत सुख दीनो ॥१३६॥

भोर हि भान भले बनि आये।
अधरन पीक (ली) लीक तन बान मनु ठीक
तुम रह नन परम सुख पाये।
जिन गुन माल माल है ऊपर बान ऐसी वडभाग छलक छवाये।

---

१३५ B राज रमैन भोर आवा। C ब्रजराज। यह पद AD प्रति मे नहीं है।
१३६ B [illegible]। C भ नो। C र प। C वनमाल। B पग पग। B हू।
B ब्रजराज। यह पद AD प्रति मे नहीं है।

पलट धरे भूषन अंग अंग पर सोभा अदभुत वरनि न जाये ।
श्रीब्रजराज नपा कर प्रीतम दे पीतवर लीला वर लाये ॥१३७॥

राग ललित ताल इकताला

नैना नीद भरी प्यारे आय क्यू अब ।
खुल रहे पेच अनोखे लागत ऐसी कहा यू करी
भोर भये तुम वात वनावो अव तो कहा की नरी ।
श्रीब्रजराज ऐसे तुम कपटी चित मन कोन हरी ॥१२८॥

ताल चौताला

री तेरे नना प्यारे री रावे री अत कजरारे ।
खजन मीन चकोर वहाये ऐसे निपट अनयारे ।
भौह चाप असे ह अदभुत लोयन बान दुवारे ।
श्रीब्रजराज लुभाने री आली तेरो यो रूप निहारे॥१३९॥

राग जोगिया आसावरी ताल जल्दी तेताली

कहा जाने पर पीर वा अत ही बिसासी ।
नेह रीत म कछुव न जानें आखर जात अहीर ।

---

१३७ B छलक । C वर्णि । B ब्रजराज । B पीतम । यह पद AD प्रति म नहा है ।
१३८ B नर्नो । B क्यु । C ग्युकरा । C भइ । C वृजराज । B ग ( ) म कपनी । B का । यह प" AD प्रति मे न । है ।
१३९ C आत । B जाए । C एसे । C वृजराज । B यों । यह पद AD प्रति म न.ा है ।

मिर पग्र बावर धेन चरावे तट जमुना की तीर ।
श्रीव्रजराज मार कर मोक् रह कोन के नीर ॥१४०॥

राग परभाती ताल धीमा तिताला

हरी का नाम जप तू रे बार दुख टार देऊ रे ।
मिनख देह पाय ये मन तू चतुरभुज नाथ कू भज तू ।
यह ससार काचा है प्रभू को नाम साचा है ।
ले ह तू नाथ का सरना समझ ले एक दिन मरना ।
श्रीव्रजराज मू विनती गिन मत पाप की गिनती ।
माकू भ्रमवास म टारा विरध की बात या पारा ॥१४१॥

मान प्यागी लाग हु गये रानी ।
टेढ़ी चितवन मारत मन की बाव जिय की जानी ।
मेरा प्रान रहत या मन म ज्यों दूध में पानी ।
श्रीव्रजगज बरजे लागी वारी या रनवानी ॥१४२॥

---

१४० B का । C रिमामा । I नेह । B आने । B बरावें । C वृजराज । यह पद AD प्रति म नहा है ।

१४१ C नाम जप तु रे । B पाय के [illegible] न तू । I ससार का [illegible] है । B माचा । C न है । C [illegible] । C वृजराज । B व नतो । I न न । B न नता । C पनवास म टारा । B को । B पारो । यह पद AD प्रति म नहो है ।

१४ B राना । C मन का । C बावें । B जाना । C प्रान । C [illegible] । C वृजराज । I बर [illegible] । C रनवाना । यह पद AD प्रति म न । है ।

हाँ राधे रानी जी री चाल सुहानी ।
चलत गयद मानो मद वहतो छव निरखत मुरझानी ।
ऐसो रुप अनोखो है अत रत हू ते सरसानी ।
श्रीव्रजराज सुनो तुम अव कव वोली इमरत वानी ॥१४३॥

हो राधे रानी जी थे वोलो क्यो ने ।
केसी चूक परी मो नन मे नेकहु नेह करो ने ।
अत अपराध भरयो तोही तुम उर मे प्रीत चहो न ।
हाथ जोड मागू मे रग सो महर कर वगसो ने ।
श्रीव्रजराज पिवाय अधर रस दे गलवाह मिलो ने ॥१४४॥

ह री मन माह्यो री बीन वजाय ।
जव त तान सुनी मा स्रवनन तव त जिय अकुलाय ।
धीर समीर तीर जमुना की धुन आवत वह ठाय ।
चाह बढी निरखन की हली चित हित अत अधकाय ।
करि टाना दीनो वहा मोप श्रीव्रजराज सुहाय ॥१४५॥

---

१४३ B रानि । B वह छव । C सरमानी । B तु अव । C वानी। यह प॰ AD प्रति म नही है।
१४४ B राध नीजी । B क्या । B मो म । C कराने । B वोहा । B हाथ जा॰ मा म । B व्रजराज ए अधर । C मिलान । यह पद AD प्रति म नही है ।
१४५ B ह न मा॰यो । B सुनी वनन । B समार जमुना । C वजीनि खन । अ निम पति B म नही है । य॰ प॰ AD प्रति म नही है ।

राग काफी   ताल एकताला

म्हारी वैरण मान्जी नैं कई वस कीनो ।
आग लगा दिल घायल कीना मन पढ कछु दीनो ।
श्रीब्रजराज अनोखा प्यारो अधर मुधा रस पीनो ॥१४६॥

ताल धीमा तिताला

मोहन या बसी बजावैं प्यारो सुन सुन जिय अकुलावै ।
तीखी तान कलेजे लागत मारत फेर जीवावैं ।
विरहन दूर सुन अत व्याकुल दरस किये सुख पावै ।
राधे उर बसियो रग रमियो छवहू प मुरछावै ।
श्रीब्रजराज अनोपे ऊपर लख लख रूप लुभावै ॥१४७॥

---

१४६ B मान्जि । C वस्नो । C दना । B बृजराज । C पीना । यह पद AD प्रति म नहीं है ।

१४७ B बजावे । C प्यारा । C तान । B जीवावै । C पावै । B रमिया । यह पद AD प्रति म नहीं है ।

परिशिष्ट

परिशिष्ट संख्या २

उदयपुर के अमरनरश्लेश्वर महादेव के मंदिर की प्रशस्ति

उत्सगीकृतपार्वतीमृगमुखाम्बाम्भानुरक्त   रिनो

यागाम्यामवनावद   पुनरिता ध्यानैरतानस्मिति ।

श्रीमन्मामयाथितारपवदचन्द्र गारवैरावधा—

नैवशम्भिवनिमस्मल गुविमनो दत्नापिन पातु व ॥१॥

यनैलिमनुदवीनिमत्पुम्मयरसग्रामसिहम्य   य

श्रीनाम्यवमगजमम्नषमगेे   श्रीनीमसिंहो नृप ।

सोदपरमुनिभू   पम्नामु च त्रिपुर्दु हे स्मृहत्महदा

म्हामावरपारनाय च मया म्नु   स्यपद्म   स्वमु ॥२॥

तस्य   दमावलयर्वविष्णुनयशा   नीत्वयदोक्षागुरु

श्रीभाव नु   युवार्नमिहनृपनिर्दा मवगण्या   अमी ।

मान्योऽप्यवार्गा राणादनरपि   पाम्बात्मयुक्त रय

नवाना्दमनारमानगम्ञे   ममानिना   गोज्जरै ॥३॥

तम्वगाणिपतगु णा च'वचरे   मयम्यत नृपिडे—

मावेनाविरुनेम्या्रहिमवर्णोद्वेरमनाम्मा ।

सोर्म्योऽप्यद   विवदविक्रमरत   सनापिनम्मानृता

याद्रम्पुम्मृतानिर्विचितजनरषंतरिगपोदय ॥४॥

वाघेलीति च देवडीति च शुभे पाणिगृहीते उभे
पूजार्थं च हरेहरस्य विधिना पत्न्यो पृथक् प्रीतये ।
वासाय च तयोर्द्वाभिमतयोर्वैकुण्ठकैलासयो
प्रासादौ रचयाचकार भविको यो भूपितोच्छ्रध्वजो ॥५॥

उत्सर्गस्त्वनिवर्त्य सोपि च तया प्रासादयोर्भूपति–
र्मत्वा स्वात्मवियोगदुःस्थमनसौ देवौ समापेदिवान् ।
मध्येऽद्द हि तदशसभवतया तत्रैव सात्म्य लय
यो यस्याश उत भजेत्स इति यद्वागाह या नैगमी ॥६॥

तद्राज्ये सरदारसिंहनृपवस्त्रस्तारिवर्गव्रज
सद्धर्मव्रतपालनैकनिपुणो भ्रूक्षेपविस्मयज्जन ।
यस्याशा प्रतिलभ्य मर्त्यनिवहा शुद्धस्वधर्मेरता––
स्तेनापि स्ववचोतिनिष्कृतिकृता यात्रा कृता त्रिस्थली ॥७॥

तस्मादस्ति सुरूपसिंह इतिय श्रीराजराजेश्वर
क्षात्या भूरिव सत्यकमणि बलि सूर्य प्रतापोदये ।
गाम्भीर्ये धरिव प्रजावनमनुश्चन्द्रो जनाह्लादने
स्वाशैरेव युवानसिंह इव स श्रीधीदयाकीर्तिभि ॥८॥

शीघ्र यादृगत खलु युवा हि युवानसिंह
स्वाम्याण्ययापगमसिद्धमनोरथोसौ ।
तस्मात्स एव पुनरत्र सुरूपसिंह—
नाम्ना महेशभवने ह्यकरोत्प्रतिष्ठा ॥९॥

मासे माघवसन्तस्य धवले पक्षे च षष्ठ्यातिथौ
वारे देवगुरो ग्रहैश्च मिथुने लग्ने शुभैर्वीक्षित ।
खाराणार्कहिमांशुसवति नृप सात पुरं प्रोत्सुक
प्रासादे वरदोरक ण्जिवरैरप्रेरयत्सादर ॥१०॥

श्रियायुग्युवानस्वम्पस्वरग

स्व ।   ॥   ।   ।

उमाभूपिताक कृपापागदृष्टि

स । पा

घात् ॥११॥

वृद्धन्वलङ्कृतस्यिनिरत्र

भल्याप्यमिमन मथुराणा ।

विष्णुल्नाम इति तत्कथितात्वा

प्रात्मवामवन्स्वगुमान्य ॥१२॥

पूजाय हि समर्पिता नृपति*



यह प्रशस्ति मथुरा प्रतीत होती है ।

परिशिष्ट सख्या २

उदयपुर के जगतशिरोमणि के मंदिर की प्रशस्ति

श्रीगणेशाय नम । श्रीमदद्याव्ययव्ययवराय नम । श्रीकृष्णाय नम ।।

कालिंदीतटकुंजगुंजदलिमत्सफुल्लनीपावली—
द्वा स्थानंक्सुवल्लवाक्षितसुधापूर्णेंदुहास्याननं ।
तिर्यक्प्रक्षणराधिकाधरसुधाम या पिबन्निहुव—
स्तांबूलस्य वितीर्णचर्वितमिषात्कृष्ण स नोद्वावतात् ।।१।।

वृंदारण्यनिकुंजबद्धवनतिप्राणप्रियाणा हठा—
मुष्टीकृत्य मनासि निहुत इमा अ गुष्ठमादर्शयन् ।
वामनाद्धकरेण ता पुनरसौ नाम्नाह्वयत्यु मुख
माय श्रीगिरिधारिनामविदित पायात्स देवाश्रितान् ।।२।।

गी र्वाणगु णगणितो गोपगुणालागनागसश्लिष्ट ।
गोकुलगार्गनाली गोविंदा गागरोशाऽयात् ।।३।।

बप्पान्वयाय गुणगौरवाढय
वक्तु वभूवाहमल न वाग्भि ।
तथापि वक्ष्येस्य गुणैर्गुरु स्या
जाता यथा वामनदड्वत ।।४।।

अथ प्रागमायाविदशालयानन्तरं हिन्दूनां राणाराजसिंहावधि
धनवर्णेन तथाप्यनुशासनानां महाराणराजसिंहानुवर्णनेन —

दाने प्रोन्नागिरिराजप्रथितपुण्यप्राप्तवित्तस्य यस्य
चित्तस्फीतानतर्यो विविधमणिगणैरत्नपक्षटप्रवीण ।
स्वर्णाद्रिं कल्पनाया व्यनुददुस्तर सन्य मागणौघा
दृष्ट्वा हृयादमराणि स्वमुखमसममुल्लोजगत्सिंहभूप ॥५॥

गत्वा धामचतुष्टय सुविमल नार्या वनोऽप्यादरा—
दृमक्ताना पुण्यायदानचतुरा प्राच्यादिदिग्भिः क्रमात् ।
दाना यै भजनस्य नेलि भुवने सूर्यान्तर च गित
मत्प्रासादमता व्यथाऽऽऽगनि तत्राधनु रायस्य च ॥६॥

तस्माद्धि राजसिंहाभून् कूर्पालकृत नृप ।
नावादय विलोकयाविध मा वगह्राजमागर ॥७॥

हृत्वा मत्वच्छयर्पिता प्रथमजा पितारिमिर्नीतला
बन्धा भीष्मकजामिवात्मवलवान कृष्णादुर्गात्पुर ।
पैद्याद्भाम्यु जाह मान्यून उरन्यामेवकानादिनी
पत्र प्रेष्य र । हरञ्जनमुग्धा मारमावत्र च ॥ ॥

पुत्रस्त्रीगुम्पातनिरूनिहत पृष्टेऽस्मि प्रोन्नि
पारानोदमवातरग मनमा राणा तथा निदिचाम ।
ऊनगार्वेनिजजाविनन्मुभिन्य मन्य निवेदानिता
गुटा न वरमान्न त निरयिणो राजा नु नाक गत ॥८॥

यो शानोऽगजय कृतज्ञनुमतस्फारनागपशगो
विष्णु विन्दगलथ यवनपतिविश्वर्गाचैर्मारदमर्दी ।
स्वाराटमाहात्म्यनाथि रि स्विभूरि प नन्न पातयामास दिल्लो
प्राग्न मूर्तिमष्ट विनदन्न शात्रिन म्लेच्छ ॥१०॥

तस्मादभूदरिवनीदहनातिदाव
सद्धमरक्षणविधावतुलप्रभाव ।
य प्राप्य सद्धवमिला समवाप्तकामा
राजन्वती स्म जनिता जयसिंहनामा ॥११॥

शौर्य्यौदार्य्यगुणान्वितप्रविलसद्भासासुधासारभृ—
श्चेनाकारि हसज्जल स्वमधुरैरपि यश सागर ।
धीरा य यदुशति सत्त्वगणने निर्देहवत्त्वादिति
नाकाश किमुदेहवानिव चलच्छायेदुतारागण ॥१२॥

प्रोच्च चच्चदकाडप्रकरकरवलच्छस्त्रघातप्रहार—
त्रास त्रास न सेहे दिशि दिशि सभय नेत्रतारा क्षिपती ।
ज यारण्ये मृगीवो मन्यवनपते कृष्णसारस्य सेना
तारा प्राजम्मयूथप्रबलपतिममाकृष्टिनु यस्य यस्य ॥१३॥

तस्यागज मामरसिंहवीरो
वीरैकसूरस्मिमद विधत्त ।
यस्य प्रसूरासुरितीत्य निद्रा
देवा समासे परिसदिद्राना ॥१४॥

महानसमचीकरद्वरशिवप्रसन्नामर—
विलासमपि निष्कुटान्वितमसौ स्वसौदयाश्रय ।
तप सुपरितोषिताविव भवानपूर्णेश्वरो
सम य विशदालय ददतुरेव कैलासक ॥१५॥

सद्ग्रामग्रामदातुनयविनयवतो विश्वविख्यातकीर्त्ते—
स्तस्मात्सग्रामसिंह्प्रभवितुरवनौ म्लेच्छसपा महेमा ।
हतु भाग न शेकुर्ह्य मरहरिक्तावासभोज्यप्रभोक्त्
शत्रया भूभृच्छ्गाला यमकतुबुदया ग्रामसिंह कुतोये ॥१६॥

देवाना हि परस्पर विवदता विश्वौघसम्पावण।
का गच्छेदिति पूर्वमेव निखिलैरिष्टे सहर्षैरपि ।
गतव्य नृपतगृह सममत स्थूलामहपूर्विका
मात्वैवा समचीक्लपत्स गतये, यस्मिन्प्रनोली शुभा ॥१७॥

तनाऽप्यवज्ञमालसहा जगन्नाथालय पुन ।
जीर्णोद्धारश्च पित्रा दिदृशु स्वकृत पुरा ॥१८॥

नैवच्यवति वास्तवुद्धिविभवे धार्यनिपादस्पित
मृत्यु गच्छति विष्टपे सितरुचौ पापप्रुधासज्जाने ।
उद्यौद्घाटितनोपवीपविसरल्मद्र्यमज्जीवनं
बाल बालमपाकरोत्स विपदप्रामादवमच्छलात् ॥१९॥

वनवमपि नो गत मम पुनश्च नताटना—
द्धिति द्विजपतिमल वसति मार्दं मिच्छज्जन ।
कलिद्विजनिषेवितान्नूनसुचित्रनाली पुन
सुमित्रमदनश्च यदूनजगन्निवासच्छलात् ॥२०॥

स्वीय सौभागिनेय पितृजयनपराज्ञागिन भागिनेय
मायासिद्ध भूमिहरपुरदतुलश्रया दत्तवधमीवटाक्ष ।
प्रह्लाद भगवान्द्य यथितमतगुणालनद्यमुद्रासमुद्रो
दवर्णात्मार्थयिघद्विबुधजननुत पित्र्यराज्यासने य ॥२१॥

तस्मात्प्रतापसिंहो हरिसिंहा द्वौ सुतौ तयामध्य ।
राजनि राज्य ज्यष्ठ पुत्रानुद्राजसिंहो न ॥२२॥

स्वर्गं याम भूनवति पितरि जगाया म पाननेयिकृन ।
तस्मिन्नपि पिरमया प्राप्ते राजा रिसिंहोऽभूत् ॥२३॥

नयने नयन धोणी राजसिंहस्य नार्थिन ।
भ्रात्रो दग्यात्प्रपुत्रस्य हरिसिंहान्गोत्तप ॥२४॥

कृत्वा सद्वरण पुर सपरिख स्तोयैकरक्षाकर
सरध्यत्पुरमागघप्रबलभृद्दुर्म्मानिर्जित्सियि ।
लक्ष्मीश सबलश्च सत्प्रहरणो या जेजयोद्दुज्जय
तस्यासोच्छ्मरुहि कालयवन क्रीडास्पद सगरे ॥२५॥

कि कालयालबाल किमुन मरणक्रत्वालजि ह्यग्रमुग्र
कि शभोर्भालनेत्रज्वलदलनशिखाज्वालमालासमूह ।
कि नुष्यञ्ज्जपातोज्जनितघनरुचि कल्पमिघोस्तरगो
ज मे जन्ये यलाकि त्रिदशपरिवृढयत्करे मङलाग्र ॥२६॥

स्वामिद्राहपरायणैश्च लवणोदोद्व चर्क्दर्पेरे—
र्रोन्नावे सह कृत्रिमाकृतिनृप स्वाशाशयाऽस्मि सति ।
घासात्मा किल कपु केरिव नर क्षेत्रोच्चनीडे धृत
स्कज्जत्कु मलमेरुदुगवसति श्रीमेदपाटावनौ ॥२७॥

ित्वा कृत्रिमराजपक्षतिकृता दिङ्मासमायोध्य म
क्रुद्ध यम्मालजिता पटोलविभुना ज यत्र्य योगिभि ।
म्लेच्छाट्टापलपव्वत च शमरोग्रामे च गगारके
यु द्धा वीरगति गत कतिपयैं वर्षैर्हि भुक्त्वा मही ॥२८॥

हम्मीरसिहोऽप्यथ भीमसिहो
बभूवतुस्तस्य सुतौ सुवारौ ।
श्रीरामचद्रस्य कुशो लवश्च
तथक्षराडासतुरश्च चोभौ ॥२९॥

श्रापच नरद क्षोणी भुक्त्वा भूपे दिवगते
हम्मीरवीरे च ततो भीमसिहो भवन्नृप ॥३०॥

ीमानमीमहिमदस्युविनाशभास्व—
न्द्राम्वत्प्रताप उरुबुद्धिविशालभाल ।

व्याहारगत्यसनकीरमरालबाल
स्फूर्ज्ज महाजगति नृपतिभीमसिंह ॥३१॥

रूपश्रीप्रतिम प्रियासु रमिश कामा वपुष्मानिव
दानेनार्जितकर्णभोजमहिमा स्वैश्वर्य श्रासदल ।
भर्तुर्क्ता बहुवत्सर गुणवता जुष्टा पुमर्थास्त्रय
प्राप्त येन मुन पञ च तन्यिद्रन्क क ईष्ट जन ॥३२॥

यदचाग्रहीत्तु भलमरतुग
वेपम्यनोचैष्कृतसत्य हृग ।
धनञ दुष्कृनिमराजमौलि
क्षत्रस्यचचामिव वै वरांग ॥३३॥

लब्धागजातो हि युवानसिंहो
यस्याग्र उभोपि युवानसिंह ।
दानेन वा या च गुणैश्च यन
भीमनामकत्या न समोपि वापि ॥३४॥

श्रीन वलिकमाकुनुडनरत क्षाणीदशयावृत
गल्याम्त्रैरमहिम्ना परिजनै सपविशानुद्धत ।
मानान्नतुलाभिना गुन्नतो निद्रनुतो पार्थिव
श्राप्यामाद्धि युवानसिंहनृपति श्रीमा गुणोपावृत ॥३५॥

पुत्र स्याद्य श्रनायपातवरिनर ममोबदमातृा
इत्थानाथ गया व्यदन नयना पौरागमानैरूतान् ।
दनापामरमामनाप्यरसहितिडोपि विप्ता पद
श्रीमनामनालविशमहना ओजोघ उदाग्नि ॥३६॥

परिहन वन्हड न्ढवाण
शिशिगदवपर यस बादान् ।

अनुगतनृगणस्य यस्य कस्य
॥ इति बभूव युवानसिंहभूप ॥३७॥

ब्रह्माद्याधिकृतास्त्रयोपि विबुधा ब्रह्मेशनारायणा—
स्तेषां तुष्टिकृते क्रमात्क्रमथवा धर्मार्थकामाप्तये ।
यात्रा येन हि नक्षशा वितरता स्वकारिता त्रिस्थली
यायोध्यानयनात्पुनस्तनुभृता मोक्षोपि हस्तेर्प्पित ॥३८॥

तत्स्थाने शरदारसिंह इति यो राजा प्रजा रजयत्
यद्दृष्टयाप्तसमग्रदुष्टजनताशश्वत्स्वधर्म्मादर ।
वृद्धिर्वाप्यथ हानिरेव भवनाद्य स्वोक्तनिर्व्वाहक
मद्बुद्धिर्नितवाक्स्वधर्म्मनिरतश्चान तया नापर ॥३९॥

स चापि यात्रा पितृमुक्तिहेतु
युवानसिंहाग्रकृतप्रतिज्ञ ।
गयागया नाप्नभवामकार्षी—
न्नवाप्तराज्योपि वचोतिदार्ढ्यात् ॥४०॥

तद्राज्येस्ति सुरूपसिंहनृपतिर्विख्यातकीर्तिगुणे—
र्धर्म्ये दाशरथिमनुह्य नुभवे पाथ प्रजापालने ।
दाने चाधिरथिर्वसुर्व सुचय धैर्य्ये बलिभू क्षमो
वन्येयावधि कोपि मन सदृशो भावी न भतो नृप ॥४१॥

इ द्र किम्विति चारणैश्च विबुधैश्चि तामणि कामद
कि मर्त्ये विभु कल्पवृक्ष इति कि कणश्च भट्टैरिति ।
भोज सत्कविभि विमेवमखिलै श्रीमत्सुरूपा नृपो
दृष्ट स हृदि कन कन समय दानस्य नोत्प्रेक्षित ॥४२॥

रामाय जितदूषण सुभरत सल्लक्ष्मणाप्तोन्नमन्
शत्रुघ्नश्चतुरात्ममूर्तिरजित श्रीचित्रकूटस्थिति ।
नूनं सज्जनरात्मजाभिरभितो बद्धप्रकाष्ठागद
कौसल्याप्तकुलावनो विजयते रामायणैकाश्रय ॥४३॥

आजानेयममी वियाहमतुर वीर्ति विनीत वर—
माहात्म्यजसुस्रोतणप्रसरणस्पर्द्धाकर सुन्दरम् ।
आश्चर्य व्रजतीति यद्युपवन कृत्वाश्ववारी तदा
सागानन्द इति प्रतिस्मृतिमुव सन्नेरत किन्नर ॥४४॥

यद्य स्याज्जयति प्रिय कनुमम स्यात्तस्य पुण्य श्रुता—
वृक्त तन्नितिरश्मिणा मनुकृपापान नृणा त्याजित ।
श्रीराजेन्द्रमुम्पामिहविमुना नेवकनूना यथा—
दवेन्द्रस्तु नानकनुम्लनचिक मयानास्त्यनतक्रतु ॥४५॥

कृत च दनैव कृत न कन
धनापह दुस्त्यजमनदेतत् ।
ऋणस्य मद्यस्य च मोचण पुरा
येस्तारहूल मुक्तिस्मय तया ॥४६॥

प्रतिमा पूर्व या मरपतिपुत्रानेन हि कृता
यया चत्वारिंशच्छरदुपरिता मध्वपत्रय ।
न नानाट्रिंशत्परिमिततमाशु गयवणा—
स्तुना दूणा मन निनिपतियरणादहनिना ॥४७॥

अथ दुग्धानसिंहकारिदक्षलयप्रसंगोपक्रम

बापमाति पुत्रानसिंहनृपने राणी ममाणापरा
पौलामीव पुरदरस्य सुभगा ननोभवालीव या ।

चन्द्रस्यव च रोहिणी रतिरिव श्रीमन्मथस्यास्य वा
अत्य त हृदयगमा सुचतुरा प्रीत्यास्पद साभवत् ॥४८॥

रीमाराडजयसिंहदेववपुरदभूता कुमारीश्वरी
राज्ञोढा गुणशीलरूपसुवय सौभाग्यतुल्या यत ।
सीता किं रघुनायकस्य यदुभृत्कृष्णस्य किं रुक्मिणी
विख्याता पतिदेवता मधुरवाक्सत्तापितस्वप्रिया ॥४९॥

आबाल्यात्परिचर्य्यिका कृतवना गोपालनाम्नो हर
शुद्धाचारपरातिवैष्णवजना भक्त यतनिष्ठा सदा ।
रूप्यानिर्मितसूप्पकुप्यतितउ पित्राप्तस भवा
गीताभागवतादिपाठन उर काल निनायानिश ॥५०॥

इत्थमच्युतसमर्प्पितचित्ता
पातवैष्णवगुरार्प्पितवित्ता ।
आससाद हरिपादमभीता
तत्र नोत्थकफवातकपित्ता ॥५१॥

मात्वेत्थ धरणिधरेंद्र उत्तमाता—
मेनस्या गतिमतिविस्मय प्रपन्न ।
तत्याज प्रभृति तत कति प्रियस्य
वैराग्यात्तनुविषये कृतप्रतिज्ञ ॥५२॥

वाघेल्या स्ववसानभानसमय वित्त स्वपार्श्वेस्थित
तत्सव हर्म्य प्तिन च कथित रामो मखाग्रे स्फुट ।
राजा तन युवानसिंह इति योऽस्तु वातिहृष्य मना
प्रासाद रचयाचकार विधिवच्छिल्पीश्वरै शोभन ॥५ ॥

प्रासाद यमनहरदत्तवि भवमज्जू र्गवै सिन्धिभि
शीघ्र कारयतो महा भवविधामान्यमानस्य यत् ।
स्वीयायु क्षणभगुर च विदुष सायुज्यमिद्धिह रे—
ओंतान्प्राप्तमनारथ य नृपतर्देवात्पदाब्जाश्रमे ॥५४॥

तत्पश्चाच्छ्रदारसिहनृपनियत्न तथैवाकरोत्
बालानामविचारित पदमगाच्छ्रीएर्कनिगस्य य ।
तत्पश्चान्च मुम्पसिहपृथिवीपान स्वभाग्यान्दया-
त्प्रासादे वनदा दधार मनिमा सपूणतापान्निवे ॥५५॥

यथा गगाप्राप्त्या ग्रहह कृतवतो बहु तपा—
गुमस्ताद्या भूपाम्नदपि क्रिमयाप्ता सुरसरित् ।
तथा भागीरथ्य जगदघहर सर्वविदित
तथैव पूण्य महन्ति मुम्पसितिभृत ॥५६॥

पूज्य श्रीचित्रकूटे गिरिविदितगिरा तप्यतेनोदवन्य—
क्षाणीम मदपाटद्विपवसहधराद्युगम मूलभूमौ ।
मारारामगिरस्यमन्नु नृपजर्गा यत्पुष्टयत्वरीत्या
गार्ये स्व स्थापितासानुष्यपुरवर मन्दिरे स्वणतु गे ॥५७॥

सारोरद्विजसवन स्तुदिन तन्नागभागी व्यधात्
मेवाप्रे मनदावबाहुमनना शोणामन्दरस्वय ।
प्रासा ॥ महर्निशानिजसन्तोनामप्रभूनोप्य
प्राप्ति प्राप जगच्छिद्रगामणिरय सार च कचित्सुर ॥५८॥

स्मन्दे च पिदाग्वरमादिलाये
स्वमातृगुणिप्रविशारदीय ।
उपस्वप्मापि मान्तुत म—
मम्वाभिमानात रसोवतिष्ठत ॥५९॥

सुरूपसिंहोपि निजैकदेव
पूर्व जगत्सिंहकृतप्रतिष्ठ ।
युवानसिंहाभिमत विचाय
समानयत्त पुरुषोत्तम स ॥६०॥

श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ शुभ भवतु ॥
श्रीगोवर्द्ध नोद्धरणधीरो जयति ॥
श्रीकृष्णाय नम ॥

ॐ नम । अथ प्रथमपट्टिकाशेषमाप्यते ॥

श्रीवल्लभान्वयजनि प्रथितासौ
श्रीगोकुलोत्सव इति प्रकटाख्य ।
श्रीपुष्टिमार्गपुरुषोत्तमप्रतिष्ठा
स स्वमार्गविधिना यथाकरोत् ॥६१॥

गोष्ठीशालकृताष्टक इति यो गोपालकृष्ण सुधी-
र्भट्ट सर्वगुणैकदक्ष उरुधीस्तैलङ्गजाति स्वय ।
नाथद्वारत आदरेण नृपति स्वानाय्य य सौध य-
च्चोर्पेऽथाद्धि जगच्छिरोमणिममु पुण्याध्वसेवाकृत ॥६२॥

सवत्यब्धिखनन्दभू १६०४ परिमित सूर्ये वृषे पूर्वणि
लक्ष्युत्तरगोलक शुभकरे वैशाखमासे सित ।
पक्षे द्वादशिसत्तिथौ रविसुत चन्द्रे च कन्यास्थिते
लग्ने सिंहशुभेऽन्विते नृपतिना देवप्रतिष्ठा कृता ॥६३॥

श्रीवृद्धदेवलकृतस्थितिरेव वर्णी
श्रीविष्णुदास इति नाम महातपस्वी ।

गायत्र्युपासनपुरश्चरणैकरुद्रा
वाङ्माधुरीजितसमग्रसुधासमुद्र ॥६४॥

नित्य सुरूपनृपसद्धितकृत्स्नुमार्यो
सद्धर्मकर्म्यविधिशास्त्रविधानदक्ष ।
सोत्रोपविश्य विधिपूर्वकबन्ध तने
राजापि तद्वचनमेव हितं च मेने ॥६५॥

अथ प्रासादवर्णन

गौरामाभ्रनिभैरनेकशिखरैर्यु क्ता प्युन्नि निहै—
नानाशिल्पसदेवतागणकृतप्रत्यग्रवामैरिह ।
स्त्रीप्राये य दलाकृत शिववच मय हृता सम्मर—
न्मय तद्रूपमाधनगुरमना मर्धह्न तिष्ठायन ॥६६॥

यद्राश्चवदनत पुरदरगजाश्चोच्चश्रवश्चूडादपि
कर्पूर शारदिकामलाद्भिदरदाः स्फाटिकतान्मिवात् ।
स्वच्छा यदन ओप एव निपुण प्रासादकायच्छटा—
त्रिगारषिवुणार्घहाटकघट शीर्षमानयन ॥६७॥

मदवैभत्तमत्तगजेरपिरथै पादाभिर्गैर्विना
म दह् धनुरणिशीत्रनगधा मत्पुष्पपुजा मट ।
प्रासाद्म्य मिश्रा महामध्यवकृत्तामोघमावाधित्
स्थानदमित्रहृणा वद्धभुज मनद्ध ट्ग मन ॥६८॥

दंतै शि विभु स्थानल्पगनव गद्दैश्च शि द्रव्यरै
शुधैर्वा हिमममयै शिमयवाद्वा धारश्नमिते ।
प्रासादाभ्रमणि वरैरत्नन वनैव निर्मायितो
हर्म्यागार्णप य मनागनिमिद शर्णश्यर मानुदा ॥६९॥

पुष्टोऽह च जगच्छिद्रामणिरह चास्येव दवोऽस्म्यह
मा हित्वायमु मदिरे निजजग नाथ समास्थापयत् ।
इत्यव भृशमोप्यया हरिरभूद्गुप्तोयमद्याावधि
श्रीमद्रूपमुरूर्पासहविभुना स्वस्थोयमध्यासत ॥७०॥

मम गृहमिदमुज्ज्वल तथोच्चै—
रिति हरिरपि स मुखस्यमीश ।
विवदिपुरिव माज्जनाय पार्श्वे
स्थियमपि रहितोयतो बिभर्त्ति ॥७१॥

अथ प्रमगोशात्पुष्टिपुरुपोत्तमसवत्सरोत्सववणन ।

श्रीमद्वल्लभविट्ठलप्रभुवरा रूप न दध्युभु वि
स नार यदि चेत्तदा हि वसुधा शू येयमास्यास्यति ।
श्रीमद्गोकुलराजनदनकृता लीलापि जीर्णा तरा
देवाना क्व गतिस्तथा क्व सुमति प्रीत्यु नतिर्धोपजे ॥७२॥

अथ ज मोत्सव

ज म यस्य महामना परिदग्गै नदोपि दान मुदा
गोपा य च विचिक्षुपु प्रमुदिता हैयगवीन मिथ ।
गोपीर्या व्रजतीविरजुरधिक नदालय दर्शने
स श्रीकृष्ण उदारचित्रचरित पाया न इ द्रा गदा ॥७३॥

प्रस

आप्रेखपल्यक्वरे स्थित हरि
प्रसाधित मातृपदमु दा भजे ।
सुभ्रू तटे दृग्धरकृष्णबिदु
कठस्थित याघ्रनखादिभूप ॥७४॥

मानश्चन्द्रमम लभेय झटिति श्रीदार्यमानाय मे
नहि ह्य गुनिमुदि तपन्ति रदन्नमा नुठ दर्शयन् ।
स्थालानिमितवारिबिम्बितममु वीक्ष्यातिहृष्यत्तनु—
र्हीहीत्युत्मुहुसनतिप्रमुदिता मुग्धो हरि पातु न ॥७५॥

दानलीला

दान यौवनगर्विता प्रतिदिन यास्या गुपिरवा हि नो
रथन्त किन गारमन भरिता नून वयस्या इमा ।
श्रुत्वेत्थ पशुपालजस्य वचन सर्वास्तिमाह मा
लालन् गारम एव क्रीडन इनि प्राप्यस्त्वया सावतात् ॥७६॥

नेत्रमालननीला

राधाया निरमीरय प्रणमतो दान सगोना पुर
सख्या मुद्रितचक्षुर्पास्निरवितु य मादिनीव स्वय ।
चक्षुर्मीलनकत्रिगु प्रियमसौवृत्तिवित्रार्पयेहित
कृष्ण मभमना निकु ज इव म स्यात विलीनास्तत्र्य ॥७७॥

रासलीला

मानन्दाम्पिरसा यनो हरितनो वृन्दा हि वृदावने
रुद्धम्ये वन उन्द्धत यमुनया गापीभिरवायन ।
विरचिताप्रमृताभिताद्धरिजनप्रद्धा निपीनापि ते—
न स्पृष्टा नुविवमठे य तिन्दे गुरुर्धप्रियैत्ताननिभि ॥७८॥

[illegible]

विम्बाणा विनम [illegible] गोव [illegible] र्हावनी
मद्यगारस्मृत [illegible] ।

धृत्वा रूपमनल्पकं गिरिरिवाद्धे द्राग मन्यु नयन्
शाकं पाकमदन्निवेदितमुरं गावर्द्धनो वभौ ॥७६॥

दोलोत्सव

वासतीवरजातियूथितरणीमल्लीमतल्लीलता—
कुंजे मंजुलवंजुले परिवृते दोलाश्रित श्रीहरिम् ।
आपृक्तं पटवासकैर्दयितया सिक्तं तथा रेवकैं
पश्यन्त्यत्र सखीभिरुस्मितमुख भाग्ये सनाथानर ॥८०॥

रथयात्रा

सुग्रीवादिभिरन्वितं हयवरैः सत्स्तभचक्र रथ—
मारुह्य प्रविसत्वरं बहुतर सत्कंचुकोष्णीषधृक ।
याति श्रीवृषभानुमंदिरमसौ प्राणप्रियाहूतये
गोपालो मणिमौक्तिकाभरणयुक श्रृंगारधृड नोवतु ॥८१॥

हिंदोलोत्सव

हिंदोले हि विशाखया ललितया पार्श्वद्वयादोलितौ
वर्षासु नभसीडयरत्नखचितं श्रीमंतिकागारो मुदा ।
राधा वाप्यथ कृष्ण उद्धतवपु श्रृंगारको दंपती
नानाभ्रक्तनडिद्घनाविव महाभाग्यैरिह प्रेक्षितौ ॥८२॥

अष्टदर्शनानि

आदौ मंगलदर्शनं तदनु सच्छ्रृंगारज ग्वालज
गोपावल्लभनामतस्तदनु यच्छ्रीराजभोगोद्भव ।

मध्वात्यापनमागमान्जनिन चागतिजान पुन
सायाह्ने शयन हरेरनुदिन होत्य च दर्शाष्टकं ॥८३॥

मंगल

वृन्दारण्यविहारिणि प्रविलसद्नास्वलुतावारिणि
न्नास्यन्गापकुमारिकावरहूतिव्याजा मनाहारिणि ।
कान्दिोलटचारिणि नितिमूत गृ गपु गाचारिणि
गु जाहारिणि म मन प्रविशनाद्गोवद्ध नाद्धारिणि ॥८४॥

वल्लगैस्य सुन्दर्यामिहनृपति पृथ्वामहेंद्रा बभा
वृष्टि न्ध्यमर्यामवपदनुला मद्ग्रहत्याणनत्रगा ।
जाता गुर्व्वेहहाकुर पुनरसौ सौम्येवकृगा महा—
पुष्प मदान एव पुनरन्वयागूपाद्विजे रक्षित ॥८५॥

सुगान्धार्गिणा ग्या पुनरमो वर्णानि चित्राण्यन
पानु वध्यममाश्रितानपि मुग याग्न्दद्धा नृप ।
मुक्त गुणमुक्तमृद्धामिनि हो बाग्रा मदवागुणा—
द्यो नाराधि ग्न्पूराजन द्रम चित्रेण तुल्याऽभवन् ॥८६॥

ममुद्रवचन यथा मवति वै मगवधना—
त्सुवर्णकटकप्रततिरिति यो मृदेवाकरोत् ।
विनापि तद्भुतादशाग्णितानि नृपस्तदा
सुवर्णकटकानि कि कथयतीह गात्र पुन ॥८७॥

यस्मिन्नहि अगाध्निरावणिग्मो मेनुवृ हनामय
रिगतसागरमनुरद्मुलनगा मिन्टग्रमनावर ।
सुर्मोपन मुवानमूरजसिनो नैव राघावर ।
सर्वेषामर्जित्रमुग्ग्मममद स्निग्धा प्रनिन्ना ग्राहुत ॥८८॥

प्रासान्स्य पुरोधमा मह्न विधिग्रार्तवसर्वेदिना ।
स्वस्मादमरश्वरेण सुवरेण थायुत्ताना नृप
स्वाराट चित्रशिखद्विजेन किमपि प्रप्टु हि विप्णु गत ॥८६॥

तस्याथास्त्यमरश्वरस्य तनयो रामस्य शक्थे पिता
घोम्या धमतनुद्‌भवम्य व निमयद्वच्छतानदक ।
राज्य पौप्टिकशातिकम्मविधिवच्छशी शुभस्या वह
स्वच्छात शिवराज इत्यमिधिया राज्ञ पुराधा द्विज ॥ ०॥

साचोरद्विजनत्थुरामतनय मुत्य विधायात्र य—
स्तत्माहित्यकृतिस्थितावनुरत्त सपद्विपद्वत्मसु ।
ना यत्किञ्चन वित्तमच्युतममु हित्वेत्थमालोच्य
कदारेश्वरक द्विज च कृतवास्तस्मि क्यावाचक ॥९१॥

श्र तर्वाणिरमदगुजरदयानदाभिधो ब्राह्मण
श्रागौडो हि परपरागतपदा राण सुकमा तिक ।
तैनेद सकल महाविधिविदा प्रासादजोत्सर्गिक
राजानुग्रह भाजनेन विधिवदृत्विगद्विजे कारित ॥९२॥

प्रासाद शुभमरजातिममल शिल्पीशगोवद्ध नो
भारद्वाज उचेनरामतनय सच्छिल्पविद्यापर ।
प्राशाताद्रवयाचकार विधिवद्राजाज्ञया सादर
यस्यमा रचना विलोक्य यदधच्छीविश्वकर्मा मुद ॥९३॥

विप्राग्यो व्रजलाल इत्यभिधिया श्रीमेदपाटाश्रया
भट्टो गोज्जर उत्तमोदयपुरावास्येव पौराणिक ।
यत्ता प्रकुलोपकारकरणप्रख्यातकीर्तिश्च ज
तया लालयतीनि सत्कृतिसतर वथनामाभवत् ॥९४॥

यत्पुत्र किल कृष्णलाल उभयो कृष्णस्य सलालना—
कृष्णाख्य सुतानमिहनृपन मसाद्पारायणात् ।
श्रीमद्भागवताद्ववान्पि तया विख्यातकीर्तिश्च य—
स्तनेय रचिता प्रशस्तिरमिता विद्वन्मुद स्तात्सदा ॥६५॥

कोश्वरेण लिखिता दशारद्विजजातिना ।
उत्कीर्णा नत्थुजीवाख्या शिल्पिभ्या शुभश्च सदा ॥६६॥

यावत्सूरसुताद्रुता हरिरता यावच्च भागारथी
यावत्सवजगत्प्रकाशनपरो श्रीपुष्पवतो स्थिना ।
यावन्मदम्बस्थिति शिवितन यावन्महाना जना—
स्तावत्तिष्टतु सत्प्रशस्तिरतुला स्पष्टाक्षरय चिर ॥६७॥

श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ शुभं भवतु ॥

परिशिष्ट सख्या ३

महाराणा अरिसिंह कृत रसिकचिमन

(१)

अगम इस्क के चिमन को किसको आसग होय ।
सिर उतारि पासग करि पहुँचै बिरला कोय ॥

(२)

रे महबूब इतै दिनौ, खूब दिया दीदार ।
प्यारे तेरे दरस बिन पलकैं लगत पहार ॥

(३)

इस्क अखाड़ा अजब है गजब चोट है यार ।
तन कौं तिनके सम गिनै सा ही पावै पार ॥

(४)

इस्की इस्क सुवाद का जो पावै टुक स्वाद ।
मस्त रहै महबूब सैं खलक लखै सब वाद ॥

(५)

सिर उतार खाक छिरक, उसही को कर कीच ।
आसिक वपरे पर रहै उसी कीच मैं वाच ॥

(६)

इस्क जहर की आब का, भरया कहर दरियाव ।
सिर उतारि धबनाव कर तिर जाने तो आव ॥

(७)

अगम इस्क के पथ को सुगम करै जो यार ।
निगम कहत निरधार कै, तुरत मिलै करतार ॥

(८)

सकल गमावै विकल है सकल उसी की दस्ति ।
फिक्र उसी के जिक्र की, तन मन उस ही मेस्ति ॥

(९)

इस्क पियाला जिन पिया, सो ही पैले पार ।
इस्क बगर सब भगर है, मालिक कहत पुकार ॥

(१०)

क्या पैगंबर पीर क्या, करामात क्या हाइ ।
इस्क घाट सौं कोटि करि, जग मे बचै न काइ ॥

(११)

इस्क मजब दरियाव है जहँ सूसो की चाल ।
साच क करना मरै, सिर गिरने का ख्याल ॥

(१२)

क्या बरछा क्या तीर क्या, खंजर सल सुमार ।
इस्क घाट को पनम मैं पुगर गद तरवार ॥

(१३)

इस्क बाग महबूब का तरवारयों की धार ।
तिछन धार पै पाँव धर, पहुँचै बिरला पार ॥

(१४)

इस्क नगर के बगर मे, महबूबा के मेल ।
इस्क उसी की ढाल पे चले चस्म व सेल ॥

(१५)

इस्क पियाला जहर का, पावे विरला कोय ।
पीवै सा जीवै नही जीवै (तो) गू गा होय ॥

(१६)

जुलफ जंजीरन सँ जकर आसिक पकर मगाइ ।
मारि चसम की चोट मैं, दीने गिरद मिलाइ ॥

(१७)

माह मयान चढाय कैं बस मोकैं सिर साधि ।
बस मो कीने आसकन लट तसमा सैं बाधि ॥

(१८)

इस्क उसी म रम रहै, वही इस्क के बीच ।
सिर ऊपर न्ठे रहै तिनसैं निपट नगीच ॥

(१९)

गिर सैं गिरना सहल है तिरना सहल दरियाव ।
इस्क चिमन के गमन मैं, सिर गिरने का दाव ॥

(२०)

सहल धार तरवार की सहल मुद्धकी बात ।
मुसकल आसिक बेचना दिल मासूकी हात ॥

(२१)

इस्क अदालत जुल्म की चलैं चस्म के तीर ।
भस्म करें बिछुरें मरें धरें न धीर सरीर ॥

इस्क इस्क सब ही कहैं इस्क जहर की जल।
धरहि मसारै सिर जिगर सो लेवै यह खेल॥

(२३)

इस्क चिमन का दरद यह जिससैं बहिये हाय।
कहा कहिये मजनों नहीं जिन मैं तूर्भे जाय॥

(२४)

इश्क पियाला ना पिया पीकर छकया न ज्वान।
चरम चाट जिनके नहीं व हो पसू समान॥

(२५)

इस्क चिमन के महल का नटर भरानाफसान।
आसक दिल मासूक का बच दिया बिन मान॥

(२६)

इश्क उसी का नाम है जिसके मुरै न सूर।
आगै पाछै एक दिल, सो आसिक भरपूर॥

(२७)

जैसैं दहो जीव बिन, आब बिना ज्यौं मीन।
त्यौं आसिक मासूक बिन रहै हीन तन छीन॥

(२८)

धड़ तैं सीस उतार धर धड़ पर आग जनाव।
फिर उस धड़ पर पाँव धर, आसिक नाम कहाव॥

(२९)

मै सुना विधि बद सैं बेद गाए सुधि सूर।
इश्क दरद के गरद का, दाग लग न भून॥

(३०)

इश्क झपट की लपट में, सिर उतार धर धाइ।
जारे अग पतग ज्यो तब आसिक कहवाइ॥

(३१)

इश्क किया मृग राग सें दिया सीस ततकाल।
तान सुनत उहि प्रान को, भूल्या हाल हवाल॥

(३२)

इस्क जहर की लहर है और न लगै उपाव।
चश्म लगन की अगन में चश्मो ही सियराव॥

(३३)

चश्म तीर की पीर में, कत मीर फकीर।
हाल मस्त पहुचे सहा इस्क चिमन के तीर॥

(३४)

आसिक कों बकरी करी, लट रसरी सें बाधि।
चश्म छुरी गरदन धरी जहर भरी सुधि साधि॥

(३५)

लै ते ले ले ले लगो दे दे दे जिय जान।
इस्क चिमन मजनों मरद पहुचे छैल पठान॥

(३६)

गदा सब नदा करै बदा पैल पार।
इस्क चिमन के बीच जह सकल सुधा को सार॥

(३७)

घायल बिन उस दरद को पीर न बूझै सार।
प्यारा प्यारा प्यार सें प्यार ही सों प्यार॥

(३८)

चश्म मेल उर मेल कै, मन सबै औ ख्याल ।
इश्क चमन महबूब सें, जाय मिलै ततकाल ॥

(३९)

इश्क बड़ा जंजाल है, इश्की के उर साल ।
दीन मीन ज्यों तरफरें, जगी चश्म की झाल ॥

(४०)

धर धर धक्कें धर परें, धर धर धक्के आह ।
इश्क मन की रेत पै उठन कराह कराह ॥

(४१)

रहै इश्क के मत पै चहै चश्म न घाव ।
धर्तें सिर उड़ उड़ परें धरें न पीछे पांव ॥

(४२)

इश्क मसक म वसक को हान जहा उपदेस ।
पोद परोंल चन वहाँ, जहा इश्क का देस ॥

(४३)

जिगर हाजर इश्क का, लटकै पिंजर मांहि ।
तूप मरखो उन पार का ये पीरों गम नांहि ॥

(४४)

इश्कचिमन इश्कोल को बरन्यो नागरीदास ।
रसिकचिमन मरमी नृपति, गानो मधिक प्रकास ॥*

(४५)

आनन्द है आनम का, आनम को आधार ।
मानिम माशो दार मैं, श्री मरसिय उच्चार ॥*

इति श्री महाराज मरमी राजाजी कृत रसिकचिमन सम्पूर्ण ॥

* दश्तिम दाना [illegible]

अनुक्रमणिका

विनय-माधुरी